वर्ष 09 अंक 10 माह जनवरी, 2025 ₹30

(राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका)

युवक

स्थापित : सन् 1950

26

बीजेपी का 'कमल' या केजरीवाल का विजय रथ दिल्ली में कौन होगा जीत का हकदार

योगी की 'तपस्या' का महाकुंभ

आर.एन.आई. संख्या – 2166/2016 | डाक पंजीयन संख्या आगरा-139/2022-24

BEBER

BATH FITTINGS

Make way for iconic luxury....

Mathura
Mobile +91-9412280225

युवक

वर्ष - 09, अंक - 10, जनवरी 2025

संस्थापक सम्पादक
स्व. श्री प्रेमदत्त पालीवाल

संरक्षक
स्वामी महेशानंद सरस्वती
आनंद कुटीर, मोतीझील, श्रीधाम वृंदावन

सम्पादक
डॉ. वंदना पालीवाल*

प्रबंध संपादक
देवेंद्र दत्त पालीवाल

कॉन्सेप्ट एडिटर
अजय शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
इंजी. ज्ञानेंद्र गौतम

साहित्य संस्कृति संपादक
आदर्श नंदन गुप्त

सलाहकार संपादक
डॉ. महेश चंद्र धाकड़

वाइस प्रेसीडेंट
(सर्कुलेशन/एडवर्टाइजिंग)
बृजेश शर्मा

सीनियर ग्राफिक डिजायनर
रानू शर्मा

लीगल एडवाइजर
एड. विकास गौतम

विजुअलाइजर
मनोज कुमार/सौरभ सिंह

युवक

ब्यूरो ऑफिस
दिल्ली **विनय शर्मा, फोन: 09555220374**

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक **श्रीमती सुधारानी पालीवाल** द्वारा युवक प्रेस जॉस बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, **आगरा 282004 (उ.प्र.)** से मुद्रित व प्रकाशित
सम्पादक- **डॉ. वंदना पालीवाल** * पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी,
R.N.I. No.- 2166/2016
सब्सक्रिप्शन भारत में न्यूनतम एक वर्ष के लिए (12 अंक) शुल्क 340+60 (पोस्टल चार्ज)= **रुपये** 400
कृपया डीडी (आगरा में)
YUVAK MASIK PATRIKA के नाम देय हो।
GSTIN NO. 09AGNPP9720D1Z2
DAVP CODE-132863

उपरोक्त अंक में प्रकाशित रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पत्रिका में छपे किसी भी लेख के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री/विज्ञापन आदि से संपादक/प्रकाशक/मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। उपरोक्त से संबंधित किसी भी प्रकार की कार्यवाही एवं पूछताछ की अवधि से तीन माह के अंदर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की कार्यवाही, पूछताछ के लिए हम बाध्य नहीं हैं। प्रेषित स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाएगा। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र सिर्फ आगरा होगा।

संपादकीय कार्यालय

युवक (हिन्दी मासिक)
बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, आगरा-282004, उत्तर प्रदेश
पत्रिका से जुड़ी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र **+91 9415407766**

लेख अथवा रचनाएं हमें ईमेल करें
yuvakmagazine@gmail.com
Website - www.progressiveyuvak.com

जरूर पढ़ें
महाकुंभ

06 योगी की 'तपस्या' का महाकुंभ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के करीब आठ वर्ष के शासनकाल में राज्य की 'तस्वीर' काफी बदल गई है। इस बदलाव का आगाज 2017 से उनके पहली बार सीएम बनने के बाद दिखने लगा था जो आज नई ऊंचाइयों पर पहुंच गया है। खास बात यह है कि पिछले आठ वर्षों में योगी की कार्यशैली और तेवर में कोई बदलाव नहीं आया है। न वह रूके हैं,न थके हैं। लॉ एंड आर्डर, महिलाओं का सम्मान और सुरक्षा...

विशेष
विशेष

44 क्या फिर होगा उस्ताद जाकिर हुसैन जैसा...

अभी कल ही तो अमेरिका के कैलिफोर्निया प्रांत के सानफ्रांसिस्को शहर के एक कब्रिस्तान में उनके मृत शरीर को सुपुर्दे ख़ाक कर दिया गया। भरे मन से विश्व भर के सैकड़ों प्रसंशक उस्ताद जाकिर को मिट्टी देने पहुँचे। उनके प्रशंसकों का...

जरूर पढ़ें
दिल्ली चुनाव

26 बीजेपी का 'कमल' या केजरीवाल का...

दिल्ली का सियासी दंगल सज गया है। बस चुनाव की तारीख की घोषणा होना बाकी रह गया है। इस बार भी इंडिया गठबंधन का हिस्सा होने के बाद भी कांग्रेस और आम आदमी पार्टी अलग-अलग चुनाव लड़ रहे हैं। वहीं बीजेपी भी पूरे दमखम से मैदान में डटी है तो पीछे यूपी में मजबूत पकड़ रखने वाली समाजवादी पार्टी और बसपा भी नहीं हैं। दिल्ली विधानसभा चुनाव में जहां आम आदमी पार्टी के सामने अपनी 11 साल पुरानी...

विशेष
धार्मिक

28 सबसे बेहतर, विशिष्ट व पूर्णत: वैज्ञानिक है...

वर्तमान में संसार के अधिकांश देश के लोग नववर्ष की शुरुआत आंग्ल कैलेंडर के अनुसार प्रथम जनवरी से करते हैं। प्रथम जनवरी को मनाया जाने वाला यह नववर्ष ग्रेगोरियन कैलेंडर पर आधारित है। आंग्ल कैलेंडर में समय का विभाजन वर्ष, मास व दिन का आधार पृथ्वी और चंद्र की गति के आधार पर किया जाता है। सौर वर्ष और चंद्रमास का तालमेल नहीं होने के कारण...

जरूर पढ़ें
विशेष

16 शायरी और गजल के शिखर फनकार थे...

मिर्ज़ा असदुल्लाह बेग ख़ान, जो अपने तख़ल्लुस ग़ालिब से जाने जाते हैं, उर्दू एवं फ़ारसी भाषा के एक महान शायर थे। इनको उर्दू भाषा का सर्वकालिक एवं सार्वदैशिक महान शायर माना जाता है और फ़ारसी कविता के प्रवाह को हिन्दुस्तानी जबान में लोकप्रिय बनाने वाले...

48 कहानी

50 कविता

सम्पादकीय

यह वर्ष देगा भारत को विकास की असीम संभावनायें

भारत के लिए नूतन वर्ष 2025 कई क्षेत्रों में बड़ी उपलब्धियों का बड़ा तोहफा लेन वाला साल साबित हो सकता है। भारत डिजिटल अर्थव्यवस्था की तरफ लंबी छलांग लगा सकता है। सॉफ्टवेयर और आईटी सेवाएं देने में भी हम सारे संसार का नेतृत्व करने की स्थिति में पहुंच सकते हैं। इसी तरह भारत विश्व भर के पर्यटकों के लिए एक सुरक्षित और सस्ता आकर्षण का केंद्र भी बन सकता है जहाँ पर्यटकों की रुचि के तमाम केंद्र, हर तरह के खान-पान, स्थानीय कुटीर उद्योगों के उत्पाद और गाइड के रूप में अच्छे पड़े लिखे बढ़िया अंग्रेजी जानने बोलने वाले विद्यमान है, जो एक साथ मुश्किल से ही किसी एक देश में मिल सकते हैं। इनके अलावा भी बहुत सारे क्षेत्रों में हमारे लिए आगे बढ़ने का अनुपम अवसर बन रहे हैं। अब इस बात से सारी दुनिया वाकिफ हो चुकी है कि भारतीय अर्थव्यवस्था डिजिटल होती जा रही है। इस लिहाज से भारत सरकार बेहद गंभीर भी है। इसके तहत ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी, डिजिटल साक्षरता, और ई-गवर्नेंस को बढ़ावा दिया जा रहा है और आवश्यक संसाधन भी तेजी से विकसित किये जा रहे हैं। 2025 तक, भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में भारी वृद्धि होने की उम्मीद है, जिससे ई-कॉमर्स, ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल वित्तीय सेवाओं जैसे क्षेत्रों में तेजी आएगी।

भारत में ई-कॉमर्स का बाजार भी तेजी से बढ़ रहा है। 2025 तक, इसके और भी अधिक परिपक्व होने की उम्मीद है, जिसमें ऑनलाइन खरीदारी, डिजिटल भुगतान और लॉजिस्टिक्स में भी पर्याप्त सुधार होगा। डिजिटल भुगतान को भी सरकारी स्तर पर पर्याप्त बढ़ावा दिया जा रहा है। 2025 तक, भारत में डिजिटल लेनदेन की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। भारत में 5जी तकनीक के प्रयोग में तेजी से विस्तार हो रहा है। 2025 तक, इसका व्यापक रूप से उपयोग होने लगेगा इसकी उम्मीद है, जो तेज रफ्तार से इंटरनेट की कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। डिजिटल परिवर्तन के साथ, साइबर सुरक्षा भी महत्वपूर्ण हो गई है। 2025 तक, भारत इस क्षेत्र में और अधिक मजबूत हो सकता है, जो डेटा सुरक्षा और साइबर अपराधों को रोकने में मदद करेगा। इसके साथ ही, भारत दुनिया के सबसे बड़े सॉफ्टवेयर विकास और निर्यात केंद्रों में एक बड़ा और मजबूत केंद्र बनकर खड़ा हो चुका है। 2025 तक, यह क्षेत्र और अधिक मजबूत होने की उम्मीद है, जो विदेशी मुद्रा कमाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। भारत में क्लाउड कंप्यूटिंग का उपयोग बढ़ रहा है। 2025 तक, कई संगठन क्लाउड-आधारित समाधानों को अपनाएंगे, जो लचीलापन और कम लागत पर असीमित दक्षता प्रदान करेंगे। नए साल में, डेटा एनालिटिक्स में कुशल पेशेवरों की मांग बढ़ेगी, जो व्यापारिक निर्णय लेने में मदद करेंगे। आप मानकर चल सकते हैं कि नूतन साल में

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि भारत 2025 तक एक आर्थिक महाशक्ति बनने की राह पर है। डिजिटल अर्थव्यवस्था, विनिर्माण, बुनियादी ढांचा, स्वास्थ्य सेवा, कृषि, और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में प्रगति से देश के विकास को बढ़ावा मिलेगा। हालांकि, सरकार को अभी भी गरीबी, असमानता और पर्यावरणीय चुनौतियों जैसी कई समस्याओं का समाधान करना बाकी है।

आईटी पेशेवरों की संख्या बढ़ती ही रहेगी। 2025 तक, यह क्षेत्र और अधिक कुशल और प्रशिक्षित पेशेवरों को आकर्षित कर सकता है। सरकार और निजी क्षेत्र दोनों ही कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। 2025 तक, यह प्रयास युवाओं को नए आईटी कौशल सीखने और रोजगार के लिए तैयार करने में मदद कर सकते हैं। अब मेक इन इंडिया के बारे में तो विश्व भर में सब जानते ही हैं। यह पहल भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाने पर केंद्रित है। सरकार विदेशी निवेश को आकर्षित करने और घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए नीतियां बना रही है। 2025 तक, भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, फार्मास्युटिकल्स, और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में विनिर्माण गतिविधियों में तेजी आने की उम्मीद है। रक्षा विनिर्माण में भी सरकार आत्मनिर्भरता हासिल करने पर जोर दे रही है। घरेलू रक्षा विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। 2025 तक, भारत रक्षा उपकरणों का एक प्रमुख निर्यातक बनने की दिशा में आगे बढ़ सकता है। नितिन गड़करी के नेतृत्व में भारत सरकार सड़कों, रेलवे, बंदरगाहों, और हवाई अड्डों जैसे परिवहन बुनियादी ढांचे को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। 2025 तक, देश में बेहतर परिवहन कनेक्टिविटी होगी, जिससे व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। भारत नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, जैसे सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा, के विकास पर जोर दे रहा है। सरकार का लक्ष्य 2025 तक ऊर्जा सुरक्षा हासिल करना और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करना है।

भारत में शहरीकरण भी तेजी से हो रहा है। स्मार्ट सिटी मिशन के तहत, सरकार शहरों को अधिक रहने योग्य और कुशल बनाने के लिए काम कर रही है। 2025 तक, स्मार्ट शहरों में बेहतर बुनियादी ढांचे, जल आपूर्ति, स्वच्छता, और सार्वजनिक परिवहन जैसी सुविधाएं होंगी। आयुष्मान भारत योजना देश के लाखों लोगों को स्वास्थ्य बीमा कवरेज प्रदान करती है। सरकार स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने और सभी के लिए सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। 2025 तक, भारत में स्वास्थ्य सेवा में सुधार की उम्मीद है, जिसमें बेहतर अस्पताल, डॉक्टरों और दवाओं की पहुंच शामिल है। भारत में कृषि क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का उपयोग बढ़ रहा है। ड्रोन, सेंसर, और डेटा एनालिटिक्स जैसी तकनीकों से किसानों को फसल उत्पादन बढ़ाने और लागत कम करने में मदद मिल रही है। 2025 तक, कृषि क्षेत्र में अधिक डिजिटलीकरण होने की उम्मीद है। भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में तेजी से विकास हो रहा है। यह क्षेत्र किसानों के लिए आय बढ़ाने और खाद्य अपशिष्ट को कम करने में मदद कर सकता है। 2025 तक, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में और अधिक निवेश की उम्मीद है। उम्मीद है कि इस साल सेंसर, ड्रोन और जीपीएस जैसी तकनीकों का उपयोग करके किसान अब मिट्टी, पानी और उर्वरक का अधिक कुशलता से उपयोग करने लगेंगे। ■

डॉ. वंदना पालीवाल

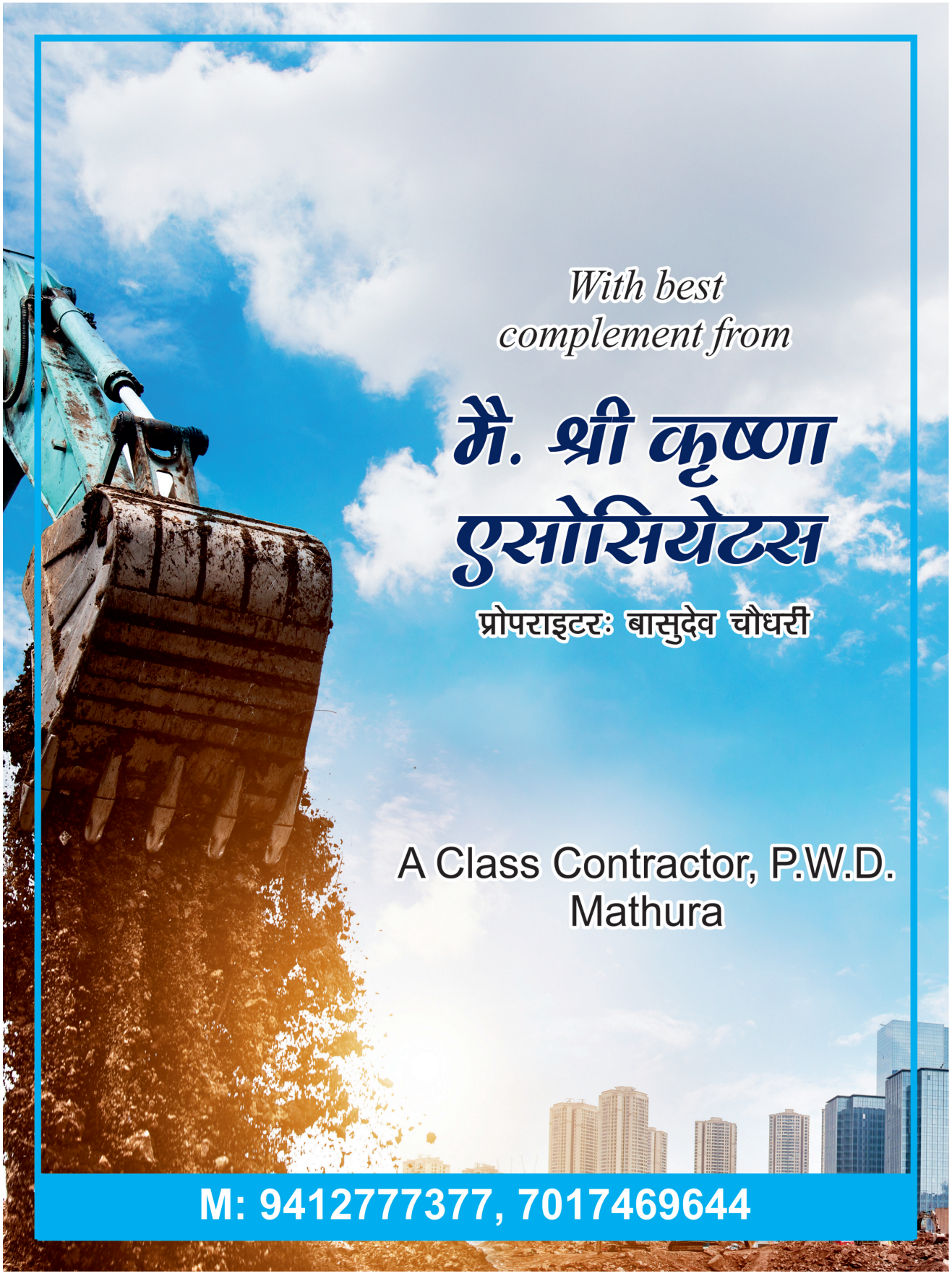

With best
complement from
मै. श्री कृष्णा
एसोसियेटस
प्रोपराइटरः बासुदेव चौधरी
A Class Contractor, P.W.D.
Mathura
M: 9412777377, 7017469644

योगी की 'तपस्या' का महाकुंभ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के करीब आठ वर्ष के शासनकाल में राज्य की 'तस्वीर' काफी बदल गई है। इस बदलाव का आगाज 2017 से उनके पहली बार सीएम बनने के बाद दिखने लगा था जो आज नई ऊंचाइयों पर पहुंच गया है। खास बात यह है कि पिछले आठ वर्षो में योगी की कार्यशैली और तेवर में कोई बदलाव नहीं आया है। न वह रूके हैं,न थके हैं। लॉ एंड आर्डर, महिलाओं का सम्मान और सुरक्षा, अपराध और भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस, आज भी उनकी प्राथमिकता में है। बुलडोजर को उनकी दूसरी इनिंग में भी आराम नहीं दिया गया था।

संजय सक्सेना

यह सब तो प्रशासनिक स्तर पर हो रहा है, वहीं योगी, प्रधानमंत्री मोदी के साथ प्रदेश की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर को भी वह अपने अंदाज में नया आयाम दे रहे हैं। योगी के पहले कार्यकाल में 2019 में प्रयागराज में शानदार अर्धकुंभ का आयोजन और वाराणसी में बाबा विश्वनाथ के मंदिर का जीर्णोधार खास रहा तो 05 अगस्त 2020 को उनका प्रधानमंत्री के साथ अयोध्या में प्रभु श्री रामलला के मंदिर की आधारशिला रखना भी सनातन प्रेमियों के लिये 'मिल का पत्थर' साबित हुआ। इसके करीब सवा साल बाद 13 दिसंबर 2021 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वाराणसी में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के फेज-1 का उद्घाटन किया तो इस मौके पर भी योगी, पीएम मोदी के साथ कंधे से कंधा मिलाये खड़े नजर आये। हिंदू धर्म के लिहाज से देखें तो काशी का ज्योतिर्लिंग 12 में सबसे महत्वपूर्ण है। इस कॉरिडोर की नींव खुद पीएम मोदी ने 8 मार्च 2019 को रखी थी।

बात दूसरे कार्यकाल की कि जाये तो यह भी शानदार चल रहा है। 22 जनवरी 2024 को रामलाल के मंदिर का उदघाटन करके मोदी के साथ-साथ योगी ने भी करोड़ों सतातन प्रेमियों रामभक्त हिन्दुओं का दिल जीत लिया। अभी कुछ दिनों पूर्व ही योगी ने प्रदेश के पांच जिलों के मंदिरों के विकास का ऐलान किया है। इसमें लखीमपुर खीरी से उन्नाव हरदोई फर्रुखाबाद जैसे पांच बड़े जिलों के मंदिरों को शामिल किया गया है। इसके लिए करोड़ों रुपये का बजट घोषित किया गया है, ताकि मथुरा, काशी और अयोध्या जैसा भव्य स्वरूप इन धार्मिक स्थलों को दिया जा सके। मगर सबसे खास है प्रयागराज में होने जा रहा महाकुंभ-2025, जिसका वर्णन हिंदू पौराणिक कथाओं में निहित है। यह दुनिया का सबसे बड़ा सार्वजनिक समागम और आस्था का सामूहिक आयोजन है। इस समागम में मुख्य रूप से तपस्वी, संत, साधु, साध्वियाँ, कल्पवासी और सभी क्षेत्रों के तीर्थयात्री शामिल होते हैं। कुंभ मेला एक ऐसा आयोजन है जो आंतरिक रूप से खगोल विज्ञान, ज्योतिष, आध्यात्मिकता, अनुष्ठानिक परंपराओं और सामाजिक-सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और प्रथाओं के विज्ञान को समाहित करता है, जिससे यह ज्ञान में बेहद समृद्ध हो जाता है।

वैसे तो महाकुंभ मेला-2025 प्रयागराज में 13 जनवरी, 2025 से 26 फरवरी, 2025 तक आयोजित होने रहा है,लेकिन इसकी तैयारियां तीन साल पहले योगी सरकार ने 2022 में दूसरी बार सरकार बनाने के साथ ही शुरू कर दी थी। योगी ने महाकुंभ को भव्य बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। इधर तो शायद ही कोई दिन ऐसा गया होगा जब योगी ने महाकुंभ के कार्यों की समीक्षा नहीं की होगी। इस कुंभ को योगी की तीन साल की तपस्या का महाकुंभ कहा जाये तो गलत नहीं होगा। महाकुंभ की तैयारियां अब अंतिम पड़ाव पर हैं।

योगी ने जारी किया प्रतीक चिन्ह

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 06 अक्टूबर 2024 को प्रयागराज में महाकुंभ-2025 के प्रतीक चिन्ह (लोगो) का अनावरण साथ ही वेबसाइट और ऐप को भी लॉन्च किया। महाकुंभ के लोगो का उपयोग महाकुंभ की वेबसाइट और ऐप के साथ अन्य प्रचार माध्यमों में किया जाएगा। वेबसाइट और ऐप श्रद्धालुओं और पर्यटकों के वायु, रेल और सड़क मार्ग से महाकुंभ पहुंचने में काफी कारगर रहने वाला है। इसके माध्यम से प्रयागराज में आवास, स्थानीय परिवहन, पार्किंग, घाटों तक पहुंचने के दिशा-निर्देश आदि की जानकारी मिल सकेगी। इसमें स्थानीय और आसपास के पर्यटन स्थलों की भी जानकारी होगी। मेला स्थल और धार्मिक गतिविधियों से जुड़ी हुई जानकारी इसके जरिए दी जाएगी।

महाकुंभ से पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा

पर्यटन के क्षेत्र में शीर्ष पर पहुंचने की योगी सरकार की उम्मीदों का आधार इस बार प्रयागराज में लगने वाला महाकुंभ बनता दिख रहा है। पिछले डेढ़ दशक के पन्ने पलटे तो यूपी में सबसे अधिक 58 करोड़ से अधिक पर्यटन 2019 में यूपी में आए थे। इसमें 24 करोड़ से अधिक की हिस्सेदारी लगभग डेढ़ महीने तक चले प्रयागराज कुंभ की थी। इसलिए, 13 जनवरी से शुरू हो रहे प्रयागराज महाकुंभ में लगने वाली आस्था की डुबकी से यूपी की अर्थव्यवस्था को 'अर्थ' के अमृत की आस है। माना जा रहा है कि महाकुंभ में इस बार 40 से 45 करोड़ श्रद्धालु आएंगे। मानवता की इस सबसे बड़ी जुटान के भरोसे प्रदेश में 2025 में कुल पर्यटन की संख्या 65 से 70 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। महाकुंभ में व्यवस्थागत तैयारियों पर 7 हजार करोड़ रुपये से अधिक खर्च किए जा रहे हैं। अलग-अलग देशों में भी ब्रांडिंग का असर यह है कि यूरोपीय देश के नागरिक भी महाकुंभ आने या जानकारी हासिल करने के लिये उत्साहित नजर आ रहे हैं। वहीं महाकुंभ की आभा पर मां गंगा की कृपा बरसने लगी है। संगम पर गंगा मैइया ने लगभग 300 मीटर स्नान घाट के विस्तार का अवसर दे दिया। ठीक संगम नोज के सामने यह जगह मिल गई है। इससे संगम का स्नान घाट लगभग पांच हजार रनिंग फीट हो जाएगा, जो पहले लगभग साढ़े तीन हजार रनिंग फीट तक ही हो पा रहा था।

फेक न्यूज रोकने को डिजिटल वारियर्स

महाकुंभ में कोई व्यवधान नहीं खड़ा कर पाये इसलिये फेक न्यूज के खिलाफ अभियान चलाने, साइबर अपराध के प्रति जागरूकता एवं पुलिस के सराहनीय कार्यों को इंटरनेट मीडिया के विभिन प्लेटफार्म पर प्रसारित करने के लिए डिजिटल वारियर्स को तैनात किया गया है। इसके लिए युवा पीढ़ी के इंटरनेट मीडिया इन्फ्लूएंसर्स एवं कालेज के छात्रों को जोड़ा गया है। वहीं महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं की सटीक गिनती के लिए एआई से लैस कैमरे लगाए गये हैं। योगी सरकार का कहना है कि प्रयागराज में हर 6 साल पर होने वाले कुम्भ या 12 साल पर होने वाले महाकुम्भ में श्रद्धालुओं की सही संख्या गिनने की अभी तक कोई सटीक तकनीक नहीं थी।

अस्त्र-शस्त्र संग आवाहन अखाड़े का छावनी प्रवेश

महाकुंभ का आगाज नजर आने लगा है। सुसज्जित रथों, बग्घियों पर सवार नागाओं, संगम की रेती पर 22 दिंसबर 2025 को श्रीपंच दशनाम आवाहन अखाड़े के महामंडलेश्वरों, श्रीमहंतों, नागा सन्यासियों की छावनी प्रवेश शोभायात्रा निकली तो उनकी एक झलक पाने के लिए लोग उमड़ पड़े। विविध रूप वाले बाबाओं को देखने के लिए लोग कतारबद्ध खड़े रहे। रास्ते भर नागा सन्यासियों के दल शस्त्रों, लाठियों से कलाबाजियां भी करते रहे। छतों, बारजों से पुष्पों की वर्षा होती रही। मड़ौका उपरहार से दिन के 12 बजे भगवान सिद्ध गणेश के पूजन के साथ रथों, बग्घियों, सुसज्जित घोड़ों पर सवार होकर आवाहन अखाड़े के संतों की छावनी प्रवेश शोभायात्रा निकली।

यूनेस्को से कुंभ को मान्यता

वर्ष 2017 में कुंभ मेले को यूनेस्को ने 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर' का दर्जा दिया था। महाकुंभ का आयोजन हर 144 साल में यानी 12 पूर्ण कुंभ मेलों के बाद होता है। पूर्ण कुंभ मेला हर 12 साल में आता है और इसे इन चारों जगहों पर बारी-बारी से आयोजित किया जाता है। इसके अलावा, हर 6 साल में दो जगहों हरिद्वार और प्रयागराज में अर्ध कुंभ मेला भी लगता है। अर्ध कुंभ, पूर्ण कुंभ के बीच में आता है।

सरकार मीडिया को देर रही महाकुंभ कवरेज की टिप्स

मीडिया कवरेज के लिए अंग्रेजी और हिंदी में छपे यूपी सरकार के एक ब्रोशर में पत्रकारों और संपादकों को बताया गया है कि महाकुंभ 2025 को कैसे कवर किया जाए, उन्हें किस तरह की स्टोरी करनी चाहिए और इसके लिए वे किससे बातचीत करें व किसका साक्षात्कार लें। महाकुंभ 2025 की तैयारियां 2022 में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक के साथ शुरू हुईं। तब से मुख्यमंत्री ने योगी आदित्यनाथ ने प्रयागराज के कई दौरे किए। आयोजन से पहले प्रधानमंत्री मोदी ने स्वयं तैयारियों का जायजा लिया और कई प्रमुख परियोजनाओं का उद्घाटन किया। दुनिया के सबसे बड़े आध्यात्मिक समागम की मेजबानी करने के लिए एक अस्थायी शहर, 'महाकुंभ नगर' बसाने के लिए यह जरूरी था। इस नए शहर को बनाने के लिए 50,000 से ज्यादा मजदूरों ने दिन-रात खुद को समर्पित कर दिया। जहां स्थायी पुल समय पर नहीं बन पाए, वहां अस्थायी चार लेन वाले स्टील पुल बनाए गए। प्रयागराज की ओर जाने वाली सड़कों को चौड़ा किया गया और तीर्थयात्रियों की आमद को ध्यान में रखते हुए उनका सौंदर्यीकरण किया गया। डबल इंजन वाली सरकार ने बेहतर तालमेल के साथ काम किया और यह सुनिश्चित किया कि रेलवे पुल और अन्य बुनियादी ढांचे इस आयोजन की मांगों को पूरा करें। ■

जब साक्षी महाराज को कुंभ में नहीं आने दिया गया

निर्मल अखाड़ा अपनी नीति-नियम के प्रति सख्त व समर्पित है। पद भले कितना बड़ा हो, लेकिन गलत कार्य करने वाले को क्षमा नहीं किया जाता। यही कारण है कि बीजेपी सांसद साक्षी महाराज को भी कार्रवाई का सामना करना पड़ा था। साक्षी महाराज निर्मल अखाड़ा के महामंडलेश्वर हैं। 10 फरवरी 1997 में भाजपा के चर्चित नेता ब्रह्मदत्त द्विवेदी की फर्रुखाबाद में गोली मारकर हत्या कर दी गई। हत्याकांड में साक्षी महाराज का नाम जुड़ गया। इस पर अखाड़े ने उन्हें समस्त पदों से हटा दिया। वर्ष 2001 से 2007 तक हुए कुंभ-महाकुंभ में उन्हें शामिल नहीं किया। कोर्ट से बरी होने के बाद पुनः अखाड़े में शामिल किया गया।

महाकुंभ पर आतंक का भी साया

एक तरफ केंद्र की मोदी और यूपी की योगी सरकार महाकुंभ को यादगार बनाने में जुटी हैं तो दूसरी तरफ कट्टरपंथियों की जमातें चुपचाप पर्दे के पीछे से महाकुंभ में षड्यंत्र का जाल बिछा रहे हैं। खुफिया जानकारी के अनुसार महाकुंभ में अप्रिय घटनाओं को अंजाम देने के लिए सीमा पार से भारत के मीर जाफरों की फौज को सक्रिय कर दिया गया है, जो समाज के विभिन्न क्षेत्रों में छद्म वेष धारण करके राष्ट्र विरोधी, मानवता विरोधी और समाज विरोधी कार्यों को अपने आकाओं के आदेशों पर निरंतर सम्पन्न कर रहे हैं। आतंक के आकाओं की विध्वंसात्मक सरगर्मियों की जानकारी होते ही शासन ने प्रयागराज में सीबीआई टीम गठित कर दी है जो केमिकल अटैक से निपटने में सक्षम बताई जाती है। इसी तरह बम निरोधी दस्तों की संख्याओं में भी इजाफा किया गया है। साइबर अटैक से निपटने के लिए विशेषज्ञों की सेवाएं सुनिश्चित की गई है। एनआईए द्वारा विशेष चौकसी बरतने हेतु गुप्त स्थान निर्धारित किये जा चुके है जहां से आयोजन स्थल पर पूरी तरह से निगरानी की जा सकेगी।

भारत में तेज गति से बढ़ती बिलिनेयर की संख्या

धीरेन्द्र सबनानी

विशेष रूप से भारत के विदेशी मुद्रा भंडार को द्रुत गति से बढ़ाने में भारतीय मूल के इन नागरिकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता आया है। इस समय भारतीय मूल के एक करोड़ 80 लाख से अधिक नागरिक विभिन्न देशों में कार्य कर रहे हैं एवं प्रतिवर्ष वे अपनी कमाई का एक बड़ा हिस्सा भारत में जमा के रूप से भेजते हैं। भारत में आर्थिक प्रगति की दर लगातार तेज होती दिखाई दे रही है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर भी अन्य देशों की तुलना में द्रुत गति से आगे बढ़ रही है। भारत आज विश्व की सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बन गया है एवं भारतीय अर्थव्यवस्था आज विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था है तथा शीघ्र ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। भारत का वैश्विक व्यापार भी द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है। कुल मिलाकर, भारत आज अर्थ के क्षेत्र में पूरे विश्व में एक चमकते सितारे के रूप उभर रहा है। लगातार तेज तो रही आर्थिक प्रगति का प्रभाव अब भारत में नागरिकों की औसत आय में हो रही वृद्धि के रूप में भी दिखाई देने लगा है। हाल ही में अमेरिका में जारी की गई यूबीएस बिल्यनेर ऐम्बिशन रिपोर्ट के अनुसार भारत में बिलिनेयर (अतिधनाडयों) की संख्या 185 तक पहुंच गई है और भारत विश्व में बिलिनेयर की संख्या की दृष्टि से तृतीय स्थान पर आ गया है। प्रथम स्थान पर अमेरिका है, जहां बिलिनेयर की संख्या 835 हैं एवं द्वितीय स्थान पर चीन है जहां बिलिनेयर की संख्या 427 है। इस वर्ष भारत और अमेरिका में जहां बिलिनेयर की संख्या में वृद्धि हुई है वहीं चीन में बिलिनेयर की संख्या में कमी आई है। अमेरिका में इस वर्ष बिलिनेयर की सूची में 84 नए बिलिनेयर जुड़े हैं एवं भारत में 32 नए बिलिनेयर (21 प्रतिशत की वृद्धि के साथ) जुड़े हैं तो वहीं चीन में 93 बिलिनेयर कम हुए हैं। पूरे विश्व में आज बिलिनेयर की कुल संख्या 2682 तक पहुंच गई है जबकि वर्ष 2015 में पूरे विश्व में 1757 बिलिनेयर थे। भारत में वर्ष 2015 की तुलना में बिलिनेयर की संख्या में 123 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। बिलिनेयर अर्थात वह नागरिक जिसकी सम्पत्ति 100 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गई है अर्थात भारतीय रुपए में लगभग 8,400 करोड़ रुपए की राशि से अधिक की सम्पत्ति।

पिछले एक वर्ष के दौरान भारत में उक्त वर्णित बिलिनेयर की सम्पत्ति 42 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए 9,560 करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गई हैं। जबकि अमेरिका में बिलिनेयर की सम्पत्ति वर्ष 2023 में 4 लाख 60 हजार करोड़ अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2024 में 5 लाख 80 हजार करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गई है। चीन में तो बिलिनेयर की सम्पत्ति वर्ष 2023 में एक लाख 80 हजार करोड़ अमेरिकी डॉलर से घटकर वर्ष 2024 में एक लाख 40 हजार करोड़ अमेरिकी डॉलर की हो गई है। पूरे विश्व में

बिलिनेयर की सम्पत्ति बढ़कर 14 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गई है। उक्त प्रतिवेदन में यह सम्भावना भी व्यक्त की गई है कि आगे आने वाले 10 वर्षों में भारत में बिलिनेयर की संख्या में और तेज गति से वृद्धि होगी। भारत में 108 से अधिक पारिवारिक व्यवसाय में संलग्न परिवार भी हैं जो अपने व्यवसाय को भारतीय पारिवारिक परम्परा के अनुसार आगे बढ़ा रहे हैं और भारत में बिलिनेयर की संख्या में वृद्धि एवं भारतीय अर्थव्यवस्था में अपना योगदान दे रहे हैं। भारतीय बिलिनेयर की संख्या केवल भारत में ही नहीं बढ़ रही है बल्कि अन्य देशों में निवास कर रहे भारतीय भी बिलिनेयर की श्रेणी में शामिल हो रहे हैं एवं वे अपनी आय के कुछ हिस्से को भारत में भेजकर यहां निवेश कर रहे हैं और इस प्रकार अन्य देशों में निवास कर रहे भारतीय मूल के नागरिक भी भारत के आर्थिक विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। विशेष रूप से भारत के विदेशी मुद्रा भंडार को द्रुत गति से बढ़ाने में भारतीय मूल के इन नागरिकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता आया है। इस समय भारतीय मूल के एक करोड़ 80 लाख से अधिक नागरिक विभिन्न देशों में कार्य कर रहे हैं एवं प्रतिवर्ष वे अपनी कमाई का एक बड़ा हिस्सा भारत में जमा के रूप से भेजते हैं। हाल ही में वर्ल्ड बैंक द्वारा जारी किए गए एक प्रतिवेदन में यह बताया गया है कि वर्ष 2024 में 12,900 करोड़ अमेरिकी डॉलर की भारी भरकम राशि अन्य देशों में रह रहे भारतीयों द्वारा भारत में भेजी गई है। भारत पिछले कई वर्षों से इस दृष्टि पूरे विश्व में प्रथम स्थान पर कायम है। वर्ष 2021 में 10,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर, वर्ष 2022 में 11,100 करोड़ अमेरिकी डॉलर, वर्ष 2023 में 12,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि भारत में भेजी गई थी। प्रतिवर्ष भारत में भेजी जाने वाली राशि की तुलना यदि अन्य देशों में भेजी जा रही राशि से करें तो ध्यान में आता है कि वर्ष 2024 में मेक्सिको में 6,800 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि भेजी गई थी, जिसे पूरे विश्व में इस दृष्टि से द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है। मेक्सिको में भेजी गई राशि भारत में भेजी गई राशि की तुलना में लगभग आधी है। चीन को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ है एवं चीन में 4,800 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि भेजी गई है, फ़िलिपीन में 4,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर एवं पाकिस्तान में 3,300 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि अन्य देशों में रह रहे इन देशों के नागरिकों द्वारा भेजी गई है। भारत में भारतीय नागरिकों द्वारा अन्य देशों से भेजी जा रही राशि में उत्तरी अमेरिका, यूरोप, खाड़ी के देशों एवं एशिया के कुछ देशों यथा मलेशिया एवं सिंगापुर का प्रमुख योगदान है। जैसा कि विदित ही है कि प्रतिवर्ष भारत से लाखों युवा उच्च शिक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से विकसित देशों की ओर जाते हैं। उच्च एवं तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत भारतीय युवा इन देशों में ही रोजगार प्राप्त कर लेते हैं एवं अपनी बचत की राशि का बड़ा भाग भारत में भेज देते हैं। आज तक भारतीय मूल के इन नागरिकों द्वारा एक लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि भारत में भेजी गई है। ■

पवित्र, धार्मिक व आध्यात्मिक महत्व का प्रतीक

प्रयागराज का कुंभ

भारत में पवित्र नदियों के किनारे अवस्थित चार स्थानों – हरिद्वार, उज्जैन, नासिक और प्रयागराज में कुंभ मेला का पवित्र आयोजन सदियों से होता रहा है। खगोलीय गणनानुसार यह मेला मकर संक्रान्ति के दिन प्रारंभ होता है, जब सूर्य और चंद्रमा वृश्चिक राशि में और वृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश करते हैं। यह समय आंतरिक रूप से आध्यात्मिक स्वच्छता और आत्मज्ञान के लिए शुभ अवधि का संकेत माना जाता है। हरिद्वार, उज्जैन, नासिक और प्रयागराज में से प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक 12 वें वर्ष तथा प्रयाग में दो कुंभ पर्वों के बीच छह वर्ष के अंतराल में अर्द्धकुंभ का आयोजन भी होता है। भारतीय संस्कृति में प्रयागराज में अवस्थित गंगा, यमुना और पौराणिक गुप्त सरस्वती के संगम स्थल को अत्यंत पवित्र, धार्मिक व आध्यात्मिक महत्व का प्रतीक माना जाता रहा है। कुंभ मेले के अवसर पर इस संगम स्थल में आयोजित होने वाले कुंभ पर्व में करोड़ों श्रद्धालु एकत्र होते हैं और नदी में स्नान करते हैं, धार्मिक आयोजनों व आध्यात्मिक प्रवचनों में भाग लेते हैं।

डॉ. अशोक चक्रवर्ती

वर्ष 2013 का कुम्भ प्रयाग में हुआ था। फिर 2019 में प्रयाग में अर्द्धकुम्भ मेले का आयोजन हुआ था। अब 13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 तक प्रयाग में महाकुम्भ का आयोजन होगा। इसके लिए प्रशासनिक स्तर पर व्यापक तैयारी की गई है। ऐतिहासिक विवरणियों के अनुसार भारत में कुम्भ मेले की जड़ें सहस्त्राब्दियों वर्ष पुरानी हैं, जिसका प्रारंभिक उल्लेख वैदिक, पौराणिक ग्रंथों तथा चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईस्वी में भारत के शासक रहे मौर्य और गुप्त काल के दौरान मिलता है। इसमें पूरे भारतीय उपमहाद्वीप से तीर्थयात्री आते थे। गुप्तकाल के शासकों ने प्रतिष्ठित धार्मिक मंडली के रूप में इसकी स्थिति को और अधिक महत्व प्रदान किया। मध्य काल में कुम्भ मेले को विभिन्न शाही राजवंशों से संरक्षण प्राप्त हुआ, जिनमें दक्षिण में चोल और विजयनगर साम्राज्य, उत्तर में दिल्ली सल्तनत, राजपूत व मुगल मुगल शासकों का संरक्षण मिला। कहा जाता है कि अकबर ने भी धार्मिक सहिष्णुता की भावना को दर्शाते हुए कुम्भ समारोहों में भाग लिया था। ब्रिटिश प्रशासकों ने इस उत्सव को देखकर इसके विशाल पैमाने और इसमें आने वाले लोगों के विविध सभाओं में भाग लेने वाले श्रद्धालुओं वृहत संख्या को देख आश्चर्यचकित होकर इसका दस्तावेजीकरण किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आवागमन के साधनों के विकसित होने से महाकुम्भ मेले को और भी अधिक महत्व प्राप्त हुआ, जो राष्ट्रीय एकता और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। यूनेस्को द्वारा 2017 में कुम्भ को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता प्राप्त है।

कुम्भ का शाब्दिक अर्थ घड़ा, सुराही, बर्तन है। पौराणिक ग्रंथों में इसका वर्णन जल अथवा अमरता अर्थात अमृत के लिए किया गया है। मेला शब्द का अर्थ है- किसी एक स्थान पर मिलना, एक साथ चलना, सभा में अथवा फिर विशेष रूप से सामुदायिक उत्सव में उपस्थित होना। इस प्रकार, कुम्भ मेले का अर्थ है -अमरत्व का मेला। ज्योतिष व खगोलीय गणनाओं के अनुसार कुम्भ मेला मकर संक्रान्ति के दिन प्रारंभ होता है, जब सूर्य और चन्द्रमा, वृश्चिक राशि में और वृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रान्ति के होने वाले इस योग को कुम्भ स्नानयोग कहते हैं और इस दिन को विशेष मंगलकारी माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार खुलते हैं और इस प्रकार इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति सहजता से हो जाती है। यहाँ स्नान करना साक्षात स्वर्ग दर्शन माना जाता है। भारतीय संस्कृति व हिन्दू धर्म में कुम्भ का अत्यधिक महत्व माना जाता है। पौराणिक मान्यताओं व ज्योतिषिय गणनानुसार कुम्भ का असाधारण महत्व बृहस्पति के कुम्भ राशि में प्रवेश तथा सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के साथ जुड़ा है। ग्रहों की स्थिति हरिद्वार से

लाखों लोगों के द्वारा शांति पूर्ण ढंग से भागीदारी निभाने से सम्पन्न होने वाला यह रहस्यमय मेला कुंभ कोई संगठित आयोजन नहीं, बल्कि एक स्वतः स्फूर्त, आंतरिक, प्राचीन और निरंतर घटना है। यह भारतीय उप-महाद्वीप का धार्मिक, सांस्कृतिक, पौराणिक और आर्थिक महत्व का विशालतम आयोजन है।

बहती गंगा के किनारे पर स्थित हर की पौड़ी स्थान पर गंगा जल को औषधिकृत करती है तथा उन दिनों यह अमृतमय हो जाती है। यही कारण है कि अपनी अंतरात्मा की शुद्धि हेतु पवित्र स्नान करने लाखों श्रद्धालु यहाँ आते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से अर्ध कुम्भ के काल में ग्रहों की स्थिति एकाग्रता तथा ध्यान साधना के लिए उत्कृष्ट होती है। यही कारण है कि ऐसे अवसरों पर यहाँ अर्ध कुम्भ तथा कुम्भ मेले के लिए आने वाले श्रद्धालुओं व पर्यटकों की संख्या सर्वाधिक होती है।

कुम्भ पर्वायोजन को लेकर अनेक पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं, जिनमें से एक सर्वाधिक मान्य कथा देवता व दानवों के सामूहिक प्रयत्न से संपादित समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कुम्भ से अमृत बूँदें गिरने से संबंधित है। इस पौराणिक कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण इन्द्र और अन्य देवता श्रीहीन हो गए। देवताओं के कमजोर हो जाने पर दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया। तब सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए और उन्हें सारा वृतान्त सुनाया। तब भगवान विष्णु ने उन्हे दैत्यों के साथ मिलकर क्षीरसागर का मंथन करके अमृत निकालने की सलाह दी। भगवान विष्णु के सलाह पर सभी देवता दैत्यों के साथ सन्धि करके अमृत निकालने के यत्न में लग गए। उनके अथक प्रयास से उन्हें अमृत कलश प्राप्त हुआ, लेकिन अमृत कुम्भ के निकलते ही देवताओं के इशारे से इन्द्रपुत्र जयन्त अमृतकलश को लेकर आकाश में उड़ गया। उसके बाद दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत को वापस लेने के लिए जयन्त का पीछा किया। घोर परिश्रम के बाद दैत्यों ने बीच रास्ते में ही जयन्त को पकड़ लिया। तत्पश्चात अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देवता व दानवों में बारह दिन तक अविराम युद्ध होता रहा। इस परस्पर संघर्ष के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों -प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक में जयन्त ने कलश को रखा जहां कलश से अमृत की बूंदें छलक कर गिर पड़ीं। उस समय चंद्रमा ने घट से प्रस्रवण होने से, सूर्य ने घट फूटने से, गुरु ने दैत्यों के अपहरण से एवं शनि ने देवेन्द्र के भय से घट की रक्षा की। कलह शान्त करने के लिए भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर यथाधिकार सबको अमृत बाँटकर पिला दिया। इस प्रकार देव-दानव युद्ध का अन्त किया गया। कथा के अनुसार अमृत प्राप्ति के लिए देव-दानवों में परस्पर बारह दिन तक निरंतर युद्ध हुआ था। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के तुल्य होते हैं। इसलिए कुम्भ भी बारह होते हैं। उनमें से चार कुम्भ पृथ्वी पर होते हैं और शेष आठ कुम्भ देवलोक में होते हैं, जिन्हें देवगण ही प्राप्त कर सकते हैं, मनुष्यों की वहाँ पहुँच नहीं है। जिस समय में चन्द्रादिकों ने कलश की रक्षा की थी, उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चंद्र -सूर्यादिक ग्रह जब आते हैं, उस समय कुम्भ का योग होता है अर्थात जिस वर्ष जिस राशि पर सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति का संयोग होता है, उसी वर्ष, उसी राशि के योग में, जहाँ-जहाँ अमृत बूँद गिरी थी, वहाँ-वहाँ कुम्भ पर्व का आयोजन होता है। पृथ्वी पर होने वाले चार कुम्भ हैं- प्रथम उत्तराखंड की गंगा नदी पर हरिद्वार में, द्वितीय मध्यप्रदेश की शिप्रा नदी पर उज्जैन में, तृतीय महाराष्ट्र की गोदावरी नदी पर नासिक में और चतुर्थ उत्तर प्रदेश की गंगा यमुना और गुप्त सरस्वती नदियों के संगम पर। तीर्थराज प्रयाग पवित्र स्थलों में सबसे ऊपर माना जाता है। पवित्रता के प्रतीक के रूप में मान्यता प्राप्त गंगा नदी को पुण्यदायिनी कहा जाता है। पुण्य व धार्मिकता की दाता गंगा भक्ति की प्रतीकात्मक यमुना नदी से मिलती है, जिनसे अदृश्य स्वरूपिनी ज्ञान की प्रतीक सरस्वती मिलती है। तीर्थराज प्रयाग की त्रिवेणी के कुम्भ को शक्तिशाली कहा गया है। मान्यतानुसार पृथ्वी के विशालतम मानव समागम के कुम्भ मेला में स्नान, दान और दर्शन से मनुष्य को जीवन के अनंत चक्र से मुक्ति मिल जाती है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रत्येक बारह वर्ष में मानव मोक्ष के द्वार खुलते हैं। 2025 में बृहस्पति मेष राशि में और सूर्य, चंद्र मकर राशि पर अमावस्या तिथि पर आने के कारण उस समय प्रयागराज में कुम्भ का योग बनेगा। और प्रयागराज के गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के संगम तट पर कुम्भ मेला आयोजित होगा। लाखों लोगों के द्वारा शांति पूर्ण ढंग से भागीदारी निभाने से सम्पन्न होने वाला यह रहस्यमय मेला कुम्भ कोई संगठित आयोजन नहीं, बल्कि एक स्वतः स्फूर्त, आंतरिक, प्राचीन और निरंतर घटना है। यह भारतीय उप-महाद्वीप का धार्मिक, सांस्कृतिक, पौराणिक और आर्थिक महत्व का विशालतम आयोजन है। इस आयोजन में मानव धार्मिक तीर्थ- आध्यात्मिक दर्शन करते हुए स्नान-दान, जीवन- मृत्यु के साथ मोक्ष को साक्षात साकार कर अपने को धन्य महसूस करता है। ■

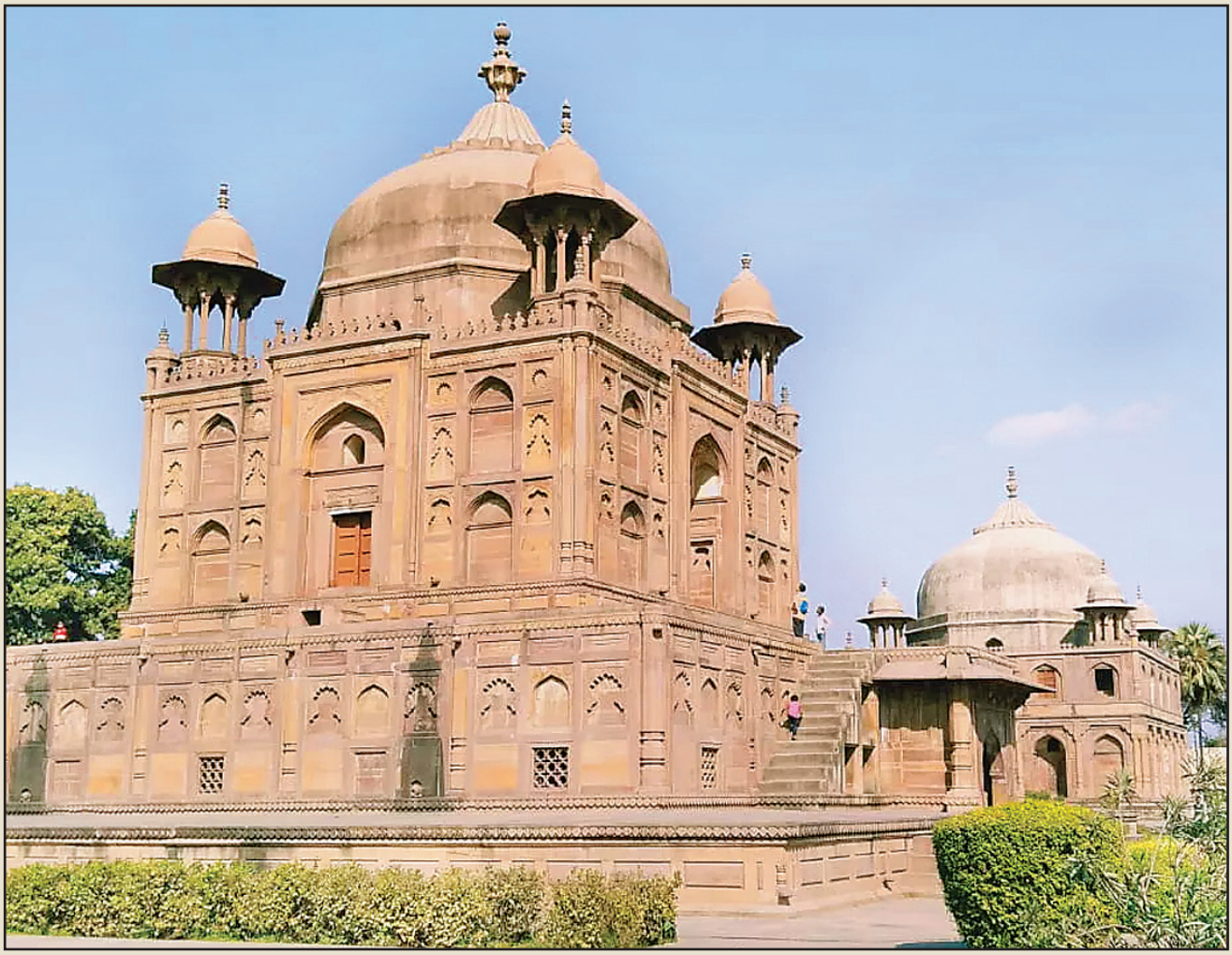

प्राचीन काल से ही शिक्षा का भी संगम स्थल रहा है प्रयागराज

पवित्रतम नदी गंगा, यमुना और गुप्त सरस्वती के त्रिवेणी संगम स्थल पर अवस्थित उत्तरप्रदेश के प्रयागराज में आगामी 13 जनवरी 2025 से भव्य रूप से आयोजित होने वाले कुम्भ मेले के कारण प्रयागराज चर्चा के केंद्र में है। पौराणिक मान्यतानुसार सृष्टिकर्ता भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि कार्य पूर्ण होने के बाद सबसे प्रथम यज्ञ भारत के उत्तरप्रदेश राज्य के प्रमुख प्राचीन नगर प्रयाग में किया था। संसार के इस प्रथम यज्ञ के प्र और याग अर्थात यज्ञ की सन्धि द्वारा प्रयाग नाम बना। इसीलिए ब्रह्मा के द्वारा सृष्टि रचना के बाद सर्वप्रथम यज्ञ सम्पन्न किए गए इस स्थल का नाम प्रयाग पड़ा और कालांतर में इस स्थल को प्रयाग के नाम से जाना जाने लगा ।

राजकुमार उप्पल

वैदिक, पौराणिक और संस्कृत के महाकाव्य ग्रंथों में भी इस स्थान का उल्लेख प्रयाग के रूप में किया गया है। प्रयाग का शाब्दिक अर्थ नदियों का संगम भी है। यहीं पर गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का संगम होता है। पांच प्रयागों का राजा कहलाने के कारण इस नगर को प्रयागराज भी कहा जाता रहा है। कालांतर में यहां समय- समय पर अनगिनत यज्ञ हुए। इसलिए भी इस स्थल को प्रयाग अर्थात बहु यज्ञ स्थल के रूप में संज्ञायित किया जाने लगा। यज्ञों के अनवरत आयोजन के कारण वहां सनातन वैदिक धर्मियों का प्रतिवर्ष जमावड़ा होने लगा। मकर संक्रांति आदि अवसरों पर यह स्वत: स्फूर्त भीड़ अत्यंत भव्य, धार्मिक, आध्यात्मिक, और सांस्कृतिक होती गई, जो कालांतर में कुम्भ के नाम से प्रसिद्ध हुई। प्राचीन काल से ही एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल के रूप में लोकख्यात प्रयाग अर्थात प्रयागराज के त्रिवेणी संगम में प्रत्येक बारह वर्ष में कुम्भ मेला का आयोजन होता है। यहां हर छह वर्षों में अर्द्धकुम्भ तथा हर बारह वर्षों पर कुम्भ मेले का आयोजन होता है, जिसमें समस्त विश्व से करोड़ों श्रद्धालु पतितपावनी गंगा, यमुना और सरस्वती के पवित्र त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाने आते हैं। इसलिए इस नगर को संगमनगरी, कुम्भनगरी, तंबूनगरी आदि विभिन्न नामों से भी जाना जाता है। ज्योतिषीय दृष्टि से कुम्भ मेला एक विशिष्ट काल होता है। इस दौरान ग्रहों की स्थिति प्रयागराज के संगम तट पर गंगा जल को अमृतमय बना देती है। मान्यतानुसार इस काल में किया गया स्नान पापों का क्षरण करने के साथ ही मोक्ष की राह को भी प्रशस्त करता है। यही कारण है कि अर्द्धकुम्भ और कुम्भ मेले में देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु इन स्थानों पर उमड़ते हैं। वर्तमान में यह सबसे बड़े हिन्दू सम्मेलन महाकुम्भ की चार स्थलियों में से एक माना जाता है, शेष तीन हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक हैं। मान्यतानुसार इस पावन नगरी के अधिष्ठाता भगवान श्रीविष्णु स्वयं हैं और वे यहाँ वेणीमाधव रूप में विराजमान हैं। भगवान के यहाँ बारह स्वरूप विद्यमान हैं, जिन्हें द्वादश माधव कहा जाता है। प्राचीन काल से ही यह स्थल महत्वपूर्ण रहा है। उस समय कन्नौज से सड़क सीधे प्रयाग आती थी। गंगा- यमुना के संगम पर स्थित प्रयाग से शृंगवेरपुर वर्तमान मिर्जापुर तक सेना आसानी से जाती थी। गंगा पार होने का घाट शृंगवेर में ही था। रामायण युग में 500 नावों का गरोह यहाँ तैयार रहता था। प्रत्येक नाव पर एक -एक सौ नाविक सशस्त्र युद्ध के लिए वद्धपरिकर रहते थे। प्राचीन भारत में प्रत्येक घाट पर सेनाएं सुरक्षा के लिए तैयार रहती थीं। ऐतिहासिक वर्णनानुसार प्रयाग एवं वर्तमान कौशाम्बी जिले के कुछ भाग इस रूप में महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। यह क्षेत्र पूर्व से मौर्य एवं गुप्त साम्राज्य के अंश एवं पश्चिम से कुशान साम्राज्य का अंश रहा है। बाद में यह कन्नौज साम्राज्य में आया। 1526 में नृशंस इस्लामी आततायियों के भारत पर पुनराक्रमण के बाद से प्रयागराज मुगलों के अधीन आया। 1575 में प्रयाग का दौरा करने के बाद अकबर इसके रणनीतिक स्थान से इतना प्रभावित हुआ कि उसने यहाँ एक दुर्ग के निर्माण का आदेश दिया और 1584 तक इसका नाम अल्लाहबास या भगवान का निवास रखा। बाद में शाहजहाँ के अधीन इसे बदलकर इलाहाबाद कर दिया गया। फिर भी मुगलों से मुक्त कराने के लिए शहर में मराठों के आक्रमण भी होते रहते थे। इसके बाद यह अंग्रेजों के अधिकार में आ गया। 1775 में दुर्ग में थल-सेना के गैरीसन दुर्ग की स्थापना की गई। कालांतर में प्रयाग और इलाहबाद समानांतर रूप में समझे जाने लगे। 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रयागराज भी सक्रिय रहा। 1904 से 1949 तक इलाहाबाद संयुक्त प्रांतों वर्तमान उत्तर प्रदेश की राजधानी था। 16 अक्टूबर 2018 को योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली उत्तरप्रदेश सरकार ने आधिकारिक तौर पर इसका नाम बदलकर प्रयागराज कर दिया।

प्रयागराज सिर्फ बहुयज्ञ स्थल के रूप में ही नहीं, बल्कि प्राचीन काल से ही शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में भी विश्वविख्यात रहा है। इतिहासवेताओं के अनुसार प्राचीन काल में यहाँ अनेक ऋषियों के आश्रम व गुरुकुल थे। त्रेतायुग में प्रयागराज में वर्तमान आनन्द भवन के समीप ही भरद्वाज (भारद्वाज) आश्रम था। यहीं भगवान राम के वन गमन काल में महर्षि भरद्वाज का आश्रम हुआ करता था। बाल्मीकि रामायण व गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरित मानस से भी इस बात की पुष्टि होती है। रामचरित मानस 1/44/1 के अनुसार भरद्वाज मुनि प्रयाग में बसते हैं। उनका श्रीराम के चरणों में अत्यंत प्रेम है-

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा।
तिन्हहि राम पद अति अनुराग।।

महर्षि भरद्वाज बाल्मीकि के एक शिष्य थे। वे आयुर्वेद के पहले संरक्षक थे। भगवान राम ऋषि भरद्वाज के आश्रम में उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आए थे। तुलसीदास ने रामकथा का आरंभ त्रिवेणी संगम के समीप स्थित प्रयागराज में भरद्वाज मुनि के आश्रम पर परमविवेकी मुनि याज्ञवल्क्य के पावन संवाद से किया था। रामचरित मानस 1/44/5 के अनुसार तीर्थराज प्रयाग में आने वाले श्री वेणीमाधवजी के चरण कमलों को पूजते हैं और अक्षयवट का स्पर्श कर उनके शरीर पुलकित होते हैं। बाल्मीकि रामायण अयोध्या कांड अध्याय 89 -90 के अनुसार त्रेतायुग के रामायण काल में भरद्वाज का यह आश्रम एक विश्वविद्यालय था। यहाँ सभी प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। सैनिक शिक्षा के लिए इसकी प्रसिद्धि थी। भरद्वाज आश्रम में बड़ा उपवन था। अनेक उटज थे, जहां वृक्षों की भरमार थी। आश्रम में जलाशय की कमी न थी। अनेक भवन थे। नीलवैदूर्य मणि की भांति हरी- हरी घासों से आश्रम की समतल भूमि आच्छन्न थी। इसका विस्तार 40 मीलों का था। बेल, कपित्थ, कटहल, नींबू और आम के पेड़ फलों से समन्वित थे। हाथी और घोड़ों के रहने के लिए भी स्वच्छ, शुभ्र चार-चार कमरों की शालाएं बनी थी। सैनिक शिक्षा के उद्देश्य से ही यह आश्रम बसा था। बाल्मीकि रामायण अयोध्या कांड अध्याय 89-90 में ही भरद्वाज आश्रम में समतल मैदान, भिन्न -भिन्न प्रकार की हय शालाओं का वर्णन अंकित है। सांग्रामिक शिक्षा की लिए इन सब की अति आवश्यकता थी। मान्यता है कि आश्रम के समीप ही ऋषि भरद्वाज ने भरद्वाजेश्वर महादेव का शिवलिंग स्थापित किया था। वर्तमान में यहाँ श्रीराम लक्ष्मण, महिषासुर मर्दिनी, सूर्य, शेषनाग, नर वराह सहित सैकड़ों मूर्तियाँ हैं। भरद्वाज, याज्ञवल्क्य और अन्य संतों, देवी - देवताओं की प्रतिमा और शिव मंदिर है।

महाभारत आदि पर्व 140- 41 के अनुसार प्रयाग में ही अग्निवेश्याश्रम नामक आश्रम भी था। यहाँ भी विभिन्न प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। अग्निवेश्याश्रम के प्रमुख अग्निवेश्य श्री अगस्त (अगस्त्य) के प्रमुख शिष्य तथा द्रोण के गुरु थे। पांचाल राज द्रुपद भी उनके शिष्य थे। ऐसा प्रतीत होता है कि द्वापर युग में महाभारत काल तक भरद्वाज आश्रम ह्रासोन्मुख हो गया होगा। इसलिए अग्निवेश्य को विंध्य के उस पार अगस्त्य के आश्रम में सांग्रामिक व अन्य शिक्षाओं के लिए जाना पड़ा था। उल्लेखनीय है कि अगस्त्य का आश्रम उस समय भय और आदर का विषय हो चुका था। इस आश्रम में इतने विध्वंसात्मक शस्त्र तैयार होते थे कि राक्षस राज रावण के हृदय में सदा इसका आतंक बना हुआ रहता था। और राक्षसों की एक बड़ी छावनी यहाँ कायम हुई थी। दक्षिण से लौटने पर अग्निवेश्य ने भरद्वाज आश्रम के पास ही अपने आश्रम को संस्थापित किया। परंतु यह लोकप्रिय प्रमाणित नहीं हो सका। कारण, स्वयं भरद्वाज पुत्र द्रोण को परशुराम के पास सैनिक शिक्षा में पूर्ण योग्यता प्राप्त करने के लिए जाना पड़ा था। इस प्रकार प्रयागराज केवल गंगा, यमुना, सरस्वती जैसी पवित्र नदियों का ही संगम नहीं, अपितु धार्मिक- आध्यात्मिक स्थल के साथ ही सैनिक व अन्य शिक्षा का भी संगम है। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रयागराज प्राचीन काल से ही शैक्षणिक नगर के रूप में प्रसिद्ध रहा है। वर्तमान में भी यह शिक्षा का केंद्र बना हुआ है। जहाँ भारत के सभी प्रदेशों से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते है। यहाँ इलाहाबाद विश्वविद्यालय जैसा विख्यात शैक्षणिक केंद्र अवस्थित है, जहाँ से अनेकानेक विद्वान ने शिक्षा ग्रहण कर देश व समाज के अनेक भागों में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। प्रयागराज में कई विश्वविद्यालय, शिक्षा परिषद, अभियांत्रिकी महाविद्यालय, चिकित्सीय विश्वविद्यालय तथा मुक्त विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय भूमिका निभा रहे हैं। ■

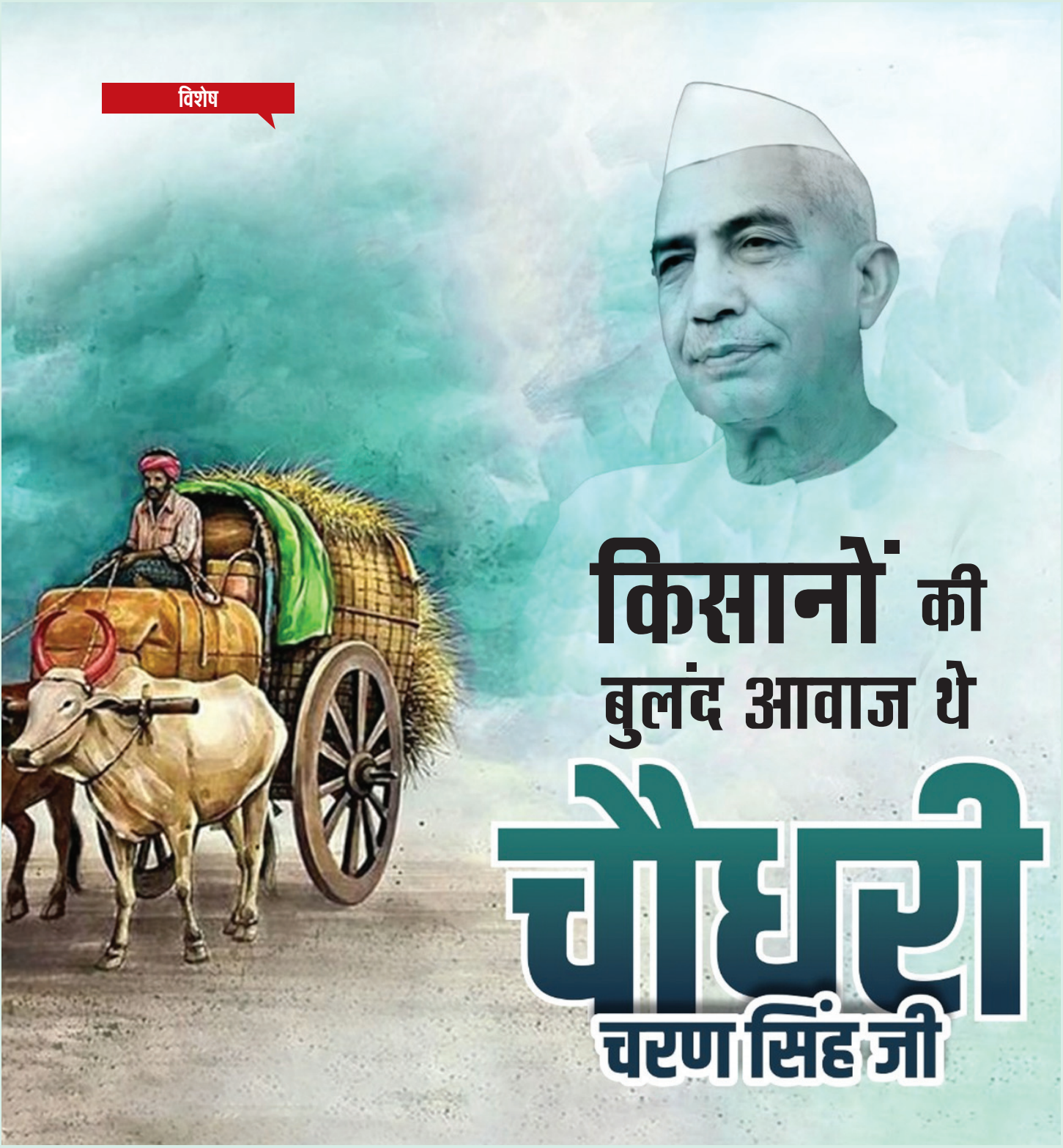

किसानों की बुलंद आवाज थे चौधरी चरण सिंह जी

किसानों में चौधरी साहब के नाम से मशहूर चौधरी चरण सिंह 3 अप्रैल 1967 में पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे। तब 1967 में पूरे देश में साम्प्रदायिक दंगे होने के बावजूद उत्तर प्रदेश में कहीं पत्ता भी नहीं हिल पाया था।

पवन आगरी

देश के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह एक व्यक्ति नहीं विचारधारा थे। चौधरी चरण सिंह ने हमेशा यह साबित करने की कोशिश की थी कि किसानों को खुशहाल किए बिना देश का विकास नहीं हो सकता। उनकी नीति किसानों व गरीबों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने की थी। वो कहते थे कि देश की समृद्धि का रास्ता गांवों के खेतों और खलिहानों से होकर गुजरता है। उन का कहना था कि भ्रष्टाचार की कोई सीमा नहीं है। जिस देश के लोग भ्रष्ट होंगे वो देश कभी तरक्की नहीं कर सकता।

चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसम्बर 1902 को गाजियाबाद जिले के नूरपुर गांव के चौधरी मीर सिंह के घर हुआ था। बाद में उनका परिवार नूरपुर से जानी खुर्द गांव आकर बस गया था। 1928 में चौधरी चरण सिंह ने आगरा विश्वविद्यालय से कानून की शिक्षा लेकर गाजियाबाद में वकालत प्रारम्भ की। 1930 में महात्मा गांधी द्वारा नमक कानून तोडने के समर्थन में चरण सिंह ने हिण्डन नदी पर नमक बनाया जिस पर उन्हे 6 माह जेल की सजा हुई। 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी चरण सिंह गिरफ्तार किये गये। 1942 में अगस्त क्रांति के माहौल में चरण सिंह को गिरफ्तार कर डेढ़ वर्ष की सजा हुई। जेल में ही चौधरी चरण सिंह की लिखित पुस्तक शिष्टाचार भारतीय समाज में शिष्टाचार के नियमों का एक बहुमूल्य दस्तावेज है।

चौधरी चरण सिंह खुद एक छोटे से गांव में एक किसान के घर जन्मे थे। बचपन से ही उन्होंने गांव के किसानों, गरीबों के दुख: दर्द को नजदीकी से देखा जाना था। इसलिये उन्हें उनकी समस्याओं का बखूबी अहसास था। उनको जब कभी कहीं मौका मिलता वे गांव के किसानों की सेवा करने से नहीं चूकते थे। उनके दिल में हमेशा गांव के किसान ही बसे रहते थे। चौधरी चरण सिंह जीवन पर्यन्त गांधी टोपी धारण कर महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी बने रहे। उन्होंने किसानों की खुशहाली के लिए खेती पर बल दिया था। किसानों को उनकी उपज का उचित दाम मिल सके इसके लिए भी वो बहुत गंभीर रहते थे। उनका कहना था कि भारत का सम्पूर्ण विकास तभी होगा जब किसान, मजदूर, गरीब सभी खुशहाल होंगे। चौधरी चरण सिंह की गिनती हमेशा एक ईमानदार राजनेता के तौर पर की जाती है। उन्होंने जीवन पर्यन्त किसानों की सेवा को ही अपना धर्म माना और अपने अंतिम समय तक देश के गांव में रहने वाले किसानों, गरीबों, दलितों, पीड़ितों की सेवा में ही पूरी जिंदगी गुजारी। चौधरी चरण सिंह जाति प्रथा के कट्टर खिलाफ थे।

आज देश के किसान कर्ज में डूबे हुये हैं। उनको उनकी उपज का पूरा दाम नहीं मिल पाता है। अपनी खराब आर्थिक स्थिति के चलते देश में बड़ी संख्या में किसान आत्महत्या करने को मजबूर हो रहें हैं। केन्द्र व राज्य सरकारें भी किसानो के भले की योजनायें बना पाने में नाकाम रही है। चुनाव के समय राजनीतिक पार्टियां किसानों को झांसा देकर उनके वोट बटोर लेती है। फिर किसी का ध्यान किसानो की समस्याओं के समाधान करने की तरफ नहीं जाता है। ऐसे में आज देश के किसानों को चौधरी चरणसिंह जैसे सच्चे किसान हितैषी नेता की जरूरत है। जो उनके हक में खड़ा होकर किसानों की आवाज बुलन्द कर सके व उनका वाजिब हक दिला सके। चौधरी चरण सिंह भारतीय राजनीति में एक बड़े नेता थे। मगर इंदिरा गांधी के सहयोग से कुछ समय के लिये देश के प्रधानमंत्री बन कर उन्होने देश में पहली बार कांग्रेस के खिलाफ बने एक मजबूत गठबंधन को तोड़ा था। उससे उनकी प्रतिष्ठा को भी गहरा आघात पहुंचा था।

चौधरी चरण सिंह को 1951 में उत्तर प्रदेश सरकार में न्याय एवं सूचना विभाग का कैबिनेट मंत्री बनाया गया। 1952 में डॉक्टर सम्पूर्णानंद के मुख्यमंत्रित्व काल में उन्हें राजस्व तथा कृषि विभाग का दायित्व मिला। एक जुलाई 1952 को उत्तर प्रदेश में उनके बदौलत जमींदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ और गरीबों को खेती करने के अधिकार मिले। 1954 में उन्होने किसानों के हित में उत्तर प्रदेश भूमि संरक्षण कानून को पारित कराया। चरण सिंह स्वभाव से भी कृषक थे तथा कृषक हितों के लिए अनवरत प्रयास करते रहे। 1960 में चंद्रभानु गुप्ता की सरकार में उन्हें गृह तथा कृषि मंत्री बनाया गया। उत्तर प्रदेश के किसान चरण सिंह को अपना रहनुमा मानते थे। उन्होंने कृषकों के कल्याण के लिए काफी कार्य किए। लोगों के लिए वो एक राजनीतिज्ञ से ज्यादा सामाजिक कार्यकर्ता थे। उनके भाषण को सुनने के लिये उनकी जनसभाओं में भारी भीड़ जुटा करती थी। किसानों में चौधरी साहब के नाम से मशहूर चौधरी चरण सिंह 3 अप्रैल 1967 में पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे। तब 1967 में पूरे देश में साम्प्रदायिक दंगे होने के बावजूद उत्तर प्रदेश में कहीं पत्ता भी नहीं हिल पाया था। 17 फरवरी 1970 को वे दूसरी बार मुख्यमंत्री बने। अपने सिद्धांतों से उन्होने कभी समझौता नहीं किया। 1977 में चुनाव के बाद जब केन्द्र में जनता पार्टी सत्ता में आई तो मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने और चरण सिंह को देश का गृह मंत्री बनाया गया। केन्द्र में गृहमंत्री बनने पर उन्होंने अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना की। 1979 में वे उप प्रधानमंत्री बने। बाद में मोरारजी देसाई और चरण सिंह के मतभेद हो गये। 28 जुलाई 1979 से 14 जनवरी 1980 तक चौधरी चरण सिंह समाजवादी पार्टियों तथा कांग्रेस के सहयोग से भारत के पांचवें प्रधानमंत्री बने। चौधरी चरण सिंह एक कुशल लेखक भी थे। उनका अंग्रेजी भाषा पर अच्छा अधिकार था। उन्होंने कई पुस्तकों का लेखन भी किया। 29 मई 1987 को 84 वर्ष की उम्र में जब उनका देहान्त हुआ तो देश के किसानो ने सरकार में पैरवी करने वाला अपना नेता खो दिया था। लोगों का मानना था कि चरण सिंह से राजनीतिक गलतियां हो सकती हैं लेकिन चारित्रिक रूप से उन्होंने कभी कोई गलती नहीं की। इतिहास में उनका नाम प्रधानमंत्री से ज्यादा एक किसान नेता के रूप में जाना जाता है। चौधरी चरण सिंह ने ही भ्रष्टाचार के खिलाफ सबसे पहले आवाज बुलन्द करते हुये आह्वान किया था कि भ्रष्टाचार का अन्त ही देश को आगे ले जा सकता है। अटल बिहारी बाजपेयी की सरकार ने 2001 में हर वर्ष 23 दिसम्बर को चौधरी चरण सिंह की जयंती को राष्ट्रीय किसान दिवस के रूप में मनाने की जो परम्परा शुरू की थी उससे जरूर उनको साल में एक दिन याद किया जाने लगा है। आज किसानों की हालात को देखकर चौधरी चरणसिंह जैसे देश के बड़े किसान नेता की याद आना स्वाभाविक ही है। मौजूदा समय में चौधरी चरणसिंह जैसा नेता होता तो किसानों को उनका वाजिब हक मिलने से कोई नहीं रोक सकता था। चौधरी चरण सिंह जैसे किसानों के बड़े नेता द्धारा किसानों के हित में किये गये कार्यो को देखते हुये वर्षो पूर्व ही उनको भारत रत्न सम्मान मिलना चाहिये था। मगर सरकारों की अनदेखी के चलते उनको वर्षों तक उचित सम्मान नहीं मिल पाया। नरेन्द्र मोदी सरकार ने चौधरी चरण सिंह जैसे सच्चे बड़े व सच्चें किसान नेता को भारत रत्न प्रदान कर सच्ची श्रृद्धांजलि अर्पित की है। इससे देश के करोड़ों किसानों के साथ ही सरकार का भी सम्मान बढ़ा है। ■

शायरी और गजल के शिखर फनकार थे मिर्जा गालिब

मिर्ज़ा गालिब का जीवन अनेक विलक्षणताओं एवं विशेताओं का समवाय था। उनके विषय में पहली बात तो यह है कि वह अत्यन्त शिष्ट, शालीन एवं मित्रप्रेमी थे। जो कोई उनसे मिलने आता, उससे खुले दिल से मिलते थे।

उनका जन्म आगरा में 27 दिसंबर 1797 को एक सैनिक पृष्ठभूमि वाले परिवार में हुआ था। उनका पूरा बचपन ताजनगरी में ही बीता। गालिब की पृष्ठभूमि एक तुर्क परिवार से थी और इनके दादा मिर्जा कोबान बेग खान मध्य एशिया के समरकन्द से सन् 1750 के आसपास अहमद शाह के शासन काल में भारत आये।

आदर्श नंदन गुप्ता

मिर्ज़ा असदुल्लाह बेग ख़ान, जो अपने तख़ल्लुस ग़ालिब से जाने जाते हैं, उर्दू एवं फ़ारसी भाषा के एक महान शायर थे। इनको उर्दू भाषा का सर्वकालिक एवं सार्वदैशिक महान शायर माना जाता है और फ़ारसी कविता के प्रवाह को हिन्दुस्तानी जबान में लोकप्रिय बनाने वाले वे एक महान् फनकार थे। हर मोहब्बत करने वाला आशिक मिर्जा गालिब के शेर, शायरी और गजल जरूर पढ़ता है। हर कोई उनकी शायरी का कायल है। मिर्जा ग़ालिब सर्व-धर्म-सद्भाव एवं मानवीय चेतना के चितेरे थे एवं गहन संवेदनाओं के शिखर सृजनकार थे। ग़ालिब का व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक एवं बहुआयामी था। ग़ालिब में जिस प्रकार शारीरिक सौंदर्य था, उसी प्रकार उनकी प्रकृति में विनोदप्रियता तथा वक्रता भी थी और ये सब विशेषताएं उनकी कविता एवं शायरी में यत्र-तत्र झलकती रहती हैं। चिन्ताओं से संघर्ष में इनकी सहायक एक तो थी शराब, जिन्दगी के अंतिम समय में जुए की लत भी लग गई। उन्हें शुरू से शतरंज और चौसर खेलने की आदत थी। अक्सर मित्र-मण्डली जमा होती और खेल-तमाशों में वक्त कटता था। अपने मदिरा प्रेम के कारण जो भाव प्रकट किए हैं, वे शेर ऐसे चुटीले तथा विनोदपूर्ण हैं कि उनका जोड़ उर्दू कविता में अन्यत्र नहीं मिलता। गालिब ने शायरी और गजल को एक नया रूप दिया। गालिब के पहले गजल को केवल प्रेम के संदर्भ में देखा जाता है लेकिन उन्होंने गजल में ही जीवन के दर्शन और रहस्यों को दर्शाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी शायरी के कारण वे न सिर्फ हिन्दुस्तान बल्कि पूरी दुनिया में मशहूर हैं। आज भी उनका नाम बड़े अदब के साथ लिया जाता है।

गालिब की प्रारम्भिक शिक्षा के बारे में स्पष्टत: कुछ कहा नहीं जा सकता। उन्होंने अधिकतर फारसी और उर्दू में पारम्परिक मानवीयता, भक्ति और सौन्दर्य रस पर रचनायें लिखी। उन्होंने फारसी और उर्दू दोनों में पारंपरिक गीत काव्य की रहस्यमय-रोमांटिक शैली में सबसे व्यापक रूप से लिखा और यह गजल के रूप में जाना जाता है। उनकी शायरियों में गहन साहित्य और क्लिष्ट भाषा का समावेश था। उन्होंने अपनी शायरी का बड़ा हिस्सा असद के नाम से लिखा है। गालिब हिंदुस्तान में उर्दू अदबी के दुनिया के सबसे रोचक किरदार थे। उनकी जड़ें तुर्क से थीं। वे फारसी कविता को भारतीय भाषा में लोकप्रिय करने में माहिर थे, उन्हें पत्र लिखने का बहुत शौक था। इसीलिए उन्हें पत्र-पुरोधा भी कहा जाता था। आज भी उनके पत्रों को उर्दू साहित्य में एक अहम विरासत माना जाता है। मिर्जा गालिब ने 11 वर्ष की छोटी उम्र में ही अपनी पहली कविता लिखी थी। मिर्जा गालिब की मातृभाषा उर्दू थी लेकिन तुर्की और फारसी भाषाओं पर भी उनकी अच्छी पकड़ थी। उन्होंने अरबी, फारसी, दर्शन और तर्कशक्ति का भी अध्ययन किया था। गालिब इश्क को जीते थे। वह इश्क का आखिरी छोर थे। उनकी नज्में और शेर ने सालों साल इश्क की तहजीब दुनिया को दी है। अगर हम यूं कहें कि इश्क गालिब से शुरू होता है तो यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं होगी। उनका हर शेर एक जिंदादिल आशिक की तरह इश्क की रस्मों को निभाता है। उनका जीवन संघर्ष से भागते या पलायन करते हुए नहीं बिता और न इनकी कविता एवं शायरी में कहीं निराशा का नाम है। वह इस संघर्ष को जीवन का एक अंश तथा आवश्यक अंग समझते थे। मानव की उच्चता तथा मनुष्यत्व को सब कुछ मानकर उसके भावों तथा विचारों का वर्णन करने में वह अत्यन्त निपुण थे और यह वर्णनशैली ऐसे नए ढंग की है कि इसे पढ़कर शताब्दियों बाद भी पाठक मुग्ध हो जाता है।

मिर्ज़ा का जीवन अनेक विलक्षणताओं एवं विशेताओं का समवाय था। उनके विषय में पहली बात तो यह है कि वह अत्यन्त शिष्ट, शालीन एवं मित्रप्रेमी थे। जो कोई उनसे मिलने आता, उससे खुले दिल से मिलते थे। इसीलिए जो आदमी एक बार इनसे मिलता था, उसे सदा इनसे मिलने की इच्छा बनी रहती थी। मित्रों के प्रति अत्यन्त वफ़ादार थे। उनकी खुशी में खुशी, उनके दु:ख में दु:खी। मित्रों को देखकर बाग़-बाग़ हो जाते थे। उनके मित्रों का बहुत बड़ा दायरा था। उसमें हर जाति, धर्म और प्रान्त के लोग थे। वैसे वे शिया मुसलमान थे, पर मज़हब की भावनाओं में बहुत उदार और स्वतंत्र चेता थे। ग़ालिब सदा किराये के मकानों में रहे, अपना मकान न बनवा सके। ऐसा मकान ज्यादा पसंद करते थे, जिसमें बैठकखाना

दरअसल मिर्जा गालिब अपनी हाजिर जवाबी के लिए मशहूर थे। इस दौरान भी इश्क ने 'गालिब' निकम्मा कर दिया, वर्ना हम भी आदमी थे काम के। मौत का एक दिन मुअय्यन है, नींद क्यूं रात भर नहीं आती...। गालिब की जिंदगी संघर्षों से भरी रही, उन्होंने अपनी जिंदगी में अपने कई अजीजों को खोया। अपनी जिंदगी गरीबी में गुजारी। इसके बावजूद गालिब के शेर ने लोगों के दिलों को छुआ। गालिब 15 फरवरी 1869 को इस दुनिया से अलविदा कह गए।

जरूर हो और उनके दरवाज़े भी अलग हों, जिससे यार-दोस्त बेझिझक आ-जा सकें। खाने-खिलाने के शौक़ीन, स्वादिष्ट व्यंजनों के प्रेमी थे। उन्हें हम स्नेह एवं मित्रता की छांह देने वाले बरगद कहे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

हर जुबां का वो आसरा...उसके दिल में धड़कता था आगरा... उनका जन्म आगरा में 27 दिसंबर 1797 को एक सैनिक पृष्ठभूमि वाले परिवार में हुआ था। उनका पूरा बचपन ताजनगरी में ही बीता। गालिब की पृष्ठभूमि एक तुर्क परिवार से थी और इनके दादा मिर्जा कोबान बेग खान मध्य एशिया के समरकन्द से सन् 1750 के आसपास अहमद शाह के शासन काल में भारत आये। उन्होंने दिल्ली, लाहौर व जयपुर में काम किया और अन्तत: आगरा में बस गये। जवानी के दहलीज पर कदम रखते ही वह दिल्ली चले आए। यहां जाने के बाद भी ताउम्र मिर्जा गालिब के दिल व दिमाग में आगरा छाया रहा। आगरा में गालिब के जन्मस्थान को इन्द्रभान कन्या अन्तर महाविद्यालय में बदल दिया गया है, जिस कमरे में गालिब का जन्म हुआ था उसे आज भी सुरक्षित रखा गया है। दिल्ली के चांदनी चौक के बल्लीमारान इलाके के कासिम जान गली में स्थित गालिब के घर को गालिब मेमोरियल में तब्दील कर दिया गया। बहादुर शाह जफर द्वितीय ने 1850 ई. में गालिब को दबीर-उल-मुल्क और नज्म-उद-दौला की उपाधि प्रदान की थी। इसके अलावा बहादुर शाह जफर द्वितीय ने गालिब को मिर्जा नोशा की उपाधि प्रदान की थी, जिसके बाद गालिब के नाम के साथ मिर्जा शब्द जुड़ गया। तबियत से खुद एक शायर बहादुर शाह जफर द्वितीय ने कविता सीखने के उद्देश्य से 1854 में गालिब को अपना शिक्षक नियुक्त किया था। बाद में बहादुर शाह जफर ने गालिब को अपने बड़े बेटे शहजादा फखरूदीन मिर्जा का भी शिक्षक नियुक्त किया था। इसके अलावा गालिब मुगल दरबार में शाही इतिहासविद के रूप में भी काम करते थे। साल 1847 में जुआ खेलने के जुर्म में गालिब को जेल भी जाना पड़ा था और उन्हें 200 रूपए जुर्माना और सश्रम कारावास की सजा दी गई थी। एक मुसलमान होने के बावजूद गालिब ने कभी रोजा नहीं रखा। मुसलमान होने के प्रश्न पर एक अंग्रेज कर्नल को जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि मैं आधा मुसलमान हूं। ये जवाब सुनकर अंग्रेज कर्नल ने अगला सवाल दागा और पूछा कि ऐसा कैसे कि आप आधे मुसलमान हैं? इसके जवाब में मिर्जा गालिब ने कहा, हां, क्योंकि मैं शराब तो पीता हूं लेकिन सुअर नहीं खाता। मिर्जा गालिब का यह जवाब सुनकर अंग्रेज कर्नल अपनी हंसी नहीं रोक पाया। एक बार गालिब आम खा रहे थे। जमीन पर छिलके जमा कर रखे थे। वहां खड़े एक व्यक्ति ने उन छिलकों को अपने गधे को खाने के लिए दिया। गधे ने उन छिलकों को खाने से इंकार कर दिया। इस पर सज्जन व्यक्ति ने गालिब का मजाक उड़ाते हुए कहा कि 'गधे भी आम नहीं खाते हैं।' इस पर गालिब ने अपनी हाजिर जवाबी का परिचय देते हुए कहा कि 'गधे ही आम नहीं खाते हैं।' मिर्जा गालिब का एक बहुत मशहूर शेर है 'ये इश्क नहीं आसान, बस इतना समझ लीजिये, इक आग का दरिया है और डूबकर जाना है।' न जाने गालिब ने किन परिस्थितियों में ये शेर गढ़ा होगा। लेकिन ऐसा लगता है कि इश्क पर जो पहरा उस सदी में था वह आज इक्कीसवीं सदी के ग्लोबल इंडिया में भी है। जिंदगी जीने के तमाम तरीके भले ही बदल गए हों, लेकिन प्यार मोहब्बत को देखने का हमारा पारिवारिक-सामाजिक-धार्मिक नजरिया आज भी सदियों पुराना है। मिर्जा गालिब ने बेहतरीन शेर लिखे हैं- इस सादगी पे कौन न मर जाए ऐ खुदा, लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं। दरअसल मिर्जा गालिब अपनी हाजिर जवाबी के लिए मशहूर थे। इस दौरान भी इश्क ने 'गालिब' निकम्मा कर दिया, वर्ना हम भी आदमी थे काम के। मौत का एक दिन मुअय्यन है, नींद क्यूं रात भर नहीं आती...। गालिब की जिंदगी संघर्षों से भरी रही, उन्होंने अपनी जिंदगी में अपने कई अजीजों को खोया। अपनी जिंदगी गरीबी में गुजारी। इसके बावजूद गालिब के शेर ने लोगों के दिलों को छुआ। गालिब 15 फरवरी 1869 को इस दुनिया से अलविदा कह गए। ■

स्कूलों में छात्रों की संख्या का घटना चिन्ताजनक

भारत में शिक्षा प्रणाली लाखों छात्रों के जीवन और भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अपने समृद्ध इतिहास और विविध संस्कृति के साथ, भारत में एक जटिल और विशाल शैक्षिक परिदृश्य है। शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत शिक्षा के लिए एकीकृत जिला सूचना प्रणाली की ताजा रिपोर्ट के अनुसार भारत में स्कूलों की संख्या बढ़ रही है, पर स्कूली छात्रों की संख्या घट रही है। स्कूली छात्रों की संख्या घटना न केवल चिंताजनक और विचारणीय है बल्कि नये भारत-सशक्त भारत निर्माण की एक बड़ी बाधा भी है। भारत में स्कूलों की संख्या में करीब 5,000 की बढ़ोतरी हुई है।

विनय शर्मा

रिपोर्ट के अनुसार, भारत में प्राथमिक, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तरों सहित 14,89,115 स्कूल हैं। ये स्कूल 26,52,35,830 छात्रों को पढ़ाते हैं। इनमें से कुछ स्कूलों को उनकी प्रतिष्ठा, स्थापना के वर्षों, महत्वपूर्ण स्कूल परिणामों, मार्केटिंग रणनीतियों आदि के कारण उच्च छात्र नामांकन प्राप्त होते हैं लेकिन पर साल 2022-23 व 2023-24 के बीच स्कूली छात्रों के नामांकन में 37 लाख की कमी आई है। यह स्थिति अनेक सवाल खड़े करती है। क्या स्कूली शिक्षा ज्यादातर बच्चों की पहुंच के बाहर है? क्या शिक्षा का आकर्षण पहले की तुलना में घटा है? भारत में शिक्षा प्रणाली लाखों छात्रों के जीवन और भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अपने समृद्ध इतिहास और विविध संस्कृति के साथ, भारत में एक जटिल और विशाल शैक्षिक परिदृश्य है। भारत में शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा सहित विभिन्न चरण शामिल हैं। महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। डेटा एग्रीगेशन प्लैटफॉर्म यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इन्फॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस की यह ताजा रिपोर्ट देश के स्कूली इन्फ्रास्ट्रक्चर में हुए सुधार के साथ ही उन अहम दिक्कतों की भी झलक देती है, जिन्हें दूर किया जाना बाकी है। बुनियादी सुविधाओं की स्थिति बेहतर होने के बावजूद छात्रों की संख्या का घटना गहन विमर्श का विषय है।

शिक्षा मानव-जीवन के विकास का आधार स्तंभ है। शिक्षा के अभाव में मानव-जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। यह मनुष्य को उत्कृष्टता एवं उच्चता के शिखर पर स्थापित करती है। शिक्षा प्रकाश एवं शक्ति का ऐसा स्रोत है जो नये भारत के विकास का आधार है। जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरन्तर सामंजस्यपूर्ण विकास करके नये भारत, सशक्त भारत के निर्माण के संकल्प को मजबूती देता है। देश में पिछले साल के मुकाबले स्कूलों की संख्या तो बढ़ी है, लेकिन छात्रों के नामांकन में गिरावट देखी गई है। जहां स्कूलों की संख्या 14.66 लाख से बढ़कर 14.71 लाख हो गई वहीं इनमें होने वाला छात्रों का नामांकन 25.17 करोड़ से घटकर 24.80 करोड़ हो गया। यह गिरावट कमोबेश सभी श्रेणियों यानी लड़के लड़कियां, ओबीसी, अल्पसंख्यक आदि में है। जहां तक शिक्षा के बीच में छात्रों के स्कूल छोड़ने के मामलों की बात है तो इसमें सेकंडरी स्तर में होने वाली बढ़ोतरी ज्यादा परेशान करने वाली है। मिडल स्कूलों में जो ड्रॉपआउट दर 5.2 प्रतिशत है, वह सेकंडरी स्टेज में आकर 10.9 प्रतिशत हो जाती है। इसके पीछे ओबीसी और एससी-एसटी श्रेणी के छात्रों को दाखिले के दौरान होने वाली जटिल प्रक्रिया, मुश्किलें और किसी अभावग्रस्त छात्र के लिए आर्थिक मदद या छात्रवृत्ति जैसी सुविधाओं की कमी का हाथ हो सकता है। छात्रों के नामांकन की घटती संख्या को जाति के आधार पर अगर देखें, तो अन्य पिछड़ा वर्ग

भारतीय परिदृश्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच एक बड़ी बाधा है। उचित बुनियादी ढांचे की कमी और शिक्षा के प्रति समाज के कई वर्गों में कम उत्साह के कारण भारत में शिक्षा के लक्ष्य पूरे नहीं हो पाते हैं। शिक्षा प्रणाली में कुछ चुनौतियाँ हैं जिनके कारण भारत इष्टतम विकास को पूरा करने में सक्षम नहीं है।

(ओबीसी) के छात्रों के नामांकन में 25 लाख से अधिक, अनुसूचित जाति (एससी) वर्ग के छात्रों में 12 लाख और अनुसूचित जनजाति (एसटी) वर्ग के छात्रों में दो लाख की गिरावट हुई है। नामांकन से वंचित हुए अल्पसंख्यक छात्रों की संख्या तीन लाख है, जबकि इनमें से एक तिहाई मुस्लिम हैं। भारत में नई पीढ़ी को यथोचित शिक्षा नहीं मिल पा रही है। शिक्षा से वंचित रहने के जो कारण हैं, उनमें सबसे बड़ा कारण गरीबी है। सरकारी स्तर पर सरकारों ने गरीब छात्रों के लिए अनेक इंतजाम किए हैं, पर इन इंतजामों का सभी छात्रों तक समान रूप से पहुंचना आसान नहीं है। निचले स्तर पर शिक्षकों और शिक्षा कर्मचारियों को जितना सजग होना चाहिए, उतना सजग वे नहीं हो पा रहे हैं। भारत जैसे देश में शिक्षा एक अभियान है, इसके लिए अगर नियोजित एवं उत्साहपूर्ण माहौल न बनाया जाए, तो गरीब व वंचित बच्चों तक शिक्षा को पहुंचाना चुनौतीपूर्ण है। कोई संदेह नहीं कि किसी भी अभियान में अगर समर्पित लोग आपके पास नहीं हैं, तो फिर उस अभियान की सफलता संदिग्ध हो जाती है। भारत में शिक्षा क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव की जरूरत है। यदि हमें सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करना है और सही दिशा में आगे बढ़ना है तो कई पहलुओं एवं मोर्चों पर काम करना आवश्यक है। हमारी आजादी के बाद से ही शिक्षा क्षेत्र में कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिन्होंने हमें दुनिया में एक विकसित राष्ट्र बनने से रोक दिया है। भारत में एक सभ्य शिक्षा प्रणाली के महत्व की जरूरत को समझते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में नयी शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। देश की शिक्षा प्रणाली को नया आकार दिया जा रहा है और शिक्षा से जुड़े कई बड़े बदलाव किए जा रहे हैं। प्रणाली को आधुनिक बनाने और व्यावसायिक प्रशिक्षण शुरू करने के प्रयास हो रहे हैं। बहरहाल, यह खुशी की बात है कि अब भारत के 91.7 प्रतिशत स्कूलों तक बिजली पहुंच चुकी है। अभियान चलाकर देश के बाकी बचे स्कूलों तक विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित होनी चाहिए। देश में 98 प्रतिशत से ज्यादा स्कूलों तक पेयजल सुविधा के साथ ही टॉयलेट की सुविधा पहुंच चुकी है। स्कूलों को संसाधन संपन्न बनाने के साथ ही शिक्षकों और पुस्तकों की गुणवत्ता एवं स्कूलों को संसाधन के स्तर पर भी बहुत मजबूत करने की जरूरत है। भारत के 60 प्रतिशत स्कूलों में भी कंप्यूटर उपलब्ध नहीं हैं और इंटरनेट की सुविधा वाले स्कूलों की संख्या 50 प्रतिशत से भी कम है। आज के समय में जब हमें बड़े पैमाने पर कुशल कामगारों की जरूरत पड़ेगी, तब किसी का कंप्यूटर शिक्षा से वंचित होना बहुत महंगा पड़ेगा। आज के समय में हर छात्र या हर नागरिक को कंप्यूटर और इंटरनेट का सामान्य ज्ञान होना ही चाहिए। कंप्यूटर आज के समय में विलासिता नहीं, बल्कि महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य जरूरत है। नया भारत बनाने के लिए शिक्षा का बहुत महत्व है। शिक्षा के जरिए ही देश का विकास होता है और समाज में सकारात्मक बदलाव आता है। हालांकि, कई स्कूल अभिभावकों और छात्रों को बनाए रखने और आकर्षित करने के लिए संघर्ष करते हैं। इन संघर्ष की स्थितियां का नियंत्रित होना जरूरी है। इसी से भारत दुनिया की तीसरी आर्थिक व्यवस्था एवं विश्व गुरु होने का दर्जा पा सकेगा। क्योंकि शिक्षा दृष्टि और दृष्टिकोण को बढ़ाती है, जिससे समाज में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा होती है। इससे उन्नत एवं चरित्रसम्पन्न नागरिकों का निर्माण होता है एवं देश विकास की ओर अग्रसर होता है। सामाजिक न्याय के क्षेत्र में प्रगति करने की इच्छा भी बढ़ती है, अन्याय, भ्रष्टाचार, हिंसा, असमानता और सांप्रदायिकता आदि से लड़ने की क्षमता बढ़ती है। शिक्षा एक ऐसे लोकतंत्र को सुनिश्चित करती है जिसमें एक सभ्य और सुसंस्कृत समाज शामिल हो। यह आर्थिक रूप से वंचित समूहों के उत्थान में भी मदद करता है और कई नौकरी और रोजगार के अवसरों का निर्माण सुनिश्चित करता है। एक सभ्य शिक्षा प्रणाली विचारों, ज्ञान और अच्छी प्रथाओं का शांतिपूर्ण आदान-प्रदान सुनिश्चित करती है। यह अपराध और आतंकवाद को कम करने में मदद करता है; इस प्रकार, कानून और व्यवस्था के मुद्दों को नियंत्रण में रखा जाता है। एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय और सांस्कृतिक मूल्यों को विकसित करने के साथ-साथ भाईचारे की भावना को बढ़ाने में मदद करती है। भारतीय परिदृश्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच एक बड़ी बाधा है। उचित बुनियादी ढांचे की कमी और शिक्षा के प्रति समाज के कई वर्गों में कम उत्साह के कारण भारत में शिक्षा के लक्ष्य पूरे नहीं हो पाते हैं। शिक्षा प्रणाली में कुछ चुनौतियाँ हैं जिनके कारण भारत इष्टतम विकास को पूरा करने में सक्षम नहीं है। भारत में शिक्षा के परिदृश्य को बेहतर बनाने एवं छात्रों के नामांकन को बढ़ाने के लिए उन नीतियों पर सख्ती से काम करने की आवश्यकता है जो भारत में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली सुनिश्चित करें। ■

क्यों भारत को चाहिए सैकड़ों डॉ. तितियाल और दर्जनों एम्स

अभी बीते कुछ दिन पहले सोशल मीडिया पर एक वीडियों बहुत वायरल हो रहा था, जिसमें अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के राजेन्द्र प्रसाद आई सेंटर के अध्यक्ष डॉ. जीवन सिंह तितियाल अपनी सरकारी सेवा से रिटायर होने के बाद अपने साथियों और रोगियों के साथ घिरे हुए हैं। उनकी आंखें नम है। दरअसल प्रख्यात नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. तितियाल नेत्र चिकित्सा में अपनी विशेषज्ञता और समर्पण भाव से अपने मरीजों की देखभाल के लिए जाने जाते रहे। वे लगभग साढ़े चार दशकों तक एम्स से जुड़े रहे। इस दौरान उन्होंने हजारों रोगियों का इलाज किया और वे लगभग इतने ही छात्रों के गुरु भी रहे। अगर एम्स को देश का सबसे बेहतर अस्पताल माना जाता है, तो उसे इस मुकाम पर लेकर जाने में डॉ. तितियाल जैसे डॉक्टरों का भी अहम रोल रहा है। डॉ. तितियाल के मार्गदर्शन में कई युवा नेत्र रोग विशेषज्ञों ने उच्च स्तर की सफलता हासिल की है।

डॉ. अशोक शर्मा

देखिए किसी भी सफल डॉक्टर को अपने क्षेत्र में हो रहे नए अनुसंधानों को लेकर अपडेट तो होना ही चाहिए। उन्हें नवीनतम चिकित्सा अनुसंधान, उपचार और तकनीकों के बारे में अच्छी तरह पता होना चाहिए। इस लिहाज से ड़ॉ तितियाल बेजोड़ रहे। डॉ. तितियाल सही ढंग से रोग का निदान करने और उपयुक्त उपचार योजना बनाने में भी सक्षम हैं। इसमें रोगी के लक्षणों, चिकित्सा इतिहास और परीक्षण परिणामों का विश्लेषण करना शामिल है। डॉक्टर को मरीजों को उनकी बीमारी और उपचार विकल्पों को स्पष्ट और सरल तरीके से समझाने में सक्षम होना चाहिए।

डॉ. तितियाल एम्स के मरीजों को ध्यान से सुनते थे और उनकी चिंताओं और सवालों को गहराई से समझते थे। उनसे मिलकर रोगी आश्वस्त महसूस करता था। वे सभी मरीजों के साथ सम्मान और गरिमा पूर्ण व्यवहार रखते थे, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो। डॉ. तितियाल मोतियाबिंद सर्जरी में विशेषज्ञ हैं, जिसमें फेकोइमल्सीफिकेशन और इंट्राओकुलर लेंस प्रत्यारोपण जैसी आधुनिक तकनीकें शामिल हैं। उन्होंने कई जटिल मोतियाबिंद सर्जरी सफलतापूर्वक की। वे कॉर्निया प्रत्यारोपण, टेरिगियम सर्जरी और अपवर्तक सर्जरी (जैसे लेसिक) में भी कुशल हैं। उनकी विशेषज्ञता कॉर्निया से संबंधित विभिन्न बीमारियों के इलाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। डॉ. तितियाल ग्लूकोमा के निदान और उपचार में भी अनुभवी हैं, जिसमें दवाओं, लेजर उपचार और सर्जरी का उपयोग शामिल है। इसके अलावा, वे सामान्य नेत्र रोगों जैसे कि कंजंक्टिवाइटिस, ड्राई आई सिंड्रोम, और अन्य नेत्र संक्रमणों का इलाज करने में भी सक्षम हैं। वे नेत्र विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान में भी सक्रिय रूप से शामिल हैं। उनके शोध प्रकाशन अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं, जो उनके वैज्ञानिक योगदान को दर्शाते हैं। वे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नेत्र विज्ञान सम्मेलनों में नियमित रूप से भाग लेते हैं और अपने ज्ञान और अनुभव को साझा करते हैं। डॉ. तितियाल अपने मरीजों के प्रति समर्पित हैं और उनकी हर समस्या को ध्यान से सुनते हैं। वे व्यक्तिगत देखभाल प्रदान करने में विश्वास रखते हैं।

वे मरीजों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते रहे। वे नवीनतम तकनीकों और उपचार विधियों का उपयोग करके मरीजों को सर्वोत्तम संभव देखभाल प्रदान करते रहे। उम्मीद करनी चाहिए कि वे आगे भी अपनी सेवाएं देते रहेंगे। डॉ. तितियाल ने जटिल मोतियाबिंद के मामलों के प्रबंधन पर भी महत्वपूर्ण शोध किया है, जैसे कि वे मामले जिनमें पुतली सिकुड़ी हुई है या लेंस का विस्थापन हुआ है। उनके शोध ने ऐसे रोगियों के लिए बेहतर उपचार विकल्प प्रदान किए हैं। डॉ. तितियाल ने ग्लूकोमा के शुरुआती निदान के लिए नई तकनीकों का अध्ययन किया है।

उन्होंने ऑप्टिकल कोहेरेंस टोमोग्राफी (OCT) और अन्य इमेजिंग तकनीकों का उपयोग करके ग्लूकोमा से प्रभावित तंत्रिका फाइबर परत में होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों का अध्ययन किया है। उन्होंने ग्लूकोमा के इलाज के लिए नए चिकित्सीय तरीकों की खोज में भी योगदान दिया है। उनके शोध में विभिन्न प्रकार की दवाइयों और शल्य चिकित्सा विकल्पों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया गया है। उन्होंने ग्लूकोमा की प्रगति की निगरानी के लिए नए तरीकों का अध्ययन किया है। उनके शोध से चिकित्सकों को ग्लूकोमा के रोगियों में दृष्टि हानि को रोकने में मदद मिली है। डॉ. तितियाल ने कॉर्निया प्रत्यारोपण में उपयोग की जाने वाली नवीन तकनीकों का विकास किया है। उन्होंने एंडोथेलियल केराटोप्लास्टी जैसी तकनीकों का अध्ययन किया है, जो कॉर्निया प्रत्यारोपण के बाद जटिलताओं को कम करने में मदद करती हैं। उन्होंने सूखी आंख के कारणों और उपचार पर भी शोध किया है। उनके शोध ने सूखी आंख से पीड़ित रोगियों के लिए बेहतर उपचार विकल्प प्रदान किए हैं। डॉ. तितियाल ने कॉर्नियल संक्रमणों के प्रबंधन पर भी शोध किया है। उनके शोध ने इन संक्रमणों के लिए प्रभावी एंटीबायोटिक दवाओं और अन्य उपचारों की पहचान करने में मदद की है। डॉ. तितियाल का शोध नेत्र विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण रहा है। उनके शोध ने मोतियाबिंद सर्जरी को अधिक सुरक्षित और प्रभावी बनाने में मदद की है, ग्लूकोमा के शुरुआती निदान और उपचार को बेहतर बनाया है, और कॉर्नियल बीमारियों के इलाज के लिए नए विकल्प प्रदान किए हैं। उन्होंने रेटिना रोगों के प्रबंधन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

डॉ. तितियाल की तरह एम्स से ना जाने कितने डॉक्टर

एमबीबीएस, एमएस,एमडी वगैरह करने के बाद दुनिया के सर्वश्रेष्ठ डॉक्टर के रूप में स्थापित हुए। एम्स अपने यहां पढ़े विद्यार्थियों को लगातार शोध करने और मानवीय बने रहने के लिए प्रशिक्षित करता है। यहां के डॉक्टरों में मानव सेवा का गजब का जज्बा देखने को मिलता है। विश्व विख्यात लेखक और मोटिवेशन गुरु डॉ.दीपक चोपड़ा, शिकागो यूनिवर्सिटी के पैथोलिजी विभाग के प्रोफेसर डॉ. विनय कुमार, गंगा राम अस्पताल के मशहूर लीवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. अरविंदर सिंह सोईन, एम्स के मौजूदा डायरेक्टर डॉ.रणदीप गुलेरिया, ईएनटी विशेषज्ञ डॉ.रमेश डेका, डॉ. पी.वेणुगोपाल, डॉ. सिद्धार्थ तानचुंग, यूरोलोजिस्ट डॉ. राजीव सूद जैसे सैकड़ों चोटी के डॉक्टरों ने एम्स में ही शिक्षा ग्रहण की और फिर इधर सेवाएं भी दीं। डॉ. राजीव सूद ने कुछ सालों तक एम्स में सेवा देने के बाद राजधानी के राममनोहर लोहिया अस्पताल (आरएमएल) को ज्वाइन किया और फिर इसके डीन भी रहे। वे कहते हैं कि एम्स की तासीर में सेवा है। जो एक बार एम्स रह लिया वह फिर मानव सेवा के प्रति समर्पित रहेगा। इधर डॉ. जीवन सिंह तितियाल के अलावा प्रोफेसर प्रदीप वेंकटेश, प्रोफेसर तरुण दादा, प्रोफेसर विनोद अग्रवाल जैसे बेहतरीन नेत्र चिकित्सक हैं। इन्हें आप संसार के सबसे कुशल डॉक्टरों की श्रेणी में रख सकते हैं। इन सब डॉक्टरों की देखरेख में देश के नए डाक्टर तैयार होते हैं। आपको एम्स में देश के कोने-कोने से आए हजारों रोगियों का इलाज होता मिलेगा। यहां पर भिखारी से लेकर भारत सरकार का बड़ा बाबू भी लाइन में मिलेगा। एम्स के डॉक्टर किसी के साथ उनके पद या आर्थिक आधार पर भेदभाव नहीं करते। यहां पर सुबह-शाम रोगियों का आना -जाना इस बात की गवाही है कि देश को एम्स पर भरोसा है।

एम्स भारत की पहली स्वास्थ्य मंत्री और गांधी जी की सहयोगी राजकुमारी अमृत कौर के विजन का नतीजा है। जिस निष्ठा और निस्वार्थ भाव से एम्स के डॉक्टर रोगियों को देखते हैं, उससे समझ आ जाता है कि ये सामान्य अस्पताल तो नहीं है। भारत को अभी बहुत सारे एम्स और डॉ. तितियाल जैसे डॉक्टर चाहिए। ■

पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में

बीमारियों का कारगर उपचार ढूंढा जाये शोधों को बढ़ाकर

सुप्रीम कोर्ट में पिछले दिनों एक याचिका दाखिल कर प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना में पारंपरिक चिकित्सा पद्धति को शामिल करने की मांग की गई है । यह बिल्कुल ठीक ही है कि ऐसा करने से देश की एक बड़ी आबादी को सस्ती और असरदार स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ आसानी से मिल सकेगा। साथ ही, पारंपरिक चिकित्सा को भी पर्याप्त बढ़ावा मिलेगा और वे पहले की भाँति फिर से लोकप्रिय हो सकेंगी।

डॉ. रामनरेश शर्मा

सुप्रीम कोर्ट ने इस याचिका पर केंद्र सरकार से जवाब मांगा है। हालांकि यह मामला ऐसा नहीं है, जिस पर सरकार को फैसला लेने में बहुत दिक्कत हो। पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ, जैसे आयुर्वेद, यूनानी, होम्योपैथी इत्यादि, गरीब जनता के लिए कई मायनों में वरदान रही हैं और सरकारी संरक्षण प्राप्त होने पर और भी लोकप्रिय साबित हो सकती हैं। पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में आमतौर पर आधुनिक चिकित्सा की तुलना में उपचार की लागत काफी ज्यादा कम होती है। यह गरीब लोगों के लिए, जो महंगे अस्पताल और दवाओं का खर्च वहन नहीं कर सकते , उनके लिए बहुत लाभकारी होती हैं।

ब्रिटेन के किंग चार्ल्स पिछले दिनों एक निजी यात्रा पर भारत आए हुए थे। उनके साथ उनकी पत्नी क्वीन कैमिला भी थीं। वे बेंगलुरु के पास एक आधुनिक आरोग्यशाला होलिस्टिक हेल्थ सेंटर में ठहरे। तीन दिन की यात्रा के दौरान किंग चार्ल्स और क्वीन कैमिला ने योग, मेडिटेशन सेशन और योग थेरेपी का भरपूर आनंद उठाया। यानी सामान्य रोगियों से लेकर ब्रिटेन के किंग को भी अब समझ में आ गया है कि सेहतमंद रहने और स्मार्ट दिखने के लिए भारत के आधुनिक डॉक्टरों और परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों से इलाज करवाना कहीं ज़्यादा सही रहेगा।

पारंपरिक चिकित्सक अक्सर ग्रामीण और दूर-दराज के इलाकों में भी आसानी से उपलब्ध होते हैं, जहाँ आधुनिक चिकित्सा सुविधाएँ कुछ ही मल्टी स्पेशलिटी अस्पतालों तक ही सीमित होती हैं। अत: यह पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियां ग्रामीण गरीबों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं और इनमें गरीब ग्रामीणों का अटूट विश्वास भी है। ज्यादातर पारंपरिक उपचार स्थानीय रूप से उपलब्ध जड़ी-बूटियों और अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर ही आधारित होते हैं, जिसकी लागत कम होती है। एक खास बात यह भी है कि ये पारंपरिक स्वास्थ्य पद्धतियाँ अक्सर शरीर और मन दोनों को एक साथ स्वस्थ रखने पर ध्यान केंद्रित करती हैं, जो आधुनिक चिकित्सा की तुलना में अधिक समग्र दृष्टिकोण है। यह जीवनशैली संबंधी बीमारियों की रोकथाम में अत्यंत कारगर मदद कर सकती हैं। हालांकि कुछ पारंपरिक उपचारों की प्रभावशीलता के लिए पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाणों का अभाव गिना दिया जाता है क्योंकि आधुनिक वैज्ञानिक रूप से स्वीकार्य प्रयोगों पर आधारित साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं। सरकार को चाहिये कि आधुनिक प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिक शोध के आधार पर इनके कारगर परिणाम के साक्ष्य उपलब्ध करवाए। इससे रोगियों की सुरक्षा और उपचार की गुणवत्ता वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सिद्ध और स्थापित हो सकेगी, नहीं तो पारम्परिक सिद्ध चिकित्सा पद्धतियों पर सवाल उठते ही रहेंगे। पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों से जुड़े लोगों को और भारत सरकार के आयुष मंत्रालय को इस तरफ ध्यान देने की जरूरत तो है। इनमें गहन शोध तो होना ही चाहिए। यह भी मानना होगा कि पारंपरिक चिकित्सा व्यवसाय का नियमन और गुणवत्ता नियंत्रण अक्सर अपर्याप्त होता है। सरकार को इस तरफ भी देखना होगा। इनके कुछ चिकित्सक ऐसे दावे करते हैं जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता है, जिससे रोगियों को भ्रमित किया जा सकता है और उनका स्वास्थ्य जोखिम में पड़ सकता है। अत: आयुष मंत्रालय को वैज्ञानिक अनुसंधान के आधार पर इन दावों की प्रमाणिकता या तो सिद्ध करनी होगी या फिर ख़ारिज करना होगा। खैर, ये पद्धतियाँ जनता के लिए वरदान तो हो ही सकती हैं, खासकर जब वे आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकृत हों और उचित नियमन और गुणवत्ता नियंत्रण के साथ संचालित हों। हालांकि, इन पद्धतियों की सीमाओं और चुनौतियों को भी स्वीकार करना और उनका समाधान करना महत्वपूर्ण है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह उपचार पद्धति भी वैज्ञानिक रूप से प्रमाणिक है। भारत अपनी विविधता और समृद्ध इतिहास के लिए जाना जाता है, जिसमें अनेकों पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ हजारों वर्षों से चली आ रही हैं। आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्धा, होमियोपैथी और अनेक अन्य प्रणालियाँ सदियों से भारतीय समाज के स्वास्थ्य और कल्याण का एक अभिन्न अंग रही हैं। आज, जब आधुनिक चिकित्सा पद्धति तेजी से आगे बढ़ रही है, तब भी पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों का महत्व कम नहीं हुआ है, बल्कि यह और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। विश्व भर से प्रतिवर्ष हजारों अत्यंत पढ़े-लिखे और समृद्ध लोग आखिर भारत आकर इन चिकित्सा पद्धतियों पर लाखों खर्च क्यों करते हैं। वे सभी पागल तो हैं नहीं। उन्हें निश्चित रूप से लाभ मिल रहा है तभी तो वे यहाँ आकर महीनों रहकर, लाखों खर्चकर स्वस्थ होकर वापस जा रहे हैं। भारत में स्वास्थ्य सेवा का वितरण असमान है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में। आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं तक पहुँच सीमित होने के कारण, पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ स्वास्थ्य सेवा की पहुँच को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये पद्धतियाँ स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करती हैं और अक्सर कम खर्चीली होती हैं, जिससे वे आम लोगों के लिए अधिक सुलभ होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग अक्सर इन पद्धतियों पर ही निर्भर रहते हैं, क्योंकि ये उनके सांस्कृतिक परिवेश और आर्थिक स्थिति के अनुकूल हैं। पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ केवल बीमारियों के इलाज पर ही केंद्रित नहीं हैं, बल्कि रोगों की रोकथाम पर भी जोर देती हैं। आयुर्वेद और योग जैसे पद्धतियाँ जीवनशैली में बदलाव, आहार और व्यायाम के माध्यम से स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देने पर केंद्रित हैं, जिससे कई गंभीर बीमारियों से बचा जा सकता है। ये पद्धतियाँ शरीर और मन के बीच संबंध को समझती हैं और समग्र स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करती हैं। पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ प्रकृति से प्राप्त जड़ी-बूटियों और अन्य प्राकृतिक उपचारों का व्यापक उपयोग करती हैं। ये उपचार अक्सर कम साइड इफेक्ट वाले होते हैं और आधुनिक दवाओं की तुलना में शरीर पर कम हानिकारक प्रभाव डालते हैं। भारत की जैव विविधता ने सदियों से पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को पोषित किया है और इन पद्धतियों को अद्वितीय उपचार विकसित करने का अवसर प्रदान किया है। इन चिकित्सा पद्धतियाँ भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये पद्धतियाँ सदियों से भारतीय समाज के जीवन में अंतर्निहित हैं और लोगों के स्वास्थ्य के प्रति दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन पद्धतियों को अपनाने से न केवल शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होता है, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण में भी वृद्धि होती है। आयुर्वेद और योग जैसे पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों ने विश्व स्तर पर लोकप्रियता हासिल की है। इनकी मांग बढ़ने से भारत के लिए आर्थिक अवसर भी पैदा हुए हैं। पारंपरिक चिकित्सा से संबंधित उद्योगों का विकास भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और रोजगार के अवसर पैदा करने में योगदान दे सकता है। हालांकि, इन पद्धतियों को आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है। यह महत्वपूर्ण है कि इन पद्धतियों का वैज्ञानिक सत्यापन किया जाए और उनकी प्रभावशीलता को सुनिश्चित किया जाए। साथ ही, इन पद्धतियों के व्यावसायीकरण को नियंत्रित करने और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए उचित विनियमन की भी आवश्यकता है। एक बात फिर दोहराना चाहता हूं कि आयुर्वेद, होम्योपैथी, यूनानी, आदि पद्धतियों से जुड़े विद्वानों को अपने अनुसंधान को और गहना करना होगा। वैज्ञानिक पद्धति से किए गए शोध इन पद्धतियों के लाभों, कार्यप्रणाली और सीमाओं को स्पष्ट कर सकते हैं। इससे न केवल इन पद्धतियों की विश्वसनीयता बढ़ेगी, बल्कि अविश्वसनीय दावों से भी बचा जा सकेगा। पारंपरिक पद्धतियों में पाए जाने वाले औषधीय पौधों और पदार्थों का आधुनिक विज्ञान के द्वारा गहन अध्ययन किया जा सकता है। इससे नई दवाओं और उपचारों का विकास संभव हो सकता है, जो कई बीमारियों के लिए प्रभावी इलाज मुहैया करा सकते हैं। बेशक, पारंपरिक औषधियों की सुरक्षा और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए कठोर शोध आवश्यक है। पारंपरिक पद्धतियाँ अक्सर व्यक्ति-विशिष्ट उपचार पर जोर देती हैं। शोध से यह पता चल सकता है कि किस प्रकार के रोगियों के लिए कौन सी पद्धति अधिक प्रभावी है और व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार उपचार को कैसे अनुकूलित किया जा सकता है। ■

बेशक, पारंपरिक औषधियों की सुरक्षा और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए कठोर शोध आवश्यक है। पारंपरिक पद्धतियाँ अक्सर व्यक्ति-विशिष्ट उपचार पर जोर देती हैं। शोध से यह पता चल सकता है कि किस प्रकार के रोगियों के लिए कौन सी पद्धति अधिक प्रभावी है और व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार उपचार को कैसे अनुकूलित किया जा सकता है।

कोई बताए तो सही कि क्या कमी है 'एक देश एक चुनाव' में

ब्रजेश शर्मा

एक देश एक चुनाव के सपने को साकार करने की तरफ देश बढ़ रहा है। बेशक, लगातार चुनाव देश की प्रगति में बाधा बन रहे हैं। भारत में एक देश-एक चुनाव का विचार एक ऐसा विषय है जिस पर अलग-अलग लोगों की अलग-अलग राय है। कुछ लोगों का मानना है कि इससे देश को कई फायदे होंगे, वहीं कुछ लोग इसके कुछ नुकसान भी बताते हैं। पर ये सच है कि बार-बार चुनाव कराने में काफी पैसा खर्च होता है। एक साथ चुनाव कराने से इस खर्च को काफी हद तक कम किया जा सके। चुनावों में सरकारी कर्मचारियों और सुरक्षा बलों की भारी संख्या में तैनाती करनी पड़ती है। जाहिर है, बार-बार चुनाव होने से कामकाज में बाधा तो आती ही है साथ ही संसाधनों का भारी दुरुपयोग भी होता है। एक साथ चुनाव कराने से इस समस्या को दूर काफी हद तक कम किया जा सकता है। पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली समिति की सिफारिशों के बाद सरकार एक देश- एक चुनाव की तरफ तेजी से बढ़ रही है। इससे लोकसभा, विधानसभा, नगर निकाय और पंचायत चुनाव सभी एक साथ होंगे। यह सब 100 दिनों के अंदर ही संपन्न होगा। सरकार का मानना है कि इससे देश की जीडीपी में 1-1.5 प्रतिशत की वृद्धि होगी। केंद्र सरकार इस मुद्दे पर आम सहमति बनाना चाहती है। यह मामला किसी एक दल का नहीं, बल्कि पूरे देश के हित में है। यह सबको पता है कि देश में बार-बार चुनाव होने से जनता और सरकारी अधिकारियों का समय और संसाधन बर्बाद होता है। एक साथ चुनाव कराने से यह सब नहीं होगा। एक साथ चुनाव होने से राजनीतिक स्थिरता में सुधार आएगा, क्योंकि सरकार को बार-बार चुनावों की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। इसके साथ ही एक साथ चुनाव होने से प्रशासन पर दबाव कम होगा और वे अपने काम पर अधिक ध्यान केंद्रित कर पाएंगे। तो आप कह सकते हैं कि एक देश, एक चुनाव से कई मसलों का हल हो जाएगा। चुनावों की अवधि कम हो जाने से, शासन और विकास कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित किया जा सकेगा। एक देश, एक चुनाव भाजपा और नरेंद्र मोदी का पुराना एजेंडा है। प्रधानमंत्री बनने के बाद से ही मोदी जी इसकी वकालत करते रहे हैं। अपने दूसरे कार्यकाल में 2 सितंबर 2023 को कोविंद कमिटी बना कर उन्होंने पहला कदम बढ़ाया था। निश्चित रूप से बार-बार चुनाव होने से सरकारें नई नीतियों और योजनाओं को लागू करने में झिझकती हैं। एक साथ चुनाव होने से सरकारों को स्थिरता मिलती है और वे बेहतर ढंग से काम कर पाती हैं। एक बात और कि बार-बार चुनाव होने से राजनीतिक दल विकास के मुद्दों से भटक जाते हैं और चुनाव जीतने पर ही ध्यान केंद्रित करते हैं। एक साथ चुनाव होने से राजनीतिक दलों को विकास पर ध्यान केंद्रित करने का अधिक अवसर मिलता है। एक देश-एक चुनाव के विपक्ष में तर्क में कुछ पिलपिले तर्क आ रहे हैं। जैसे कि राष्ट्रीय चुनावों के साथ-साथ राज्यों के चुनाव होने से क्षेत्रीय दलों को राष्ट्रीय दलों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में कठिनाई हो सकती है। कुछ लोगों का मानना है कि एक साथ चुनाव कराने से लोकतंत्र कमजोर हो सकता है क्योंकि इससे राष्ट्रीय स्तर पर एक ही राजनीतिक दल का दबदबा हो सकता है। यह सब तर्क कमजोर हैं। दुनिया के कई देशों में अलग-अलग चुनाव व्यवस्थाएं हैं। कुछ देशों में एक साथ चुनाव होते हैं, जबकि कुछ देशों में अलग-अलग समय पर चुनाव होते हैं। स्वीडन, बेल्जियम और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में राष्ट्रीय और स्थानीय चुनाव एक साथ कराए जाते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में राष्ट्रीय और स्थानीय चुनाव अलग-अलग समय पर होते हैं। बहरहाल, एक देश-एक चुनाव से देश के आम जनमानस में राष्ट्र की अवधारणा सशक्त होगी। भारत में साल 1967 तक लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के लिए चुनाव एक साथ ही होते थे। साल 1947 में आजादी के बाद भारत में नए संविधान के तहत देश में पहला आम चुनाव साल 1952 में हुआ था। उस समय राज्य विधानसभाओं के लिए भी चुनाव साथ ही कराए गए थे, क्योंकि आजादी के बाद विधानसभा के लिए भी पहली बार चुनाव हो रहे थे। उसके बाद साल 1957, 1962 और 1967 में भी लोकसभा और विधानसभा के चुनाव साथ ही हुए थे। यह सिलसिला पहली बार उस वक्त टूटा था जब केरल में साल 1957 के चुनाव में ईएमएस नंबूदरीबाद की वामपंथी सरकार बनी। साल 1967 के बाद कुछ राज्यों की विधानसभा जल्दी भंग हो गई और वहां राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया, इसके अलावा साल 1972 में होनेवाले लोकसभा चुनाव भी समय से पहले कराए गए थे। साल 1967 के चुनावों में कांग्रेस को कई राज्यों में विधानसभा चुनावों में हार का सामना करना पड़ा था। बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, पश्चिम बंगाल और ओडिशा जैसे कई राज्यों में विरोधी दलों या गठबंधन की सरकार बनी थी। इनमें से कई सरकारें अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाईं और विधानसभा समय से पहले भंग हो गई थी। यह भी माना जा रहा है कि एक साथ चुनाव होने से मतदाता भागीदारी में वृद्धि हो सकती है क्योंकि लोगों को बार-बार मतदान करने की आवश्यकता नहीं होगी। कुल मिलाकर बात यह है कि एक देश एक चुनाव को दलगत आधार पर नहीं देखा जाना चाहिए। इस पर हर स्तर पर खुल कर ईमानदारी से चर्चा होनी चाहिए। उसके बाद ही किसी अंतिम निर्णय पर पहुंचा जाना चाहिए। अगर इसे भाजपा या मोदी जी के किसी एंजेडे के रूप में देखा गया तो यह सही नहीं होगा। अभी तक जो विपक्षी नेता एक देश एक चुनाव के विचार का विरोध कर रहे हैं, उन्हें अपने दिल पर हाथ रखकर पूछना चाहिए कि क्या उन्हें बार-बार चुनावी रणभूमि में उतरना पसंद है? ■

ADVANCE GROUP OF GLASS INDUSTRIES

MANUFACTURERS AND EXPORTERS

*Handicraft Glass Art Wares *Lead Glass Tubing *Soda Lime Glass Tubing *Fancy Glass Tumblers & Giftware Items* Glass Lanterns Chimneys *Glass Inner For Vacuum Flasks *Table Wares * Glass Bangles *Liquor Bottles *Perfume Bottles *Biological Equipments *Thermo Ware Items *GLS Lamp Shells

With Best Compliments For

PRADEEP KUMAR GUPTA

CHAIRMAN

ASSOCIATE CONCERNS

* ADVANCE GLASS WORKS
* ORIENTAL GLASS WORKS
* OM GLASS WORKS PRIVATE LIMITED
* MODERN GLASS INDUSTRIES
* ADARSH KANCH UDHYOG PRIVATE LIMITED
* ADVANCE LAMP COMPONENT & TABLE WARES PRIVATE LIMITED
* GREEN ORCHID

HEAD OFFICE
105, Hanuman Ganj, Firozabad- 283203 (Uttar Pradesh) INDIA
TEL: +91 5612 221796, MOB: +91 9837 082 127, 9897 012 063
email: info@advanceglassworks.com
omglassworkspvtltd@gmail.com
website: www.advanceglass.in

बीजेपी का 'कमल' या केजरीवाल का विजय रथ

दिल्ली में कौन होगा जीत का हकदार

दिल्ली का सियासी दंगल सज गया है। बस चुनाव की तारीख की घोषणा होना बाकी रह गया है। इस बार भी इंडिया गठबंधन का हिस्सा होने के बाद भी कांग्रेस और आम आदमी पार्टी अलग-अलग चुनाव लड़ रहे हैं। वहीं बीजेपी भी पूरे दमखम से मैदान में डटी है तो पीछे यूपी में मजबूत पकड़ रखने वाली समाजवादी पार्टी और बसपा भी नहीं हैं। दिल्ली विधानसभा चुनाव में जहां आम आदमी पार्टी के सामने अपनी 11 साल पुरानी सरकार को बचाये रखने की चुनौती है तो बीजेपी कम बैक करना चाहती है। मगर वह बिना सेनापति यानी मुख्यमंत्री के चेहरे के मैदान में ताल ठोक रही है, इसका उसे कितना फायदा या नुकसान होगा यह नतीजे आने के बाद पता चलेगा। वहीं कभी दिल्ली पर दबदबा बनाने रखने वाली कांग्रेस चुनाव के मैदान में तो हैं लेकिन सत्ता में उसकी वापसी हो, इसके लिये उसके पास शीला दीक्षित जैसा कोई चेहरा नजर नहीं नजर आ रहा हैं।

राजेश कुमार

गौरतलब हो, केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली में विधानसभा बहाल होने के बाद 1993 में पहली बार विधानसभा चुनाव हुए थे। उसके बाद से राजधानी में सात बार विधानसभा चुनाव हुए हैं। बीजेपी महज एक बार साल 1993 में ही जीत दर्ज करने में कामयाब रही थी। 1998 में उसके हाथों से सत्ता गई तो फिर वापसी नहीं हुई। ऐसे में सवाल उठता है कि दिल्ली का दिल बीजेपी क्यों नहीं जीत पाती है और 2025 में क्या सियासी ग्रहण को दूर कर पाएगी। बीजेपी पिछले 26 साल से दिल्ली में सत्ता का वनवास झेल रही है। 15 साल तक शीला दीक्षित की अगुवाई में कांग्रेस के सामने खड़ी नहीं हो सकी। थी तो उसके बाद अरविंद केजरीवाल की चुनौती से बीजेपी कभी पार नहीं पा पाई। शीला दीक्षित के बाद से 11 साल से आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल के आगे बीजेपी लीडरशिप पस्त नजर आई है। अब नव वर्ष के आगाज के साथ ही फिर से दिल्ली विधानसभा चुनाव की सियासी तपिश बढ़ गई है। बीजेपी 2025 में होने वाले विधानसभा में हर हाल में दिल्ली में कमल खिलाना चाहती है, जिसके लिए पूरी ताकत झोंक रखी है। इसके बाद भी बीजेपी के लिए दिल्ली के सत्ता की राह आसान नहीं है। मोदी-शाह की जोड़ी 2014 लोकसभा चुनाव के बाद से बीजेपी के लिए जीत हासिल करने की गांरटी बन गई थी। ऐसे में देखते ही देखते देश के एक के बाद एक राज्यों में बीजेपी अपनी जीत का परचम फहराती रही। उत्तर से दक्षिण और पश्चिम से पूर्वोत्तर राज्यों तक बीजेपी की जीत का डंका बजने लगा। बीजेपी की जीत का श्रेय नरेंद्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी को दिया गया लेकिन केंद्र सरकार के नाक के नीचे दिल्ली में 2015 और 2020 में दो बार चुनाव हुए। इन दोनों ही चुनावों में मोदी-शाह की जोड़ी केजरीवाल के सामने अपना असर नहीं दिखा सकी। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह क्या है, जिसके चलते बीजेपी दिल्ली की जंग फतह नहीं पा रही? दिल्ली के सियासी मिजाज को बीजेपी समझ नहीं पा रही है। देश के दूसरे राज्यों के फॉर्मूले पर दिल्ली के विधानसभा चुनाव नहीं जीता जा सकता है। दिल्ली जाति और धर्म की सियासत को कभी तवज्जो नहीं नहीं देती है। इसके अलावा दिल्ली के लोग नकारात्मक चुनाव प्रचार को अहमियत नहीं देते, क्योंकि दिल्ली में एक बड़ा तबका कारोबारियों का है। दिल्ली में तीन तरह के चुनाव होते हैं और तीनों में वोटिंग पैटर्न अलग-अलग हैं। लोकसभा चुनाव में दिल्ली की पसंद बीजेपी रही तो विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी। पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के दौर में भी ऐसा ही था, जब विधानसभा में कांग्रेस को कामयाबी मिली थी तो लोकसभा में बीजेपी को। एमसीडी चुनाव में पहले बीजेपी का कब्जा रहा, लेकिन अब आम आदमी पार्टी का है। दिल्ली के चुनाव में पार्टी से ज्यादा नेता का व्यक्तित्व मायने रखता है। साल 1993 में बीजेपी ने मदन लाल खुरना को आगे कर सत्ता हासिल की थी, लेकिन सिर्फ पांच साल के दौरान बीजेपी को तीन बार सीएम बदलना पड़ा। नतीजा यह हुआ कि दिल्ली की जनता के बीच बीजेपी की तरफ से गलत राजनीतिक संदेश गया और इसका खामियाजा उसे 1998 के चुनाव में भुगतना पड़ा। इसके बाद से बीजेपी दिल्ली की सियासत में अपना कोई ऐसा नेता खड़ी नहीं कर सकी, जो शीला दीक्षित और अरविंद केजरीवाल के सामने चुनौती पेश कर सके। 1998 के चुनाव में कांग्रेस को जीत दिलाने वाली शीला दीक्षित 15 साल तक दिल्ली की मुख्यमंत्री रहीं। शीला दीक्षित ने खुद को कांग्रेस पार्टी के सामनांतर खड़ा किया था। दिल्ली में उन्होंने विकास का अपना एक मॉडल बनाया, जिसके दम पर वो 1998 से 2013 तक एकक्षत्र राज करती रहीं। बीजेपी इन 15 सालों तक कांग्रेस को चुनौती नहीं दे सकी और न ही कभी भी शीला के कद का कोई अन्य नेता उनके सामने खड़ा नहीं कर पाई। इसके बाद 2013 में अन्ना आंदोलन से निकले अरविंद केजरीवाल ने पहली बाजी जीतने के बाद ऐसा खूंटा गाड़ा कि उसे बीजेपी नहीं उखाड़ सकी। केजरीवाल के सामने बीजेपी ने कई प्रयोग किए, लेकिन चुनौती नहीं खड़ी कर सकी। केंद्र की सत्ता पर काबिज रहने वाली पार्टी दिल्ली की सियासत को वैसे ही डील करती है। कांग्रेस और बीजेपी अपने किसी भी नेता को दिल्ली में बहुत ज्यादा स्पेस नहीं देती। दिल्ली में किसी खास नेता को स्पेस देने का मतलब है उसकी राजनीतिक हैसियत को बढ़ाना और कोई भी राष्ट्रीय पार्टी ऐसा करना नहीं चाहती। पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने भी खुद को पार्टी के अंदर स्थापित किया था। उन्हें पार्टी की तरफ से कोई बढ़ावा नहीं मिला। ठीक उसी तरह बीजेपी भी दिल्ली के नेताओं को बहुत ज्यादा अहमियत नहीं देती। यही वजह है कि वो केजरीवाल के सामने कोई मजबूत चेहरा नहीं उतार सकी। ■

> **दिल्ली में किसी खास नेता को स्पेस देने का मतलब है उसकी राजनीतिक हैसियत को बढ़ाना और कोई भी राष्ट्रीय पार्टी ऐसा करना नहीं चाहती। पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने भी खुद को पार्टी के अंदर स्थापित किया था। उन्हें पार्टी की तरफ से कोई बढ़ावा नहीं मिला। ठीक उसी तरह बीजेपी भी दिल्ली के नेताओं को बहुत ज्यादा अहमियत नहीं देती। यही वजह है कि वो केजरीवाल के सामने कोई मजबूत चेहरा नहीं उतार सकी।**

सबसे बेहतर, विशिष्ट व पूर्णतः

वैज्ञानिक है भारतीय कालगणना

वर्तमान में संसार के अधिकांश देश के लोग नववर्ष की शुरुआत आंग्ल कैलेंडर के अनुसार प्रथम जनवरी से करते हैं। प्रथम जनवरी को मनाया जाने वाला यह नववर्ष ग्रेगोरियन कैलेंडर पर आधारित है। आंग्ल कैलेंडर में समय का विभाजन वर्ष, मास व दिन का आधार पृथ्वी और चंद्र की गति के आधार पर किया जाता है। सौर वर्ष और चंद्रमास का तालमेल नहीं होने के कारण आरंभ में अनेक देशों में समय व पर्व-त्योहारों के निर्धारण में गड़बड़ी होती रही। समय का विभाजन ऐतिहासिक घटना के आधार पर करने का भी चलन है।

अशोक प्रवृद्ध

ईसाई मत के अनुसार ईसा का जन्म इतिहास की एक निर्णायक घटना है, इस आधार पर इतिहास को दो हिस्सों में विभाजित किया जाता है- बी.सी. तथा ए.डी.। बी सी का अर्थ है- बीफोर क्राईस्ट अर्थात ईसा के पूर्व। यह ईसा के उत्पन्न होने से पहले की घटनाओं पर लागू होता है। ईसा के जन्म की बाद की घटनाओं को ए. डी. कहा जाता है, जिसका अर्थ है - अन्नों डोमिनी अर्थात इन द ईयर ऑफ आवर लॉर्ड। लेकिन विचित्र बात यह है कि यह पद्धति ईसा के जन्म के बाद कुछ सदी तक प्रयोग में नहीं आती थी। वर्तमान के ईस्वी सन का मूल रोमन संवत है, जो ईसा के जन्म से 753 वर्ष पूर्व रोम नगर की स्थापना के साथ प्रारंभ हुआ। प्रारंभ में इसमें दस माह का वर्ष होता था, जो मार्च से दिसम्बर तक चलता था तथा 304 दिन होते थे। सबसे पहले रोम के राजा नूमा पोंपिलस के द्वारा रोमन कैलेंडर में बदलाव किया गया था। इसके बाद रोमन कैलेंडर में वर्ष का प्रथम महीना जनवरी को माना गया। जबकि पूर्व में मार्च को वर्ष का प्रथम महीना माना जाता था। इसके बाद रोम में आए एक शासक जूलियस सीजर ने 47 ईसा पूर्व में रोमन कैलेंडर में फिर बदलाव करवाया और इसमें अपने नाम के आधार पर जुलाई माह जुड़वाया। और एक वर्ष में 12 महीने करवाए।

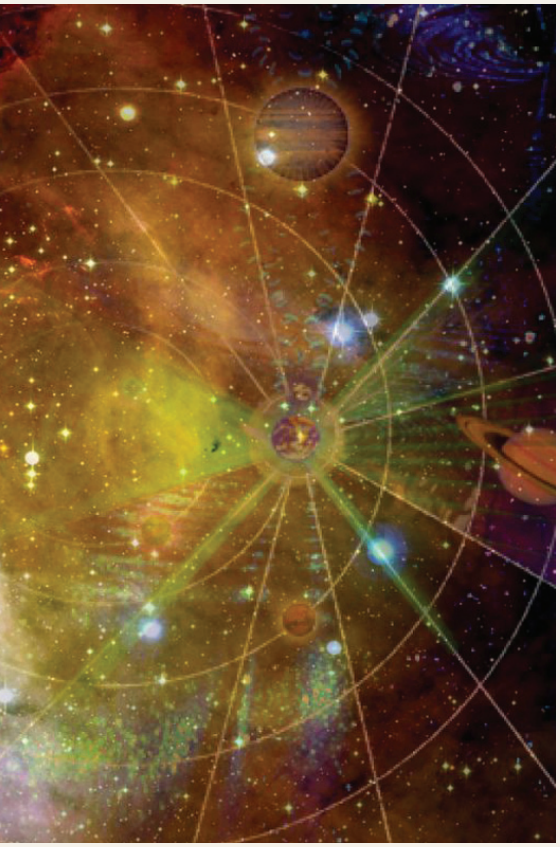

उसके भतीजे आगुस्तुस के नाम के आधार पर इसमें अगस्त माह जोड़ा गया। सीजर ने खगोलविदों के सलाह पर पृथ्वी के 365 दिन और छह घंटे में सूर्य का एक चक्कर लगाने के कारण वर्ष में 365 दिन का कैलेंडर बनवाया। वर्तमान में दुनिया भर में प्रचलित कैलेंडर को पोप ग्रेगोरी अष्टम ने 1582 में तैयार किया था। ग्रेगोरी ने इसमें लीप ईयर का प्रावधान किया था। ईसाइयों का एक अन्य पंथ ईस्टर्न आर्थोडॉक्स चर्च तथा इसके अनुयायी ग्रेगोरियन कैलेंडर को मान्यता न देकर पारंपरिक रोमन कैलेंडर को ही मानते हैं। इस कैलेंडर के अनुसार जॉर्जिया, रूस, यरूशलम, सर्बिया आदि में 14 जनवरी को नववर्ष मनाया जाता है।

पूर्व में नववर्ष 1 जनवरी को नहीं मनाया जाता था। पहले नववर्ष कभी 25 मार्च को तो कभी 25 दिसम्बर को मनाया जाता था। सर्वप्रथम नववर्ष के तौर पर 1 जनवरी को मान्यता 15 अक्टूबर 1582 को मिली थी। लेकिन आज तक यह कैलेंडर सम्पूर्ण विश्व में मान्यता प्राप्त करने में असफल ही रही है। और आज भी पूरी दुनिया कैलेण्डर प्रणाली पर एकमत नहीं हैं। आज भी दुनिया के अलग-अलग कोने में अलग-अलग दिन नववर्ष मनाए जाने की परंपरा कायम है, क्योंकि दुनिया भर में अनेक कैलेंडर हैं और हर कैलेंडर का नववर्ष का प्रथम दिन अलग-अलग होता है। एक अनुमान के अनुसार अकेले भारत में ही विक्रम संवत, शक संवत, हिजरी संवत, फसली संवत, बांग्ला संवत, बौद्ध संवत,

इस काल को ही वर्तमान में वर्ष माना गया। वर्ष की शुरुआत नववर्ष अर्थात वर्ष के प्रथम दिन से माना जाता है। और नए का आत्मबोध हमारे अंदर एक नवीन उत्साह भरता है, जीवन में नवीनपन लाने का प्रेरणा देता है और नए तरीके से जीवन जीने का संदेश देता है। इसलिए नववर्ष कोई भी हो, उसे खुलकर जीना चाहिए।

जैन संवत, खालसा संवत, तमिल संवत, मलयालम संवत, तेलुगु संवत सहित 50 से भी अधिक पंचांग अर्थात कैलेंडर प्रचलित हैं, और इनमें से कई का नववर्ष अलग दिनों पर होता है। एक आकलन के अनुसार दुनिया भर में पूरे 70 नववर्ष मनाए जाते हैं। ग्रेगोरियन कैलेंडर के सर्वमान्य नहीं हो पाने का कारण इस कैलेंडर में विद्यमान गड़बड़ियाँ ही हैं, जो समय - समय पर उजागर होती रही हैं। परंतु भारतीय पंचांगों में इस प्रकार की गड़बड़ियाँ नहीं रहीं, क्योंकि यहाँ ग्रहीय गतियों का सूक्ष्म अध्ययन करने की अतिप्राचीन परंपरा रही है तथा कालगणना पृथ्वी, चन्द्र, सूर्य की गति के आधार पर होती रही है। चंद्र और सूर्य गति के अंतर को पाटने की भी व्यवस्था अधिक मास आदि द्वारा होती रही है। भारत में सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, माह और वर्ष की गणना करके भारतीय पंचांग बनाया गया है। जहां अन्य देशों में नववर्ष मनाने का आधार किसी व्यक्ति, घटना या स्थान से जुड़ा होता है और विदेशी लोग अपने देश की सामाजिक और धार्मिक परंपराओं और मान्यताओं के अनुसार इसे मनाते हैं, वहीं भारतीय कैलेंडर व नववर्ष ब्रह्मांड के शाश्वत तत्वों से जुड़ा हुआ है। ग्रहों की चाल पर आधारित भारतीय पंचांग व नववर्ष सबसे विशिष्ट और पूर्णत: वैज्ञानिक है। पृथ्वी अपनी धुरी पर 1600 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से घूमती है। इस चक्र को पूरा करने में उसे 24 घंटे का समय लगता है। इसमें 12 घंटे पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने रहता है, उसे अह: कहा जाता है। तथा सूर्य के पीछे रहने वाले भाग को रात्र कहा जाता है। इस प्रकार 12 घंटे पृथ्वी का पूर्वार्द्ध तथा 12 घंटे पृथ्वी का उत्तरार्द्ध सूर्य के सामने रहता है। इस प्रकार एक अहोरात्र में 24 होरा होते हैं। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा 1 लाख किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से कर रही है। पृथ्वी का 10 चलन सौर दिन कहलाता है। चांद्र दिन को तिथि कहते हैं। जैसे एकम्, चतुर्थी, एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या आदि। पृथ्वी की परिक्रमा करते समय चंद्र का 12 अंश तक चलन एक तिथि कहलाता है। सम्पूर्ण विश्व में सप्ताह के दिन व क्रम भारतीय क्रम के अनुसार ही हैं। भारत में पृथ्वी से उत्तरोत्तर दूरी के आधार पर ग्रहों का क्रम निर्धारित किया गया, जैसे - शनि, गुरु, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुद्ध और चन्द्रमा। इनमें चंद्रमा पृथ्वी के सबसे पास है तो शनि सबसे दूर। इसमें एक-एक ग्रह दिन के 24 घंटों अथवा होरा में एक-एक घंटे का अधिपति रहता है। इसलिए क्रम से सातों ग्रह एक-एक घंटे अधिपति, यह चक्र चलता रहता है और 24 घंटे पूरे होने पर अगले दिन के पहले घंटे का जो अधिपति ग्रह होगा, उसके नाम पर दिन का नाम रखा गया। सूर्य से सृष्टि होने की मान्यता के कारण प्रथम दिन रविवार मानकर ऊपर क्रम से शेष वारों का नाम रखा गया। पृथ्वी की परिक्रमा में चंद्रमा का 12 अंश चलना एक तिथि कहलाता है। अमावस्या को चंद्रमा, पृथ्वी तथा सूर्य के मध्य रहता है। इसे 0 (अंश) कहते हैं। यहां से 12 अंश चलकर जब चंद्रमा सूर्य से 180 अंश अंतर पर आता है, तो उसे पूर्णिमा कहते हैं। इस प्रकार एकम् से पूर्णिमा वाला पक्ष शुक्ल पक्ष कहलाता है तथा एकम् से अमावस्या वाला पक्ष कृष्ण पक्ष कहलाता है। कालगणना के लिए आकाशस्थ 27 नक्षत्र माने गए हैं- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्व फाल्गुन, उत्तर फाल्गुन, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषाक, पूर्व भाद्रपद, उत्तर भाद्रपद और रेवती। सताईस नक्षत्रों में प्रत्येक के चार पाद किए गए। इस प्रकार कुल 108 पाद हुए। इनमें से नौ पाद की आकृति के अनुसार बारह राशियों के नाम रखे गए- मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ व मीन। पृथ्वी पर इन राशियों की रेखा निश्चित की गई, जिसे क्रांति कहते है। ये क्रांतियां विषुव वृत्त रेखा से 24 उत्तर में तथा 24 दक्षिण में मानी जाती हैं। इस प्रकार सूर्य अपने परिभ्रमण में जिस राशि चक्र में आता है, उस क्रांति के नाम पर सौर मास है। यह साधारणत: वृद्धि तथा क्षय से रहित है। मास भर सायंकाल से प्रात: काल तक जो नक्षत्र दिखाई दे तथा जिसमें चंद्रमा पूर्णता प्राप्त करे, उस नक्षत्र के नाम पर चांद्र मासों के नाम पड़े हैं- चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, अषाढ़ा, श्रवण, भाद्रपद, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, फाल्गुनी। इसलिए इसी आधार पर चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विनी, कृत्तिका, मार्गशीर्ष, पौष, माघ तथा फाल्गुन-ये चंद्र मासों के नाम पड़े। पृथ्वी के अपने कक्षा पर भ्रमण, झुकाव, सूर्य की किरणों के पृथ्वी पर पड़ने के आधार पर उत्तरायण- दक्षिणायन काल, कर्क-मकर संक्रांति आदि का निर्धारण किया गया है। पृथ्वी सूर्य के आस-पास लगभग एक लाख किलोमीटर प्रति घंटे की गति से 166000000 किलोमीटर लम्बे पथ का करीब 365 दिन में एक चक्र पूरा करती है। ■

नई लकीर खींचने की कोशिश में जुटे मोहन यादव

मोहन यादव महाकाल की नगरी उज्जैन के निवासी है। उज्जैन में ही भगवान कृष्ण ने संदीपनी ऋषि के आश्रम में शिक्षा ली थी। मोहन यादव कहते हैं कि कंस-वध के बाद कान्हा जी चाहते तो खुद सिंहासन पर बैठ सकते थे।

हर नरायन चतुर्वेदी

विधानसभा चुनाव में अभूतपूर्व जीत के बाद मध्य प्रदेश में बीजेपी ने तकरीबन अपरिचित चेहरे को राज्य की कमान सौंपने का फैसला लिया, तो राजनीतिक हलकों में हैरत जताई गई थी। उन्हीं मोहन यादव ने बतौर मुख्यमंत्री सालभर की यात्रा पूरी कर ली है। मंत्री के तौर पर मोहन यादव मध्य प्रदेश शासन का हिस्से रहे, लेकिन मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्हें समझ आया कि एक या दो विभाग संभालना अलग बात है और पूरे राज्य की कमान के साथ राजनीतिक संतुलन बनाए रखना कठिन चुनौती है। लेकिन मोहन यादव ने इस चुनौती को ना सिर्फ संभाल लिया है, बल्कि नवाचार के साथ शासन और प्रशासन को बखूबी संभाल रहे हैं। शासन की पहली वर्षगांठ के अवसर पर विशेष भेंट में मोहन यादव ने अपनी चुनौतियों के साथ ही अपने सपनों को जिस सहज अंदाज में साझा किया, वह उनकी राजनीति और चरित्र को समझने का सूत्र है।

बड़ा राजनीतिक दल हो या संभ्रांत परिवार, हर नए नेतृत्व के सामने अक्सर अतीत और पूर्वज से तुलना का सवाल उठ खड़ा होता है। अगर अतीत का नेतृत्व विराट रहा हो तो नए नेतृत्व के हर कदम को पुराने की कसौटी पर कसा जाना स्वाभाविक है। मोहन यादव को बखूबी पता है। वे खुद भी स्वीकार करते हैं कि उनके मुख्यमंत्री बनने से पहले करीब साढ़े अठारह साल तक राज्य में बीजेपी की सत्ता रही। उसकी कमान जिन हाथों में रही, वे प्रभावशाली रहे। मोहन यादव स्वीकार करते हैं कि उनके नेताओं ने जो वायदे किए, जिस जैसा शासन चलाया, उन्हें पूरा करना और उस परिपाटी को बरकरार रखना उनका पाथेय है। मोहन यादव को पता है कि उन्हें अपनी भी एक नई लकीर खींचनी होगी। वे खुलकर इसे स्वीकार नहीं करते, बल्कि खुद को विनम्र कार्यकर्ता बताते हैं। मध्य प्रदेश को लेकर उनके भी अपने कुछ सपने हैं। सपना यह कि समृद्ध और वैविध्यपूर्ण प्राकृतिक संपदा वाला उनका राज्य समृद्ध बने, आर्थिक रूप से समृद्ध हो, कृषि विकास की मौजूदा दर बनी रहे और किसान लगातार समृद्ध होते रहें। सांस्कृतिक रूप से संपन्न राज्य की भारत ही नहीं, वैश्विक मानचित्र पर गहन पहचान भी बने। इन सपनों को हकीकत बनाने के लिए वे अहर्निश जुटे हैं। उनका कहना है कि सोते-जागते हर वक्त उन्हें एक ही चिंता रहती है, यह कि मध्य प्रदेश समृद्ध हो, संपन्न हो और अपनी सांस्कृतिक धरोहरों के साथ आगे बढ़ता रहे।

मोहन यादव महाकाल की नगरी उज्जैन के निवासी है। उज्जैन में ही भगवान कृष्ण ने संदीपनी ऋषि के आश्रम में शिक्षा ली थी। मोहन यादव कहते हैं कि कंस-वध के बाद कान्हा जी चाहते तो खुद सिंहासन पर बैठ सकते थे। लेकिन उन्होंने कुर्सी की बजाय शिक्षा को चुना और उज्जैन चले आए। जहां सुदामा से उनकी ऐसी मित्रता हुई, जिससे दुनिया आज भी सीख लेती है। मोहन यादव ने कान्हा की याद में 'श्रीकृष्ण पाथेय' परियोजना की कल्पना की है। मोहन यादव कहते हैं कि कंस वध के बाद मथुरा से चलकर कृष्ण उज्जैन आए। यहां उन्होंने शिक्षा ली। 'श्रीकृष्ण पाथेय' के तहत उज्जैन को मथुरा से जोड़ने की योजना है। इस पथ पर तीन राज्य हैं। कृष्ण उत्तर प्रदेश के मथुरा से राजस्थान होते हुए मध्य प्रदेश के उज्जैन पहुंचे थे। श्रीकृष्ण पाथेय करीब साढ़े छह सौ किलोमीटर का होगा। इस पाथेय के लिए राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल से मोहन यादव की बात हो चुकी है। यह संयोग ही है कि भजनलाल और मोहन यादव ने तकरीबन साथ-साथ अपने-अपने राज्यों में कमान संभाली थी। मोहन यादव की योजना है कि इस पाथेय को गुजरात के द्वारका तक बढ़ाया जाए। इस सिलसिले में गुजरात सरकार से भी मध्य प्रदेश की बातचीत चल रही है। श्रीकृष्ण पाथेय सही मायने में सांस्कृतिक पथ होगा। मोहन यादव कहते हैं कि लोकजागरण भी उनकी जिम्मेदारी है। इस पाथेय के जरिए दुनिया को दो संदेश देने की कोशिश होगी, पहला शिक्षा का संदेश और दूसरा अमीर-गरीब की मित्रता का संदेश। समाज को जोड़ने में शिक्षा और मित्रता का योगदान अनमोल है। इस पाथेय पर श्रीकृष्ण जहां-जहां रूके, उन-उन जगहों, तीर्थों को विकसित करने और पाथेय पर हस्तशिल्प कलस्टर को बनाने की तैयारी है। इससे जहां पर्यटन बढ़ेगा, बल्कि लोगों को रोजगार भी मिलेगा।

मध्य प्रदेश सरकार साल 2024 में लाड़ली बहना योजना पर 9 हजार 455 करोड़ रूपये से अधिक की राशि खर्च की है। जिसका फायदा राज्य की एक करोड़ 29 लाख महिलाओं को मिला है। बेशक ऐसी योजनाएं सरकारों के लिए फायदेमंद साबित हुई हैं, लेकिन एक वर्ग के निशाने पर भी ये योजनाएं हैं। मोहन यादव को भी पता है कि ऐसी कल्याणकारी योजनाओं को लंबे समय तक चलाना तभी संभव होगा, जब राज्य की आर्थिक सेहत अच्छी हो। इसलिए राज्य में इन्वेस्टर समिट किए जा गए। राज्य स्तर पर सातवां निवेशक सम्मेलन फरवरी 2025 में होना है। ये सम्मेलन संभागीय स्तर पर भी आयोजित किए जाते रहे। इन सम्मेलनों से अब तक राज्य को चार लाख करोड़ का निवेश प्रस्ताव मिल चुका है। जिसे और बढ़ाने की तैयारी है। पर्यावरण संकट झेल रही दुनिया में भारत के कई राज्यों पर कार्बन रेटिंग ठीक करने का दबाव है। लेकिन उनके पास जंगल लायक जमीन नहीं है। मोहन यादव उन राज्यों के लिए कैप्टिव योजना लाने जा रहे हैं। जिसे कान्हा वन, वृंदावन योजना नाम दिया गया है। इसके तहत कार्बन रेटिंग ठीक करने की चाहत रखने वाला राज्य मध्य प्रदेश में लीज पर जमीन ले सकता है और यहां जंगल लगा सकता है। मुख्यमंत्री का कहना है कि इससे जहां दूसरे राज्यों की कार्बन रेटिंग सुधरेगी, वहीं मध्य प्रदेश का वन क्षेत्र बढ़ेगा। जिससे मध्य प्रदेश का पर्यावरण भी बेहतर होगा।

कृषि विकास दर के लिहाज से मध्य प्रदेश देश में पहले स्थान पर है। मोहन यादव ऐसी योजनाएं ला रहे हैं, जिससे किसानों की आय और बढ़े और राज्य की आर्थिक सेहत भी दुरूस्त हो। इस लिहाज से दुग्ध उत्पादन और बागवानी पर जोर दिया जा रहा है। देश के दुग्ध उत्पादन में मध्य प्रदेश की हिस्सेदारी नौ प्रतिशत है, योजना है कि इसे बढ़ाकर बीस प्रतिशत किया जाए। किसी भी राज्य के कृषि विकास में उस राज्य के कृषि विश्वविद्यालयों में हो रही पढ़ाई और शोध का बहुत योगदान होता है। मोहन यादव इसे समझते हैं, इसीलिए राज्य के सभी 16 विश्वविद्यालयों में कृषि विभाग शुरू किए गए हैं। राज्य में कपास का उत्पादन भी खूब होता है। मोहन यादव सरकार चाहती है कि मध्य प्रदेश की कपास से राज्य में ही कपड़े का उत्पादन हो, इसके लिए योजना लाई गई है। मध्य प्रदेश की कपड़ा मिलों में महिलाओं को नौकरी मिले, इसके लिए प्रति महिला पांच हजार रूपए महीने उत्पादक को सब्सिडी देने की तैयारी है। इसी तरह राज्य के प्रमुख शहरों, भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर और रीवां समेत सात जगहों पर आईटी पार्क स्थापित करने की तैयारी है। युवाओं को रोजगार योग्य बनाने के लिए राज्य में 55 पीएम एक्सीलेंस कॉलेज खोले जा रहे हैं। शासन में फिजूलखर्ची रोकने की योजना भी बनाई गई है। इसके तहत स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा जैसे अलग विभागों को एकीकृत कर दिया गया है। राज्य के प्रशासन में जहां भी जरूरी होगा, उन्हें संतुलित करने, विभागों को एक साथ लाने की योजना पर काम चल रहा है। राज्य सरकार थानों का परिसीमन सफलतापूर्वक कर चुकी है, इसी तर्ज पर प्रशासनिक परिसीमन की भी तैयारी है। इसी तरह अफसर-कर्मचारी अनुपात को भी तर्कसंगत करने की तैयारी है। मोहन यादव कहते हैं कि सरकारी तंत्र पर खर्च होने वाला हर पैसा नागरिक का होता है और उसका दुरूपयोग नहीं होने दिया जाएगा। मोहन यादव सरकार एक और अनूठी योजना लेकर आई है। मध्य प्रदेश पहला राज्य बन गया है, जहां सरकारी स्तर पर एयर एंबुलेंस सेवा शुरू की गई है। आयुष्मान योजना के तहत आने वाले रोगियों को यह सुविधा जहां मुफ्त मिलेगी, वहीं सक्षम लोगों से इसके लिए फीस ली जाएगी। निजी और सरकारी सहयोग के आधार पर अस्पताल शुरू किए जा रहे हैं। बड़ी-बड़ी गोशालाएं बनाई जा रही हैं, जिन्हें नगर महापालिकाओं और नगर निगमों को दी गई है। केन - बेतवा नदी जोड़ परियोजना की शुरूआत प्रधानमंत्री मोदी के हाथों हो चुकी है। मोहन यादव आज बीजेपी के नए नेतृत्व का चेहरा हैं। हालांकि खुद को वे पार्टी का विनम्र कार्यकर्ता ही बता रहे हैं। पार्टी का यह विनम्र कार्यकर्ता अपने ढंग से अपनी नई लकीर खींचने की कोशिश में जुट रहा है। लेकिन यह कोशिश तभी कामयाब मानी जाएगी, जब देश-दुनिया के नक्शे पर मध्य प्रदेश नई पहचान के साथ उभर पाएगा। ■

मोहन यादव आज बीजेपी के नए नेतृत्व का चेहरा हैं। हालांकि खुद को वे पार्टी का विनम्र कार्यकर्ता ही बता रहे हैं। पार्टी का यह विनम्र कार्यकर्ता अपने ढंग से अपनी नई लकीर खींचने की कोशिश में जुट रहा है। लेकिन यह कोशिश तभी कामयाब मानी जाएगी, जब देश-दुनिया के नक्शे पर मध्य प्रदेश नई पहचान के साथ उभर पाएगा।

अष्टविकृतियुक्त वेदपाठविधि के कारण वेद में मिलावट संभव नहीं

संसार के समस्त विद्याओं का मूल वेद है। इसमें संसार के आदिकाल में ईश्वर ने मनुष्यों को जीवन जीने की कला की उपदेश दी है। वेद भारत देश की चेतना है। हमारे प्राणों की ऊर्जा है। वेद हमारा सर्वस्व है। भारतीय संस्कृति एवं परंपरा में वेदों को वही स्थान प्राप्त है, जो शरीर में आत्मा का है। जिस प्रकार आत्मारहित शरीर शव होती है, उसी प्रकार भारतीय संस्कृति से वेद को अलग कर देने पर यह संस्कृति प्राणविहीन होकर निर्जीव हो जाती है।

प. अशोक शर्मा

जब कभी मनुष्य भयंकर विपत्ति में होता है, और उसे ऐसा प्रतीत होता है कि अब शायद कुछ भी न बचे, उस समय वह जिसको सबसे अधिक चाहता है, उसकी रक्षा करने का भरसक यत्न भी करता है। ऐसा ही हमारे देश के इतिहास में हुआ। महाभारत युद्ध के पश्चात एक ऐसा समय आया, जब लगता था कि मानो हमारे देश से वीरता रूठ गई हो। इस काल में देश को रौंदते हुए अनेक विदेशी आततायी आक्रांता आए, और हम भारतीय असहाय होकर उनके दमन चक्र को सहते रहे। देश में आए आक्रांता ऐसे क्रूर और निर्दयी स्वभाव के थे कि अपने मार्ग में आने वाले सभी वस्तुओं को आग के हवाले कर दिया। इस हमले में न जाने कितने भारतीय साहित्य आग की भेंट चढ़ गए, जो आज प्राप्य नहीं हैं। वैदिक विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद की 21, यजुर्वेद की 101, सामवेद की 1000 और अथर्ववेद की 9 शाखाएँ हुआ करती थीं। इनमें से बहुत थोड़ी-सी शाखाएं आज प्राप्य हैं, शेष उन दुष्टों के क्रोध का शिकार होकर विलुप्त हो गई हैं। यह सब सिर्फ संपति को लूटने की हवश नहीं थी, बल्कि यह भारतीय सभ्यता-संस्कृति को समाप्त करने का एक कुटिल और भयानक षड्यन्त्र था। जिस प्रकार अरब और यूनान की सभ्यताएं समाप्त हो गयीं, उनका नाम लेने वाला भी आज कोई नहीं है, उसी प्रकार इस देश की अस्मिता और अस्तित्व को कुचलने का नहीं, जड़ से उन्मूलन करने का प्रयास विदेशियों द्वारा किया जा रहा था। उस समय इस देश के मनस्वी विद्वानों अर्थात ब्राह्मणों ने अपना जीवन नहीं वरन पीढ़ियों के जीवन को इस वेदज्ञान राशि की रक्षा में अर्पित कर दिया। यह एक ऐसा अभिनव प्रयास था, जिसकी समता विश्वसाहित्य की रक्षा में किसी अन्य प्रयास से नहीं की जा सकती। यह उत्सर्ग सीमा पर कठोर यन्त्रणाएं सहकर प्राण विसर्जन करने वाले वीरों की बलिदान गाथा से कहीं बढ़कर है। वेदों की रक्षा के लिए जिस विधि का विधान किया गया, वह अष्टविकृतियुक्त वेदपाठविधि कहलाती है। इस प्रयास के कारण ही वेद वर्तमान में अविकल रूप में उपलब्ध हैं और उसमें एक अक्षर की भी मिलावट करना संभव नहीं हो सका। इस अष्टविकृतियुक्त वेदपाठविधि में वेद के प्रत्येक पद का उच्चारण अनुलोम तथा विलोम विधि से किया जाता है, जिससे उसके रूपज्ञान में किसी प्रकार की त्रुटि की संभावना नहीं रहती है। शैशिरीय समाम्नाय में महर्षि व्याडि ने जटा आदि आठ विकृतियों के लक्षण बतलाये हैं-

शैशिरीये समाम्नाये व्याडिनैव महर्षिणा।
जटाद्या विकृतीरष्टौ लक्ष्यन्ते नातिविस्तरम्।।
जटा माला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो घनः।
अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः।।
शैशिरीय समाम्नाय।।

क्रम पाठपूर्वक महर्षियों ने आठ जटा आदि विकृतियाँ के लक्षण प्रतिपादित किए हैं- जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ, घन। मंत्रों का प्रकृत उपलब्ध पाठ संहितापाठ कहलाता है। पाणिनीय सूत्र 1/4/109 में संहिता का लक्षण करते हुए पाणिनी कहते हैं- पर: सन्निकर्ष: संहिता। वर्णों की अत्यन्त समीपता का नाम संहिता है। ऋग्वेद 10/97/22 के अनुसार संहिता पाठ के प्रत्येक पद विच्छेद पूर्वक पाठ करना पदपाठ कहलाता है। पदपाठ में पद तो वे ही रहते हैं, परन्तु पदपाठ में स्वर में बहुत अन्तर आ जाता है। संहितापाठ में जहाँ स्वर संहितापाठ की दृष्टि से लगे होते हैं, वहीं पदपाठ में स्वरों का आधार पद होता है। क्रम से दो पदों का पाठ क्रमपाठ कहलाता है। ऋषि कात्यायन के अनुसार भी क्रम पूर्वक दो पदों का पाठ क्रमपाठ है। इस क्रमपाठ का प्रयोजन स्मृति माना गया है। अनुलोम तथा विलोम प्रकार से जहाँ क्रम तीन बार पढ़ा जाता है, उसे जटा पाठ कहते हैं। अनुलोम तथा विलोम प्रकार से मन्त्र में क्रम से आये दो पदों का तीन बार पाठ करना चाहिए। विलोम में पद के समान संधि होती है, जबकि अनुलोम में क्रम के समान। जटा पाठ में प्रथम सीधा क्रम, तदन्तर विपरीत क्रम, पुन: उसी सीधे क्रम का पाठ किया जाता है। गणितीय भाषा में इसको 1, 2, 1 कहा जा सकता है। जब जटापाठ में अगला पद जोड़ दिया जाता है, तब वह शिखापाठ कहलाता है। शिखापाठ प्रथमपद, तदनन्तर द्वितीय पद, पुन: वही प्रथम पद और उसके पश्चात तृतीय पद का ग्रहण किया जाता है। अगली पंक्ति में तृतीय एव चतुर्थ पद का अनुलोम, विलोम, पुन: अनुलोम करने के पश्चात पंचम पद का पाठ किया जाता है। इसी प्रकार यह क्रम चलता रहता है। माला पाठ दो प्रकार का होता है- पुष्पमाला और क्रम माला। क्रममालापाठ के आधी ऋचा के प्रारम्भ के दो पद तथा अन्त का एक पद, तदनन्तर प्रारम्भ से द्वितीय एवं तृतीय पद तथा अन्त की ओर से षष्ठ एवं पञ्चम पद, पुन: प्रारम्भ से तृतीय एवं चतुर्थ पद और अन्त की ओर से पंचम एवं चतुर्थ पद। इसी प्रकार आधी ऋचा के मध्य से आदि और अन्त की ओर बढ़ते हुए चले जाते हैं और पुन: जहाँ से चले थे वहाँ पहुँच जाते हैं। रेखा पाठ में दो, तीन, चार या पाँच पदों का क्रमश: पाठ किया जाता है। इस पाठ में प्रथम अनुलोम पाठ किया जाता है, तदनन्तर विलोम, पुन: अनुलोम पाठ किया जाता है। ध्वजपाठ में क्रम से प्राप्त होने वाले दो पदों का पाठ करते हुए आदिक्रम में अनुलोम से प्रारम्भ होकर अन्त तक तथा अन्तक्रम में विलोम से प्रारम्भ होकर आदि तक पहुँचा जाता है। दण्डपाठ में प्रथम अनुलोम पुन: विलोम पाठ करते हुए मन्त्र के सभी पदों का पाठ किया जाता है। यह पाठ इस प्रकार का होता है कि प्रथम दो पदों का अनुलोम-विलोम करते हुए त्रमश: उसमें एक-एक पद की वृद्धि की जाती है। रथ पाठ तीन प्रकार का होता है- द्विचक्ररथ, त्रिचक्ररथ, चतुश्चक्ररथ। घनपाठ में क्रम को अन्त से प्रारम्भ करके आदि पर्यन्त और आदि से प्रारम्भ करके अन्त तक ले जाया जाता है। इस घनपाठ के अनेक भेद हैं। घनपाठ अन्य वेदपाठों की तुलना में अधिक कठिन माना जाता है। वैदिक विद्वानों के अनुसार यह मेधाशक्ति की पराकाष्ठा तथा उत्कर्ष है कि ऐसे विषम पाठ को हमारे वेदपाठी शुद्ध स्वर से अनायास ही पाठ करते हैं। सामवेद की रक्षा करने के लिए ऋषियों ने उपर्युक्त से भिन्न प्रक्रिया अपनायी है। सामवेद की रक्षा की दृष्टि से स्वरगणना का माध्यम अपनाया गया है। यह स्वरगणना अत्यन्त समीचीन है और ऐसी गणना अन्य वेदों के मंत्रों में नहीं पायी जाती है। सामवेद के ऋचाओं पर उदात्तादि तीनों स्वरों के विशिष्ट चिह्न अंकित किये गये हैं। सामवेद में उदात्त के ऊपर1 का अंक, स्वरित पर 2 का तथा अनुदात्त पर 3 का अंक लगाया जाता है। स्वरों की विशेष गणना की व्यवस्था सामवेद में की गयी है। वैदिक विद्वानों के अनुसार इस वेदपाठविधि के विधान के कारण ही वाममार्गी और जैनियों ने जो इस देश के साहित्य को प्रदूषित करने का कुचत्र चला रखा था, वह प्रदूषण वेदों को संत्रमित नहीं कर पाया। महाभारत युद्ध के पश्चात जहाँ एक ओर भारत देश वीरों और विद्वानों से शून्य हो गया था, वहीं दूसरी ओर स्वार्थी तत्त्वों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए समग्र भारतीय साहित्य को नाना प्रकार से संदूषित करने की प्रक्रिया चला रखी थी। उनका यह प्रयास बहुत अधिक सफल भी रहा, परंतु वे वेद में एक भी अक्षर की मिलावट करने में सफल नहीं हो सके। जिसके कारण वेद का उच्चारण जिस प्रकार प्राचीन काल में हुआ करता था, आज भी इस वेदपाठविधि के कारण उसी रूप में सुना जा सकता है। यह व्यवस्था वेद की रक्षा के लिए एक अभेद्य दुर्ग का निर्माण करती है। यही कारण है कि वर्तमान में वेद उसी शुद्ध और प्रामाणिक रूप में उपलब्ध हो रहा है। ■

वैदिक विद्वानों के अनुसार इस वेदपाठविधि के विधान के कारण ही वाममार्गी और जैनियों ने जो इस देश के साहित्य को प्रदूषित करने का कुचत्र चला रखा था, वह प्रदूषण वेदों को संत्रमित नहीं कर पाया। महाभारत युद्ध के पश्चात जहाँ एक ओर भारत देश वीरों और विद्वानों से शून्य हो गया था, वहीं दूसरी ओर स्वार्थी तत्त्वों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए समग्र भारतीय साहित्य को नाना प्रकार से संदूषित करने की प्रक्रिया चला रखी थी।

शाह बानो के आंसू रुलाते ही रहेंगे कांग्रेस को

अजय शर्मा

इंदौर की बेबस तलाकशुदा शाह बानो भारत में मुसलमान औरतों की बेबसी के प्रतीक के रूप में 1980 के दशक में सामने आईं थीं। उसके बाद के कालखंड में जब भी ऐसा लगने लगता है कि देश उन्हें भूल रहा है, तब ही उनकी फिर से किसी न किसी रूप में चर्चा प्रारंभ हो जाती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में संसद में संविधान के 75 साल पूरा होने पर हुई चर्चा के दौरान शाह बानो मामले का जिक्र किया। उन्होंने कहा, सुप्रीम कोर्ट से शाह बानो को हक मिला था। राजीव गांधी ने सुप्रीम कोर्ट की उस भावना को, नकार दिया। उन्होंने वोट बैंक की राजनीति की खातिर संविधान की भावना को बलि चढ़ा दिया। यह सच है कि इंसाफ के लिए तड़प रही एक महिला की बजाय राजीव गांधी ने इस्लामिक कट्टरपंथियों का खुलकर साथ दिया था। संसद में अपनी बहुमत के बल पर आनन फानन में कानून बनाकर सुप्रीम कोर्ट के फैसले को एक बार फिर पलट दिया गया था।

दरअसल शाह बानो केस भारत की राजनीति और कानूनी प्रणाली में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। यह मामला 1985 में सामने आया था और इसने देश में एक बड़ी बहस छेड़ दी थी। शाह बानो इंदौर की एक मुस्लिम महिला थीं, जिन्हें उनके पति ने तलाक दे दिया था। उन्होंने गुजारा भत्ता (भरण-पोषण) की मांग करते हुए अदालत का दरवाजा खटखटाया। निचली अदालतों ने उनके पक्ष में फैसला सुनाया। लेकिन, उनके पति ने इस फैसले को मानने की बजाय सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दे डाली थी। सुप्रीम कोर्ट ने शाह बानो के पक्ष में फैसला सुनाया। अदालत ने कहा कि दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 125 के तहत, तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं को भी गुजारा भत्ता पाने का अधिकार है। अदालत ने यह भी कहा कि यह कानून सभी धर्मों के लोगों पर लागू होता है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने देश में एक राजनीतिक भूचाल सा ला दिया। मुस्लिम समुदाय के कुछ लोगों ने इस फैसले का विरोध किया और इसे अपने धार्मिक कानूनों में हस्तक्षेप माना। उन्होंने सरकार पर मुस्लिम पर्सनल लॉ में बदलाव करने का आरोप लगाया। वे किसी भी रूप में शाह बानो के हक में खड़े होने के लिए तैयार नहीं थे। शाह बानो एक बुजुर्ग औरत थीं। उसका साथ देने के लिए कोई भी मुस्लिम संगठन खडा नहीं हुआ। उन्होंने उसे अपनी हाल पर मरने के लिए छोड़ दिया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी की सरकार ने इस मामले में एक अत्यंत ही विवादास्पद कदम उठाया। उन्होंने मुस्लिम महिला (तलाक पर अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 1986 पारित किया। इस अधिनियम ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलट दिया

और तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं को गुजारा भत्ता देने की जिम्मेदारी उनके पति के बजाय उनके परिवार या वक्फ बोर्ड पर डाल दी। वक्फ बोर्ड जैसे महा भ्रष्ट संगठन ने किसकी किसकी कब मदद की, यह बात न राजीव गांधी को पता थी और न उनके करीबियों को। राजीव गांधी सरकार के फैसले की व्यापक आलोचना हुई। कई लोगों ने इसे अल्पसंख्यक तुष्टीकरण और लैंगिक न्याय के खिलाफ माना। जो सच भी था। इस मामले ने भारतीय राजनीति में धार्मिक और लैंगिक मुद्दों को केंद्र में ला दिया। शाह बानो केस ने धार्मिक आधार पर भारतीय समाज को ध्रुवीकृत भी कर दिया। इसने भारत में महिला अधिकारों और लैंगिक न्याय पर एक नई बहस छेड़ दी। शाह बानो केस ने राजनीतिक दलों की भूमिका और अल्पसंख्यकों के प्रति उनके दृष्टिकोण को उजागर किया। देश के आम अवाम को समझ आ गया कि कांग्रेस मुसलमानों के वोट हासिल करने के लिए किसी भी हदतक समझौता कर सकती है।बेशक, शाह बानो केस भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना बनी हुई है, जो आज भी प्रासंगिक है। यह मामला बताता है कि कैसे धार्मिक और राजनीतिक मुद्दे सामाजिक न्याय और समानता को प्रभावित कर सकते हैं। शाह बानो केस में मुस्लिम संगठनों का असली चेहरा सामने आ गया। वे तलाकशुदा मुस्लिम महिला को अपने पूर्व पति से गुजारा भत्ता पाने का हकदार नहीं मानते थे। उनका तर्क था कि यह फैसला मुस्लिम पर्सनल लॉ में हस्तक्षेप करता है। इसके बाद ही, राजीव गांधी सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलट दिया था। कांग्रेस ने इस मामले में मुस्लिम समुदाय को खुश करने के लिए तुष्टिकरण की नीति अपनाई। इसके चलते कांग्रेस को देश ने नकारना शुरू कर दिया। शाह बानो केस में कांग्रेस के स्टैंड से नाराज सख्त नाराज होकर वरिष्ठ कांग्रेस नेता और केंद्रीय मंत्री आरिफ मोहम्मद खान ने पार्टी छोड़ी थी। आरिफ साहब की पहचान मुस्लिम और हिंदू धर्म ग्रंथों के विद्वान एवं एक स्वतंत्र विचारों के व्यक्ति के रूप में रही है। वे मुस्लिम होने के बावजूद कट्टर नहीं हैं। बल्कि उदार और बुद्धिजीवी व्यक्ति हैं। आरिफ मोहम्मद खान राजीव गांधी की कैबिनेट में होने के बावजूद शाहबानो मामले में उनसे भिड़ गए थे और मंत्रिपद से इस्तीफा देकर विरोध में खड़े हो गए थे। राजीव गांधी के तुष्टिकरण ने शाहबानो की रूह को बुरी तरह कुचल दिया था सर्वोच्च न्यायालय के उस फैसले को पलट कर जिसमें तलाकशुदा शाहबानो को गुजारा भत्ता दिए जाने का निर्देश दिया गया था।इसके लिए उन्हें नया कानून बनाना पड़ा। उद्देश्य था: कट्टरपंथी मौलवियों को खुश करना। और अर्थ था: संविधान के ऊपर शरीयत की वरीयता। बोलना तो पड़ेगा, विशेषकर कांग्रेस को और उसमें भी ज्यादा राहुल गांधी को, जो हर मौके पर हाथ में संविधान की प्रति लेकर खतरा खतरा चिल्लाते रहते हैं। उन्हें फैसला करना पड़ेगा कि वो संविधान के पक्ष में हैं या शरीयत के? मुल्ला मुस्लिम पर्सनल लॉ के या तलाकशुदा महिलाओं के गुजारा भत्ते के? बड़ी मुश्किल डगर है एक तरफ कुआं, दूसरी तरफ खाई, किधर जाएगी कांग्रेस? सच यह है कि वक्त आने पर मुसलमान औरतों के हक में तीस्ता सीतलवाड़ से लेकर वे तमाम लेखक और कैंडल मार्च निकालने वाले बुद्धिजीवी भी नदारद रहते हैं, जो बात-बात पर दीन-हीन मुसलमान औरतों के हक में सोशल मीडिया पर लिखते - बोलते रहते हैं। दूसरी तरफ, भाजपा को हर वक्त बुरा-भला कहने वाले यह भी जान लें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने ही अपने कार्यकाल में अभी तक मुसलमान औरतों के हक में तमाम बड़ी योजनाएं लागू की हैं। मोदी सरकार की ही पहल पर मुसलमान औरतों को तीन तलाक से मुक्ति मिली। इस बाबत सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला आया। इसने मुसलमान औरतों को तीन तलाक की बर्बर कुप्रथा से मुक्ति दिलवा दी है। सुप्रीम कोर्ट ने इस दौरान तीन तलाक पर रोक लगा दी। हालांकि, कट्टरपंथी मुस्लिम संगठन ट्रिपल तलाक को जारी रखने की पुरजोर वकालत कर रहे थे। यह वही लोग थे, जिन्होंने शाह बानो की लड़ाई का विरोध किया था। ■

संविधान, आरक्षण और डॉ अंबेडकर पर

कांग्रेस की विकृत राजनीति हो रही बेनकाब

प्रखर दीक्षित

संसद का शीतकालीन सत्र हंगामे के साथ समाप्त हो चुका है। अपनी आदत के अनुसार विपक्ष विरोध के नाम पर सदन से भी सियासी चिंगारी निकालने का प्रयास कर रहा है। संसद के शीतकालीन सत्र में संविधान के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर संविधान पर चर्चा का आयोजन किया गया था जिसमें सत्तापक्ष और विपक्ष के नेताओं ने संविधान पर अपने-अपने विचार व्यक्त किये। लोकसभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राज्यसभा में गृहमंत्री अमित शाह ने अपने संबोधन में संविधान, आरक्षण और डॉ. आंबेडकर पर कांग्रेस के विचारों को सप्रमाण सदन में रखा जिससे निरुत्तर हुई कांग्रेस ने राज्यसभा में गृहमंत्री अमित शाह के संबोधन से 12 सेकेंड का एक टुकड़ा उठाकर उसे बाबा साहेब का अपमान बताते हुए गृहमंत्री के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया। इस झूठे विमर्श को सच सिद्ध करने के प्रयास में पूरा विपक्ष कांग्रेस के नेतृत्व में एक बार फिर एकजुट हो रहा है।

यद्यपि दिल्ली विधानसभा चुनावों में आप और कांग्रेस आमने सामने हैं किन्तु आप के नेता भी गृहमंत्री की कथित टिप्पणी का वीडियो बनाकर गली-गली में घुमा रहे हैं कि शायद इसका लाभ विधानसभा चुनाव में मिल जाए। गृहमंत्री के विरुद्ध उसी प्रकार का वातावरण बनाने का प्रयास किया जा रहा जैसा 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा को आरक्षण विरोधी व संविधान विरोधी साबित करने के लिए किया गया था। अब हर एक दल व नेता डॉ. आंबेडकर को भगवान बनाकर अपनी डूबती हुई राजनीतिक नैया को पार लगाने का स्वप्न देखने लगा है। गृहमंत्री अमित शाह के भाषण के अगले दिन राहुल गांधी और प्रियंका वाड्रा दलितों के प्रति अपना प्रेम दिखाने के लिए संसद परिसर में नीली टी शर्ट और नीली साड़ी पहनकर नमूदार हुए। उप्र में समाजवादी पार्टी भी भला पीछे क्यों रहती उसने भी डॉ. आंबेडकर की तस्वीरों के साथ यूपी विधानसभा में जमकर हंगामा किया ओर सदन की कार्यवाही ठप करने का प्रयास किया। गृहमंत्री के बयान के खिलाफ विपक्ष देशव्यापी विरोध प्रदर्शन करने का प्रयास कर रहा है। इस पूरे घटनाक्रम में बसपा नेत्री मायावती ने भी आक्रामक तेवर अपनाए हैं किन्तु वह सधे हुए बयान देकर कांग्रेस, भाजपा और सपा तीनों ही दलों को नसीहत दे रही हैं। बसपा नेत्री मायावती कांग्रेस पर हमलावर हैं, उनका कहना है कि बाबा साहेब की उपेक्षा करने वाली और देशहित में उनके द्वारा किये गये संघर्ष को हमेशा आघात पहुंचाने वाली कांग्रेस पार्टी का बाबा साहेब के अपमान को लेकर उतावालापन विशुद्ध छलावा है। बहिन मायावती ने डॉ. आंबेडकर के प्रति प्रेम दर्शा रहे समाजवादियों की पोल भी खोलकर रख दी है, मायावती का मानना है कि आज सपाई बाबासाहेब के नाम पर पीडीए का पर्चा निकाल रहे हैं जबकि वास्तविकता यह है कि सपा ने भी कभी भी डॉ. आंबेडकर का सम्मान नहीं किया था। समाजवादियों ने वास्तव में बाबा साहब सहित बहुजन समाज में जन्मे सभी महान संतों, गुरुओं, महापुरुषों के प्रति द्वेष के तहत नए जिले, नई संस्थाओं व जनहित योजनाओं तक के नाम बदल डाले थे। सपा सरकार में तो डॉ. आंबेडकर का नाम तक सही नहीं लिखा जाता था। कांग्रेस पार्टी आज नीली टी शर्ट व नीली साड़ी पहनकर इतराती हुई घूम रही है और उसे लग रहा है कि उसे वह मुद्दा मिल गया है जिससे उसकी वापसी की राह आसान हो जायेगी लेकिन कांग्रेस बहुत बड़े भ्रम में है। सभी जानते हैं यह वहीं कांग्रेस पार्टी है जिसने कभी भी डॉ. आंबेडकर का सम्मान नहीं किया और न ही संविधान का कभी मान रखा। आज कांग्रेस नीले कपड़े पहनकर दलित समाज को छलने के लिए निकल पड़ी है। अगर कांग्रेस पार्टी ने कभी भी डॉ. आंबेडकर का सम्मान किया होता तो आज उसकी यह दुर्गति न होती। स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही कांग्रेस और डॉ. आंबेडकर के मध्य गहरे मतभेद उत्पन्न हो गये थे। कांग्रेस के साथ बाबासाहेब का प्रथम विवाद 1930 में गोलमेज कांफ्रेस के समय हुआ था। आंबेडकर अनुसूचित जाति के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र चाहते थे जबकि गांधी जी इसके विरोधी थे। गांधी जी ने आंबेडकर जी के खिलाफ आमरण अनशन तक किया था। 29 जनवरी 1932 को दूसरी गोलमेज सम्मेलन के बाद मुंबई में बाबा साहब ने कहा कि मुझे कांग्रेसी देशद्रोही कहते हैं, यानी आज जो बाबासाहब की फोटो लेकर राजनीति कर रहे हैं,उस समय उन्हें गद्दार कहते थे। संविधान सभा में आंबेडकर जी के चयन का रास्ता भी नेहरू जी ने ही रोका था। हिंदू कोड बिल और सरकार की दलित विरोधी मानकिता के चलते आंबेडकर ने 1951 में नेहरू मंत्रिमंडल से इस्तीफा देते हुए लिखा, संरक्षण की सबसे अधिक जरूरत अनुसूचित जाति को है पर नेहरू का सारा ध्यान सिर्फ मुसलमानों पर है। ध्यान देने योग्य बात है कि आज भी कांग्रेस पार्टी पूरी तरह मुस्लिम परस्त है। कांग्रेस स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी आंबेडकर जी का लगातार अपमान करती रही। बाबा साहब को 40 साल तक भारत रत्न के लिए इंतजार करना पड़ा जबकि कांग्रेस अपने ही परिवार को भारत रत्न देती रही। नई दिल्ली में गांधी नेहरू परिवार की पीढ़ियों के स्मारक बने हैं जबकि गांधी परिवार ने आंबेडकर जी का अंतिम संस्कार तक दिल्ली में नही होने दिया। कांग्रेस ने पग-पग पर डॉ. आंबेडकर के विचारों का धुर विरोध किया और आज राहुल गांधी नीली टी शर्ट पहनकर उनके अपमान पर घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं। वस्तुत: कांग्रेस का आंबेडकर के प्रति प्रेम 2019 लोकसभा चुनाव में हारने के बाद से उमड़ा है।

गृहमंत्री अमित शाह ने कांग्रेस व विरोधी दलों के सभी आरोपों को खारिज करते हुए स्पष्ट कर दिया है कि वह सपने में भी डॉ. आंबेडकर का अपमान नहीं कर सकते। संसद में चर्चा के दौरान यह तो सिद्ध हो गया है कि कांग्रेस ने न केवल जीते जी बाबा साहेब का लगातार अपमान किया वरन उनकी मृत्यु के बाद भी उनका मजाक उड़ाने का प्रयास किया। जब तक कांग्रेस सत्ता में रही बाबा साहेब का एक भी स्मारक नहीं बना जबकि जहां -जहां अन्य दलों की सरकारें आती गई वहां -वहां उनका स्मारक बनता चला गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने बाबासाहेब के जीवन से संबंधित पंचतीर्थ विकसित किये। जिसमें मध्य प्रदेश में महू, लंदन में डॉ. भीमराव आंबेडकर स्मारक, नागपुर में दीक्षा भूमि, दिल्ली में राष्ट्रीय स्मारक और महाराष्ट्र के मुंबई में चैत्य भूमि का विकास किया। 19 नवंबर 2015 को पीएम मोदी ने डॉ. आंबेडकर के सम्मान में 26 नवंबर को संविधान दिवस मनाने की घोषणा की। आज जो लोग संविधान की किताब हाथ में लेकर घूम रहे हैं यही लोग संविधान दिवस का विरोध व बहिष्कार करते रहे हैं। ■

जगहंसाई से बचने के लिए नेता निकालें

समाधि स्थल का समाधान

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने आरोप लगाया कि मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार के लिए यथोचित स्थान उपलब्ध नहीं करा कर सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री के पद की गरिमा, उनकी विरासत और खुद्दार सिख समुदाय के साथ न्याय नहीं किया।

गजेन्द्र सिंह

देश में नेताओं की फितरत में शामिल हो चुका है किसी न किसी वजह से विवादों को जन्म देना। इसके लिए किसी का जन्म-मरण भी नहीं देखा जाता। विवादों के चलते राजनीति इतने निचले स्तर पर जा चुकी है कि दिवंगत विभूतियों को भी नहीं बख्शा जाता। इसमें नेताओं का अहम और राजनीतिक आड़े आ जाती है। पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत मनमोहन सिंह भी इसी राजनीति का शिकार हो गए। सिंह की चिता की राख अभी ठंडी भी नहीं हुई है कि उनकी समाधी स्थल को लेकर केंद्र की भाजपा सरकार और कांग्रेस तथा विपक्षी दल एक-दूसरे को नीचा दिखाने में लग गए। दिल्ली में सिंह के स्मारक के लिए जगह को लेकर कांग्रेस और सरकार के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया। सिंह के स्मारक के मुद्दे पर पार्टी के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि सरकार को देश के महान पुत्र और उनकी गौरवशाली कौम के प्रति आदर दिखाना चाहिए था। उन्होंने कहा कि भारत माता के महान सपूत और सिख समुदाय के पहले प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी का अंतिम संस्कार निगमबोध घाट पर करवाकर वर्तमान सरकार द्वारा उनका सरासर अपमान किया है। राहुल गांधी के मुताबिक आज तक सभी पूर्व प्रधानमंत्रियों की गरिमा का आदर करते हुए उनके अंतिम संस्कार अधिकृत समाधि स्थलों में किए गए ताकि हर व्यक्ति बिना किसी असुविधा के अंतिम दर्शन कर श्रद्धांजलि दे पाए। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने आरोप लगाया कि मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार के लिए यथोचित स्थान उपलब्ध नहीं करा कर सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री के पद की गरिमा, उनकी विरासत और खुद्दार सिख समुदाय के साथ न्याय नहीं किया। कांग्रेस के मीडिया विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने दावा किया कि मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार में असम्मान और कुप्रबंधन देखने को मिला। उन्होंने कहा कि डीडी (दूरदर्शन) को छोड़कर किसी भी समाचार एजेंसी को अनुमति नहीं दी गई। डीडी ने मोदी और शाह पर ध्यान केंद्रित किया। सिंह के परिवार को बमुश्किल ही कवर किया। उन्होंने दावा किया कि सिंह के परिवार के लिए केवल तीन कुर्सियां सामने की पंक्ति में रखी गईं। कांग्रेस नेताओं, सिंह की बेटियों और उनके परिवार के अन्य सदस्यों के लिए सीट की व्यवस्था की खातिर जद्दोजहद करनी पड़ी। उन्होंने कहा कि इस महान राजनेता के साथ इस अपमानजनक व्यवहार से सरकार की प्राथमिकताओं और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उसकी असंवेदनशीलता उजागर होती है। खेड़ा ने दावा किया कि हैरानी की बात यह रही कि जब भूटान के नरेश खड़े हुए, तो प्रधानमंत्री मोदी खड़े नहीं हुए। अंतिम संस्कार की रस्में निभाने वाले पोतों को चिता तक पहुंचने के लिए संघर्ष करना पड़ा तथा विदेशी राजनयिकों को कहीं और बैठाया गया और वे नजर नहीं आए। कांग्रेस के आरोपों पर भाजपा कैसे पीछे रह सकती थी। यह देखे बगैर की इस मुद्दे पर राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की भद्द पिटेगी, भाजपा पलटवार करने में पीछे नहीं रही। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कांग्रेस नेताओं पर प्रहार करते हुए कहा कि यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और वर्तमान अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे देश के पूर्व प्रधानमंत्री सम्मानीय मनमोहन सिंह जी के दुखद देहावसान पर भी राजनीति करने से बाज नहीं आ रहे हैं। कांग्रेस की इस घटिया सोच के लिए जितनी भी निंदा की जाए, कम है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने मनमोहन सिंह को जीते-जी कभी भी वास्तविक सम्मान नहीं दिया, लेकिन अब उनके सम्मान के नाम पर राजनीति कर रही है। इस विवाद में आम आदमी पार्टी भी कूद पड़ी। आप के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भी इस विषय को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि यह खबर सुनकर मैं स्तब्ध हूं कि भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी का अंतिम संस्कार निगमबोध घाट पर किया गया। इसके पूर्व भारत के सभी प्रधानमंत्रियों का अंतिम संस्कार राजघाट पर किया जाता था। केजरीवाल ने सवाल किया कि सिख समाज से आने वाले और पूरी दुनिया में ख्यातिप्राप्त 10 वर्ष भारत के प्रधानमंत्री रहे मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार और समाधि के लिए भाजपा सरकार 1000 गज जमीन भी न दे सकी? कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर आग्रह किया था कि सिंह का अंतिम संस्कार ऐसे स्थान पर होना चाहिए जहां उनका स्मारक भी बन सके। इस पर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने कहा था कि सरकार पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के स्मारक के लिए स्थान आवंटित करेगी। आश्चर्य यह है कि अतिविशिष्ट व्यक्तियों के स्मारक के बारे कायदे-कानून का फैसला मनमोहन सिंह की ही सरकार ने वर्ष 2013 में लिया था। इसके मुताबिक दिल्ली में वीवीआईपी के लिए अलग से कोई स्मारक नहीं होगा और राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्रियों जैसे दिवंगत राष्ट्रीय नेताओं के स्मारकों के लिए एक साझा परिसर बनाने का फैसला किया था। यूपीए सरकार ने राजघाट के पास अलग-अलग समाधियों के निर्माण पर रोक लगाने का फैसला लिया था। सिंह के समाधि स्थल को लेकर हायतौबा मचाने वाली कांग्रेस अपनी ही पार्टी के प्रधानमंत्री रहे नरसिम्हा राव की समाधि को लेकर किए गए बर्ताव को भूल गई। कांग्रेस की तत्कालीन मनमोहन सिंह सरकार राव के स्मारक के लिए 10 साल तक जगह नहीं दी गई थी। पूर्व प्रधानमंत्री राव के कांग्रेस अध्यक्ष रही सोनिया गांधी से राजनीतिक रिश्ते कभी सौहाद्रपूर्ण नहीं रहे। यही वजह रही कि कांग्रेस उनकी समाधि को लेकर उपेक्षा करती रही। साल 2014 में जब मोदी सरकार सत्ता में आई तब स्मारक बनाने का प्रस्ताव दिया गया। तत्कालीन केंद्रीय शहरी विकास मंत्री एम. वेंकैया नायडू ने इस पर तेजी से काम किया। ऐसा नहीं है कि अतिशिष्ट व्यक्तियों की समाधि स्थल को लेकर विवाद आगे नहीं होगा। केंद्र में सत्ता बदलने पर फिर ऐसी ही हास्यादपद हालात पैदा हो सकते हैं। बेहतर यही होगा कि ऐसे मुद्दों पर तुच्छ राजनीति से परे राजनीतिक दलों को मिल बैठ कर स्थायी हल ढूंढना चाहिए, ताकि दिवंगत की आत्मा को शांति मिले और ऐसे संवेदनशील मुद्दों पर जगहसाई से बचा जा सके। ■

With Best Compliments from

ECONOMIC TRANSPORT Co.

C/o Superstar Leasing Financing Ltd.

Gandhi market, Fazal ganj, Kanpur

(Fleet Owner & Transport Contractor)

Branches

Kanpur, Noida, Delhi, Gurgaon

वीर सावरकर के नाम पर दिल्ली यूनिवर्सिटी एक नया कॉलेज खोलने जा रही है। वीर सावरकर जैसे महान स्वाधीनता सेनानी के नाम पर कॉलेज खुलने से देश भर के नौजवान निश्चित रूप प्रेरित ही होंगे। इस बारे में किसी को किसी तरह का शक भी नहीं होना चाहिए। पर कांग्रेस को तकलीफ हो रही है। कांग्रेस को वीर सावरकर के नाम से ही हमेशा ही चिढ़ रहा है। अब कांग्रेस को कौन बताए कि वीर सावरकर, जिनका पूरा नाम विनायक दामोदर सावरकर था, भारत के स्वाधीनता आंदोलन के एक ही अत्यंत महत्वपूर्ण हस्ताक्षर थे। वे एक महान क्रांतिकारी, राष्ट्रवादी विचारक, लेखक और वकील थे। उनका जीवन और कार्य भारतीय इतिहास के एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी अध्याय का प्रतिनिधित्व करते हैं।

वीर सावरकर के नाम पर कॉलेज खुलने से क्यों खफा है कांग्रेस ?

हरिश्चन्द्र शर्मा

काश, सावरकर के नाम पर खुलने वाले कॉलेज का विरोध करने वाले वीर सावरकर के बारे में अपने महान नेत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की ही राय को जान लेते। इंदिरा गांधी जब भारत की सूचना और प्रसारण मंत्री थीं तब उन्हीं के निर्देश पर वीर सावरकर पर केंद्रित डाक्यमेंट्री फिल्म उनके विभाग ने बनाई थी। इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री रहते हुए सावरकर की स्मृति में डाक टिकट भी जारी हुआ। श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने निजी खाते से सावरकर स्मृति कोष के लिये 11 हजार रुपये का अंशदान भी किया था।

श्रीमती इंदिरा गांधी ने सावरकर को रिमार्केबल सन ऑफ इंडिया कहा था। इंदिरा गांधी ने 20 मई 1980 को पंडित बाखले, सचिव, स्वतंत्रवीर सावरकर राष्ट्रीय स्मारक के नाम से संबोधित चिट्ठी में सावरकर के योगदान का जिक्र किया था। इस पत्र में इंदिरा गांधी ने लिखा है, मुझे आपका पत्र 8 मई 1980 को मिला था। वीर सावरकर का ब्रिटिश सरकार के खिलाफ मजबूत प्रतिरोध हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के लिए काफी अहम है। मैं आपको देश के महान सपूत के शताब्दी समारोह के आयोजन के लिए बधाई देती हूं। मशहूर लेखक वैभव पुरंदरे ने अपनी किताब द ट्रू स्टोरी ऑफ फादर ऑफ हिंदुत्व में लिखा है कि इंदिरा गांधी का लिखा पत्र सत्य है। किताब में लिखा है कि इंदिरा गांधी ने 1966 में सावरकर के निधन पर गहरा शोक भी जताया था। इंदिरा गांधी ने सावरकर को महान क्रांतिकारी बताते हुए तारीफ की थी और एक बयान भी जारी किया था। इंदिरा गांधी ने कहा था कि सावरकर ने अपने कार्यों से पूरे देश को प्रेरित किया था। अफसोस कि कांग्रेसियों को सच जानने से कोई मतलब ही नहीं रहा। उन्हें तो मीन-मेख निकालनी है। इसलिए इतनी पुरानी पार्टी सिकुड़ती ही चली जा रही है। वीर सावरकर तो बचपन से ही देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत थे और उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विरोध में भाग लेना शुरू कर दिया था। सावरकर 1905 में श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा स्थापित इंडिया हाउस में शामिल होने के लिए लंदन चले गए। लंदन में, उन्होंने अभिनव भारत नामक एक गुप्त क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त करना था। उन्होंने 1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम नामक एक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने 1857 के सिपाही विद्रोह को भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम बताया। इस पुस्तक को ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था। सावरकर ने इटली के क्रांतिकारी नेता गिउसेप्पे मैजिनी से प्रेरणा ली और उनकी क्रांतिकारी विचारधारा को भारतीय संदर्भ में लागू करने का प्रयास किया। 1910 में, सावरकर को नासिक के जिला मजिस्ट्रेट जैक्सन की हत्या में शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। उन्हें दोषी ठहराया गया और 50 साल की

> आपको कोई पसंद नहीं तो ठीक है। खैर, वीर सावरकर कॉलेज खुलने से राजधानी में उस महान स्वाधीनता सेनानी के नाम पर महत्वपूर्ण प्रतीक स्थापित हो जाएगा। देर से ही सही राजधानी दिल्ली में अब वीर सावरकर का एक अहम प्रतीक स्थापित होने जा रहा है।

कारावास की सजा सुनाई गई। उन्हें अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में स्थित सेलुलर जेल में भेजा गया, जहाँ उन्होंने कई वर्षों तक कठोर यातनाएं सहीं। काला पानी में उन्होंने एकांत कारावास, कठोर श्रम और अमानवीय परिस्थितियों का सामना किया। कोल्हू में बेल की तरह जोतकर उनसे सूखे नारियल से तेल निकलवाया जाता था।

सावरकर ने भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया और अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाई। सावरकर हिंदू राष्ट्रवाद के एक प्रमुख पैरोकार थे। उन्होंने एक मजबूत और एकजुट हिंदू राष्ट्र की वकालत की। सावरकर ने जाति व्यवस्था और छुआछूत जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उन्होंने हिंदू समाज में सुधार लाने के लिए कई आंदोलन चलाए। वे एक कुशल वक्ता और लेखक थे। उनके भाषणों और लेखों ने लोगों को प्रेरित किया और उनमें देशभक्ति की भावना जगाई। सावरकर के गृह राज्य महाराष्ट्र में कई संगठन और संस्थान हैं जो उनके विचारों और कार्यों को बढ़ावा देते हैं। वीर सावरकर महाराष्ट्र में एक सम्मानित और प्रभावशाली व्यक्ति हैं, और उन्हें कई लोगों द्वारा एक महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक के रूप में याद किया जाता है। वीर सावरकर का एक शानदार चित्र पुराने संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में लगा हुआ था। उनके चित्र का 26 फरवरी, 2003 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने संसद भवन में अनावरण किया था। इसे चंद्रकला कुमार कदम ने बनाया था। जब वीर सावरकर का चित्र लगाने की पहल हुई तब भी कांग्रेस ने यह कहकर विरोध किया था कि वे सांसद नहीं थे। तब कांग्रेसी भूल गए थे कि लोकमान्य तिलक तथा महात्मा गांधी जैसे राजनीति व स्वाधीनता संग्राम में अहम योगदान देने वाले व्यक्ति भी तो सांसद नहीं थे। उनके त्याग व समर्पण को देखते हुए केन्द्रीय कक्ष में उनका चित्र स्थापित कर सम्मान दिया गया। कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने कुछ समय पहले वीर सावरकर पर गैर- जरूरी टिप्पणी अपमानजनक की थी। उनकी बयानबाजी से शिव सेना नेता उद्धव ठाकरे भी नाराज हो गए थे। उनहोंने तब कहा था हम स्वातंत्र्यवीर सावरकर के बारे में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के बयान से सहमत नहीं हैं। हमारे मन में सावरकर के लिए सम्मान है। आपको कोई पसंद नहीं तो ठीक है। खैर, वीर सावरकर कॉलेज खुलने से राजधानी में उस महान स्वाधीनता सेनानी के नाम पर महत्वपूर्ण प्रतीक स्थापित हो जाएगा। देर से ही सही राजधानी दिल्ली में अब वीर सावरकर का एक अहम प्रतीक स्थापित होने जा रहा है। ■

ज्यादा सोना हार्ट की सेहत के लिए सही नहीं

डॉ. हेमा सिंह भगौर

नींद हमारी मेंटल-फिजिकल हेल्थ के लिए बहुत जरूरी है। अगर कोई पर्याप्त नींद नहीं लेता है, तो इसकी वजह से स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ सकता है। खासकर, मेंटल हेल्थ काफी ज्यादा प्रभावित होती है। जैसे इसकी वजह से मूड स्विंग हो सकता है, अक्सर शरीर थकान से भरा रहता है और लो एनर्जी फील होती है। यहां तक कि अगर कोई बहुत दिनों तक नींद नहीं लेता है, तो इसकी वजह से उसे इल्यूजन, डिमेंशिय या अल्जाइमर जैसी बीमारियां भी हो सकती हैं। सीडीसी की मानें, तो एक वयस्क व्यक्ति को हर रोज कम से कम 7 घंटे की नींद जरूर लेनी चाहिए। जिस तरह कम सोना हमारे हेल्थ के लिए हानिकारक हो सकता है, इसी तरह ज्यादा सोना भी हमारे स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकता है। खासकर, अधिक सोने से हार्ट पर इसका नेगेटिव असर पड़ता है।

बहुत ज्यादा सोने का हार्ट हेल्थ पर नुकसानः विशेषज्ञों का कहना है कि न सिर्फ कम नींद बल्कि अधिक नींद भी हार्ट हेल्थ को नुकसान पहुंचा सकती है। इसलिए, आपको उतना ही सोना चाहिए जितना कि डॉक्टर परामर्श करते हैं। सवाल है, अधिक नींद किस तरह हार्ट हेल्थ पर नेगेटिव असर डालती है? **जानें-**

हार्ट डिजीजः यूरोपियन हार्ट जरनल में प्रकाशित एक अध्ययन की मानें, तो जो लोग 8-9 घंटे से अधिक सोते हैं, उन्हें हार्ट डिजीज होने का जोखिम अधिक होता है। हर व्यक्ति को उतना ही सोना चाहिए, जितना कि जरूरी समझा जाता है। इसे विस्तार से अध्ययन में समझाया गया है कि अधिक सोने से समय पूर्व मृत्यु, हार्ट डिजीज और ब्रेन में मौजूद ब्लड वेसल्स में दिक्कत का जोखिम बढ़ जाता है। हालांकि, जो लोग कम सोते हैं, उनमें भी इस तरह की समस्या देखी जाती है।

हार्ट स्ट्रोकः यूसीआई हेल्थ में प्रकाशित एक लेख की मानें, तो बहुत ज्यादा सोने से न सिर्फ हार्ट डिजीज का जोखिम बढ़ता है। यहां तक कि हार्ट स्ट्रो और हार्ट अटैक के रिस्क में भी बढ़ोत्तरी होती है। असल में, बहुत ज्यादा सोने की वजह से ब्लड प्रेशर के स्तर में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। यह कंडीशन डायबिटीज के मरीजों के लिए बिल्कुल सही नहीं है। वहीं, कोई मोटापे का शिकार है, तो उन्हें भी सीमित मात्रा में ही नींद लेनी चाहिए। अधिक नींद लेने से ब्लड शुगर का स्तर प्रभावित होता है, जो हार्ट स्ट्रोक या हार्ट अटैक को ट्रिगर कर सकता है।

कार्डियोवास्कुलर हेल्थः ब्रिटिश हार्ट फाउंडेशन में प्रकाशित रिपोर्ट की मानें, तो बहुत कम सोना और बहुत ज्यादा सोना, दोनों ही हार्ट हेल्थ के बिल्कुल सही नहीं है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नींद और हार्ट हेल्थ का आपस में गहरा कनेक्शन है। जैसा कि पहले ही जिक्र किया गया है कि अधिक नींद की वजह ब्लड प्रेशर का स्तर प्रभावित होता है। इससे हार्ट में ब्लड फ्लो पर असर पड़ सकता है। ऐसे में अगर व्यक्ति अपने नींद के पैटर्न में सुधार न करे, तो संभवतः डिजीज का रिस्क हो जाता है।

मोटापाः जो लोग बहुत ज्यादा सोते हैं, वे अक्सर मोटोप का शिकार होते हैं। यह कहने की जरूरत नहीं है कि मोटापा कई तरह की बीमारियों की जड़ है। इसमें डायबिटीज, थायराइड और हार्ट डिजीज भी शामिल है। अगर मोटापे से ग्रस्त व्यक्ति अपनी सेहत का ध्यान न रखे और बहुत ज्यादा नींद लेता रहे, तो ऐसे में हार्ट में ब्लड वेसल्स पर नेगेटिव असर पड़ सकता है। वहीं, अगर ब्लड प्रेशर का स्तर मैनेज न हुआ, तो हार्ट प्रॉब्लम का रिस्क बढ़ जाता है।

कोरोनरी हार्ट डिजीजः विशेषज्ञों का दावा है कि जो लोग 9-11 घंटे की नींद लेते हैं, उनमें कोरेनरी हार्ट डिजीज का जोखिम भी बढ़ जाता है। यह एक ऐसी समस्या है, जसमें कोरोनरी यानी धमनियां संकुचित हो जाती हैं, जिससे ब्लड फ्लो में दिक्कतें आने लगती हैं। कोई ज्यादा नींद लेता है, पर्याप्त एक्सरसाइज नहीं करता है और फिजिकल एक्टिविटी भी कम है, तो ऐसे में कोरोनरी हार्ट डिजीज को बढ़ावा दे सकती है। इसकी अनदेखी करना बिल्कुल सही नहीं है। ■

फ्रिज से आने वाली तेज स्मेल चुटकियों में होगी गायब

स्नेहलता शर्मा

अगर आपके फ्रिज से भी तेज स्मेल आती है, तो हम इस बदबू को हटाने के लिए उपाय खोजने लगते हैं। ऐसे में हम आपको ऐसी ट्रिक्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसकी मदद से आप फ्रिज से आने वाली स्मेल दूर हो जाएगी। अक्सर हम फ्रिज में किसी भी चीज को खराब होने से बचाने के लिए स्टोर करते हैं। लेकिन कई बार यह चीजें अधिक दिनों तक रखी रहने के कारण सड़ने लगती हैं। इसलिए समय-समय पर फ्रिज की साफ-सफाई करते रहना चाहिए। वरना फ्रिज खोलने पर बार-बार स्मेल आती है और फिर न तो फ्रिज में कुछ रखने का मन होता है और न निकालकर खाने का मन होता है। अगर आपके फ्रिज से भी ऐसी ही तेज स्मेल आती है, तो हम इस बदबू को हटाने के लिए उपाय खोजने लगते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसी ट्रिक्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसकी मदद से आप फ्रिज से आने वाली स्मेल को चुटकियों में दूर कर सकते हैं।

ओटमील से दूर करें स्मेल

अक्सर सुबह के नाश्ते में लोग ओट्स खाते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इन ओटमील की सहायता से आप फ्रिज की तेज स्मेल को कुछ देर में गायब कर सकती हैं। सुबह के नाश्ते में खाए जाने वाले हेल्दी ओट्स सेहत के लिए काफी फायदेमंद होते हैं और साथ ही यह फ्रिज से आने वाली स्मेल को भी दूर कर सकते हैं। इसके लिए आपको किसी एल्युमिनियम के बर्तन में ओट्स को रखना है। फिर आप देखेंगे कि कुछ ही देर में फ्रिज की स्मेल एकदम गायब हो जाएगी।

व्हाइट विनेगर

आप स्नैक्स और अचार में इस्तेमाल होने वाले व्हाइट विनेगर की मदद से भी फ्रिज की दुर्गंध को मिटा सकती हैं। इसके लिए आप एक कटोरी या गिलास में विनेगर को निकालकर खुला फ्रिज में रख दें। स्मेल पूरी तरह खत्म हो जाएगी।

अखबार को रोल करके रखें

अगर आप फ्रिज की स्मेल हटाना चाहते हैं तो इसके लिए कई सारे अखबार को रोल बनाकर फ्रिज में रखें। बता दें कि इस ट्रिक से फ्रिज की बदबू दूर हो जाएगी।

वेनिला एसेंस

वेनिला एसेंस में रुई के फाए को भिगोकर करीब 24 घंटे के लिए फ्रिज में छोड़ दें। ऐसे में जब आप

फ्रिज खोलेंगे तो वह महक उठेगा।

बेकिंग सोडा का पानी

फ्रिज की गंदी स्मेल को दूर करने में बेकिंग सोडा सहायक है। एक कटोरी में बेकिंग सोडा को पानी में घोलकर इसमें थोड़ा सा सिरका मिलाकर रख दें। अब एक घंटे बाद फ्रिज से स्मेल गायब हो जाएगी।

फ्रिज की सफाई

इसके अलावा आप समय-समय पर फ्रिज की सफाई करते रहें। साथ ही चीजों को चेक करती रहें कि कोई चीज खराब तो नहीं हो रही है। इसलिए आप फ्रिज में आने वाली दुर्गंध को खत्म कर सकते हैं। ■

हेयर फॉल को रोकने के लिए लोग केमिकल बेस्ड महंगे-महंगे हेयर ऑइल का इस्तेमाल करते हैं। जिससे बाल और भी ज्यादा डैमेज होते हैं। ऐसे में आपको कम से कम एक बार घर पर इस नेचुरल तेल को बनाकर बालों में अप्लाई करना चाहिए।

हेयर फॉल रोकने के लिए घर पर बनाएं मेथी और प्याज का तेल

नीतू शर्मा

आपको कम से कम एक बार घर पर इस नेचुरल तेल को बनाकर बालों में अप्लाई करना चाहिए। बता दें कि घर पर केमिकल फ्री हेयर ऑयल को बनाना बहुत आसान है। मेथी और प्याज दोनों ही हमारे बालों के लिए फायदेमंद होता है। अक्सर लोग हेयर फॉल की समस्या से जूझते रहते हैं। हेयर फॉल को रोकने के लिए लोग केमिकल बेस्ड महंगे-महंगे हेयर ऑइल का इस्तेमाल करते हैं। जिससे बाल और भी ज्यादा डैमेज होते हैं। ऐसे में आपको कम से कम एक बार घर पर इस नेचुरल तेल को बनाकर बालों में अप्लाई करना चाहिए। बता दें कि घर पर केमिकल फ्री हेयर ऑयल को बनाना बहुत आसान है। मेथी और प्याज दोनों ही हमारे बालों के लिए फायदेमंद होता है। ऐसे में आप इस तेल को अपने हेयर केयर रूटीन में शामिल कर अपने बालों को लंबा और घना बना सकती हैं। इस तेल से आपका हेयर हेल्थ भी काफी हद तक इंप्रूव हो सकता है। तो आइए जानते हैं इस तेल के फायदे और इसे बनाने के तरीके के बारे में...

मेथी दाने और प्याज का मिक्सचर

घर पर हेयर ऑयल बनाने के लिए आपको 2 चम्मच मेथी दाने और एक मीडियम साइज की प्याज लें। इन दोनों ही चीजों का मिक्सचर बालों की सेहत के लिए काफी अच्छा माना जाता है। इस तेल को बनाने के लिए सबसे पहले मेथी दाने को रातभर के लिए पानी में भिगोकर छोड़ दें और प्याज को बारीक-बारीक काट लें।

ऐसे बनाएं ये तेल

सबसे पहले भीगे हुए मेथी के दाने और बारीक कटे प्याज को अच्छे से पीस लें और इस स्मूद पेस्ट को वर्जिन कोकोनट ऑइल में करीब 10-15 मिनट तक पकाएं। अब इस तेल को ठंडा होने के बाद छान लें और इस तेल को बालों में अप्लाई करें। बालों में तेल को अप्लाई करने के बाद हेयर वॉश कर लें।

मिलेंगे बहुत सारे फायदे

बता दें कि बेहतर रिजल्ट पाने के लिए आप सप्ताह में दो बार इस तेल का इस्तेमाल कर सकती हैं। वहीं इस तेल का रेगुलर इस्तेमाल करने से आपके बाल लंबे और घने हो सकते हैं। इस तेल के इस्तेमाल से आपको बालों संबंधित समस्याओं से निजात मिल सकता है। आप मेथी दाने और प्याज से बने इस तेल का इस्तेमाल कर आप हेयर हेल्थ को काफी हद तक इंप्रूव कर सकती हैं। ■

रहस्यों से भरा है उत्तराखंड का ये खूबसूरत हिल स्टेशन, कहा जाता है 'परियों का देश'

सपना शर्मा

अगर आप भी शहर के शोर-शराबे से दूर किसी शांत वातावरण में सुकून के दो पल बिताना चाहते हैं, तो आज हम आपको उत्तराखंड की एक ऐसी जगह के बारे में बताने जा रहे हैं, जो बेहद खूबसूरत होने के साथ-साथ रहस्यमयी भी है। उत्तराखंड को देवभूमि कहा जाता है और इस राज्य में घूमने के लिए एक से बढ़कर एक कई बेहतरीन जगहें हैं। इस राज्य की खूबसूरती को पास से देखने के लिए न सिर्फ देश बल्कि विदेशों से भी टूरिस्ट्स की अच्छी खासी तादाद आती है। लेकिन कई बार हम सभी इस खूबसूरत जगहों के पीछे छिपे रहस्यों को जानकर हैरान रह जाते हैं। ऐसे में अगर आप भी शहर के शोर-शराबे से दूर किसी शांत वातावरण में सुकून के दो पल बिताना चाहते हैं, तो आज हम आपको उत्तराखंड की एक ऐसी जगह के बारे में बताने जा रहे हैं, जो बेहद खूबसूरत होने के साथ-साथ रहस्यमयी भी है।

जन्नत से की जाती है तुलना

उत्तराखंड में स्थित इस छोटे से हिल स्टेशन की खूबसूरती की तुलना स्वर्ग से की जाती है। इस हिल स्टेशन का नाम खैट पर्वत है। खैट पर्वत को परियों का देश भी माना जाता है। ऐसे में आप भी बेहद कम बजट में उत्तराखंड के गढ़वाल जिले में स्थित थात गांव के इस हिल स्टेशन को एक्सप्लोर करने के लिए आ सकते हैं।

रहस्यों के लिए भी फेमस है ये जगह

यहां पर रहने वाले स्थानीय लोगों की मानें, तो इस जगह पर परियां दिखती हैं। बताया जाता है कि इस जगह पर नजर आने वाली परियां थात गांव की रक्षा भी करती हैं। तो वहीं कुछ लोग इन परियों को योगिनियां और वनदेवियां भी कहते हैं। वहीं इस गांव के पास स्थित खैटखाल मंदिर को भी बेहद रहस्यमयी माना जाता है।

यहां जून में लगता है मेला

आपको बता दें कि इस गांव में जून के महीने में मेले का आयोजन किया जाता है। हरियाली से घिरा ये गांव आपका तनाव दूर करने में सहायक हो सकती है। वहीं अगर आप चाहें तो यहां पर कैंपिंग भी कर सकते हैं। हालांकि इस बेहद खूबसूरत गांव में शाम को 7 बजे के बाद कैंप से बाहर निकलने की परमिशन नहीं है। इसके अलावा यहां पर म्यूजिक बजाने पर भी रोक है, माना जाता है कि परियों को शोर-शराबा पसंद नहीं है। ■

क्या फिर होगा उस्ताद जाकिर हुसैन जैसा तबला वादक

उस्ताद जाकिर हुसैन के निधन से सारा देश और उनके सारे संसार में रहने वाले प्रशंसक उदास हैं।

अभी कल ही तो अमेरिका के कैलिफोर्निया प्रांत के सानफ्रांसिस्को शहर के एक कब्रिस्तान में उनके मृत शरीर को सुपुर्द ख़ाक कर दिया गया। भरे मन से विश्व भर के सैकड़ों प्रसंशक उस्ताद जाकिर को मिट्टी देने पहुँचे। उनके प्रशंसकों का तो यही कहना है कि उनके जैसा तबला वादक फिर कभी नहीं होगा? यह तो भविष्य ही बताएगा? परंतु, अब उस्ताद जाकिर हुसैन, पंडित शिव कुमार शर्मा और पंडित हरि प्रसाद चौरसिया की जुगलबंदियां वाकई में सबको याद आएंगी। ये युगलबंदियाँ वाकई कमाल की होती थीं।मैंने तो अपने युवावस्था में पड़ना के गर्दनीबाग मैदान में दशकों तक हर वर्ष दुर्गापूजा के अवसर पर इन महान कलाकारों के आयोजनकर्ताओं में एक रहा हूँ और इनसभी के संघर्ष के दिनों को करीबी से देखा है।

डॉ. आर.के. सिन्हा

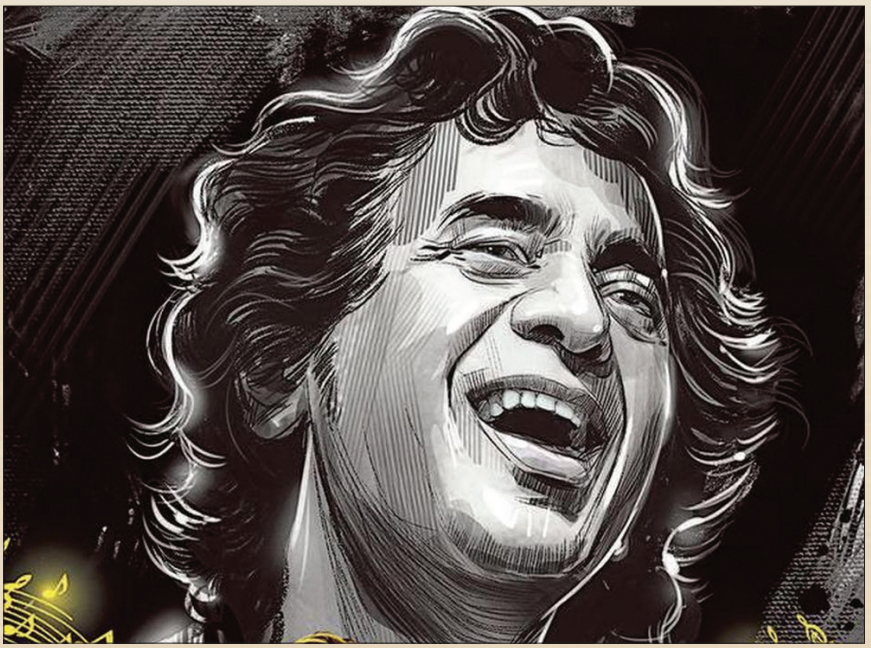

क्या उनके जैसा तबला वादक फिर कभी नहीं होगा? यह कहना तो सही नहीं होगा कि उनके जैसा कोई और नहीं होगा। संगीत एक ऐसी चीज है जो हमेशा अपने ढंग से विकसित होती ही रहती है। हो सकता है कि भविष्य में कोई ऐसा तबला वादक भी आए जो अपनी प्रतिभा और मेहनत से जाकिर हुसैन की याद दिला दे। लेकिन, अभी के लिए, यह कहना सही ही होगा कि उस्ताद जाकिर हुसैन जैसा तबला वादक फिर से पैदा होना मुश्किल होगा। वे एक अद्वितीय और महान कलाकार थे।

अब उस्ताद जाकिर हुसैन, पंडित शिव कुमार शर्मा और पंडित हरि प्रसाद चौरसिया की जुगलबंदियां वाकई में याद आएंगी। वह कमाल की होती थीं। इन दिग्गजों का साथ-साथ मंच पर आना ही अपने आप में एक अद्भुत अनुभव होता था। उस्ताद जाकिर हुसैन तबले के उस्ताद थे, और उनकी लयकारी का कोई मुकाबला नहीं था। पंडित शिव कुमार शर्मा संतूर बजाते थे, जो एक मधुर और अद्वितीय वाद्य है। पंडित हरि प्रसाद चौरसिया बांसुरी के जादूगर है, और उनकी बांसुरी की धुनें मन को मोह लेती हैं। जब ये मंच पर आते, तो लय, ताल और मधुरता का एक अद्भुत संगम होता था। इन कलाकारों के बीच एक अद्भुत सामंजस्य भी था। वे एक-दूसरे की कला का सम्मान करते और एक-दूसरे के साथ संवाद करते हुए संगीत बनाते। उनकी जुगलबंदी सिर्फ एक साथ बजाना मात्र नहीं थी, बल्कि एक-दूसरे के साथ संगीत की एक महान यात्रा पर निकलना जैसा था।

इनकी जुगलबंदियों में भावनात्मक गहराई भी होती थी। वे अपने संगीत के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते थे, और श्रोता भी उनसे जुड़ जाते थे। उनके संगीत में खुशी, गम, प्यार, और शांति जैसे विभिन्न भावों का अनुभव होता था। इन तीनों कलाकारों की जुगलबंदियां भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक अनमोल विरासत के रूप में याद रखी जाएँगी। उन्होंने दुनिया भर में भारतीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी जुगलबंदियां भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में हमेशा याद रखी जाएंगी। मेरा मानना है कि उस्ताद ज़ाकिर हुसैन और पंडित शिवकुमार शर्मा की जुगलबंदी भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में एक अद्भुत और अद्वितीय घटना थी। दोनों ही अपने-अपने वाद्य यंत्रों के महारथी थे। जब ये दोनों मंच पर एक साथ आते थे, तो एक ऐसा जादुई माहौल बन जाता था जो श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देता था। जाकिर हुसैन की तबले की थाप और शिवकुमार शर्मा के संतूर की मधुर ध्वनियाँ एक साथ मिलकर एक ऐसा लयबद्ध मिश्रण बनाती थीं, जो सुनने में बेहद सुखद होता था। दोनों कलाकार एक-दूसरे की लय को अच्छी तरह समझते भी थे और उसके साथ तालमेल बिठाते हुए संगीत को एक नई ऊँचाई पर ले जाते थे। उनकी जुगलबंदी केवल संगीत नहीं थी, बल्कि एक आत्मिक संवाद थी। ऐसा लगता था जैसे दोनों कलाकार अपने-अपने वाद्य यंत्रों के माध्यम से एक-दूसरे से बातें कर रहे हों। कभी तबले की तेज़ गति संतूर की मधुर तान के साथ बात करती थी, तो कभी संतूर की धीमी लय तबले की जोरदार थाप के साथ संवाद करती थी। उनकी जुगलबंदी में भावनाओं की गहराई होती थी। वे अपने संगीत के माध्यम से श्रोताओं को एक अलग ही भावनात्मक या यूँ कहें कि आध्यात्मिक दुनिया में ले जाते थे। दोनों कलाकार अपने-अपने वाद्य यंत्रों के उस्ताद थे और उनकी कलात्मकता का कोई जवाब नहीं था। जाकिर हुसैन की उंगलियां तबले पर ऐसे थिरकती थीं जैसे कोई जादू कर रही हों, और शिवकुमार शर्मा अपने संतूर से ऐसे मीठे स्वर निकालते थे, जो सीधे दिल को छू जाते थे। जाकिर हुसैन की लय और ताल पर गजब की पकड़ थी। वे मुश्किल से मुश्किल तालों को भी आसानी से बजा लेते थे। वह तबला बजाते समय नए-नए प्रयोग करते रहते थे, जिससे उनकी प्रस्तुति हमेशा ताज़ा और दिलचस्प लगती थी। जाकिर हुसैन के तबले की धुन में एक अलग ही भावना होती थी, जो सुनने वाले को छू जाती थी। जाकिर हुसैन ने तबला वादन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। उन्होंने दुनिया भर के कई कलाकारों के साथ काम किया और तबले को एक वैश्विक वाद्य यंत्र बनाया। पंजाब घराने से संबंध रखने वाले जाकिर हुसैन अपनी जटिल और बारीक लयकारी के लिए जाने जाते थे। वे मुश्किल तालों को भी सहजता से बजाते। उनकी लय में एक अद्भुत प्रवाह होता, जो संगीत को जीवंत और गतिशील बनाता। वे अपनी उंगलियों को तबले पर इस तरह चलाते जैसे कोई जादू कर रहे हों। जाकिर हुसैन हमेशा नई-नई लय और तालों का प्रयोग करते रहते, जिससे उनका संगीत हमेशा नया और रोमांचक लगता। मैंने जाकिर हुसैन के कार्यक्रमों को दिल्ली और पटना में अनेकों बार निकटता से देखा है। वे हर बार छा जाते थे। उनके तबले से निकलने वाली हर ध्वनि स्पष्ट और सटीक होती थी। वे तबले के विभिन्न हिस्सों से अलग-अलग तरह की आवाजें निकालने में माहिर थे। उनकी उंगलियां तबले पर इतनी तेजी से चलती थीं कि देखने वाले भी हैरान रह जाते। वे अपनी अंगुलियों से विभिन्न तरह के बोल और लय बजाते। वह तबले के साथ संवाद करते हुए महसूस होते। इस तरह से लगता था कि मानो उनकी उंगलियां तबले से जैसे कोई कहानी कह रही हों। जाकिर हुसैन शिखर पर अपनी कड़ी मेहनत के बल पर पहुंचे थे। वे अंत तक हर दिन रियाज करते, जिससे उनकी कला में निखार बना रहे। उनकी संगीत में जान बसती थी। उनका जुनून उनके प्रदर्शन में साफ दिखाई देता था। जाकिर हुसैन हमेशा नई चीजों को सीखने और प्रयोग करने के लिए तैयार रहते। उन्होंने अलग-अलग संगीत शैलियों में भी काम किया, जिससे उनका संगीत और भी समृद्ध हुआ। जाकिर हुसैन ने दुनिया भर के कई प्रसिद्ध संगीतकारों के साथ काम किया। उन्होंने विभिन्न संस्कृतियों के संगीत को मिलाकर एक नया रूप दिया। वे भारतीय संगीत के राजदूत थे। उन्होंने पूरी दुनिया में भारतीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इतने बड़े कलाकार होने के बावजूद जाकिर हुसैन बहुत ही सरल और विनम्र स्वभाव के थे। वह हमेशा दूसरों का सम्मान करते। इससे उनके प्रति सम्मान का भाव और बढ़ जाता था। वह युवा संगीतकारों के लिए प्रेरणा थे। उनसे सीखकर कई युवा तबला वादक आज अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। ■

MOVIE REVIEW: BABY JOHN
बेहतरीन फिल्में बना रहे हैं वरुण धवन

अविनाश वर्मा

बेबी जॉन एक परफेक्ट एंटरटेनर है, जो इमोशन्स, एक्शन, म्यूजिक और हंसी से भरी हुई है। यह फिल्म वरुण धवन के लिए एक शानदार सफलता है और बॉलीवुड के लिए एक नया स्टैंडर्ड सेट करती है। वरुण धवन की फिल्म बेबी जॉन ने इस साल बॉलीवुड में अपनी पहचान बनाई है। इमोशन्स, एक्शन, म्यूजिक और मसालेदार एंटरटेनमेंट का बेहतरीन मिश्रण, होने के साथ इस फिल्म में दर्शकों के लिए एक खास संदेश भी है। बेबी जॉन पूरी तरह से एक फैमिली एंटरटेनर है, जिसे हर उम्र के लोग एंजॉय कर सकते हैं। मुराद खेतानी, प्रिया एटली और ज्योति देशपांडे द्वारा प्रोड्यूस और कलीस द्वारा डायरेक्ट की गई इस फिल्म में एटली की खास स्टाइल साफ दिखाई देती है। यह फिल्म बड़े पैमाने पर बनाई गई है और साथ ही इसमें इमोशन की गहरी समझ भी नजर आती है। महिला सुरक्षा पर आधारित इस फिल्म का संदेश बहुत प्रभावशाली है, और इसे जवान, कबीर सिंह और भूल भुलैया के मेकर्स से ही उम्मीद की जा सकती थी। यह बिना किसी शक के वरुण धवन का सबसे बेहतरीन परफॉर्मेंस है। पुलिस अफसर सत्या के रोल में उन्होंने एक प्यार करने वाले पिता और मजबूत संरक्षक का जो किरदार निभाया है, वह बहुत ही शानदार है। उनकी और जारा (फिल्म में उनकी बेटी का किरदार) की स्क्रीन पर केमिस्ट्री बहुत दिल जीत लेती है। जारा सच में एक बड़ा सरप्राइज है—उसकी मासूमियत और चार्म स्क्रीन पर बहुत अच्छा लगता है, और यही बाप-बेटी का रिश्ता फिल्म का दिल बन जाता है। इसके अलावा, वरुण धवन और राजपाल यादव की जोड़ी फिल्म में ह्यूमर लाती है। जैकी श्रॉफ ने फिल्म में विलन के रूप में बहुत शानदार काम किया है। उनकी अदाकारी ने फिल्म को और भी गहरा और प्रभावशाली बना दिया है। कीर्ति सुरेश ने भी अपने रोल को खूबसूरती से निभाया है और उसके साथ पूरी तरह से न्याय किया है। वामिका गब्बी ने भी अपनी एक्टिंग से दर्शकों का ध्यान खींचा है, और उनके एक्शन सीन भी बेहद अच्छे थे। फिल्म के अंत में सलमान खान का कैमियो एक बेहतरीन जोड़ था, जिसने फिल्म को और भी आकर्षक बना दिया। थमन का बैकग्राउंड स्कोर हर दृश्य को और भी खास बना देता है। नैन मटक्का और बंधोबस्त गाने सुनते ही दिल धड़कने लगता है और नाचने का मन करता है। डायरेक्टर कलीस ने फिल्म में इमोशन्स की गहराई को बखूबी दिखाया है। बच्चों की तस्करी जैसे

गंभीर मुद्दे को बड़ी संवेदनशीलता और सोच समझ के साथ फिल्म में दिखाया गया है, जो निश्चित ही दर्शकों के बीच चर्चा का हिस्सा बनेगा। बेबी जॉन एक परफेक्ट एंटरटेनर है, जो इमोशन्स, एक्शन, म्यूजिक और हंसी से भरी हुई है। यह फिल्म वरुण धवन के लिए एक शानदार सफलता है और बॉलीवुड के लिए एक नया स्टैंडर्ड सेट करती है। इस छुट्टियों में इसे देखना न भूलें! फिल्म जिओ स्टूडियोज और ए फॉर एप्पल के बैनर तले सिने 1 स्टूडियोज द्वारा प्रस्तुत की गई है, और अब यह सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है। ■

मूवी रिव्यू: बेबी जॉन

डायरेक्टर: कलीस

कास्ट: वरुण धवन, जैकी श्रॉफ, कीर्ति सुरेश, वामिका गब्बी

ड्यूरेशन: 164 मिनट 01 सेकंड

रेटिंग: 3.5/5

युद्ध का अर्थशास्त्र

आर्थिक संकट का जनक?

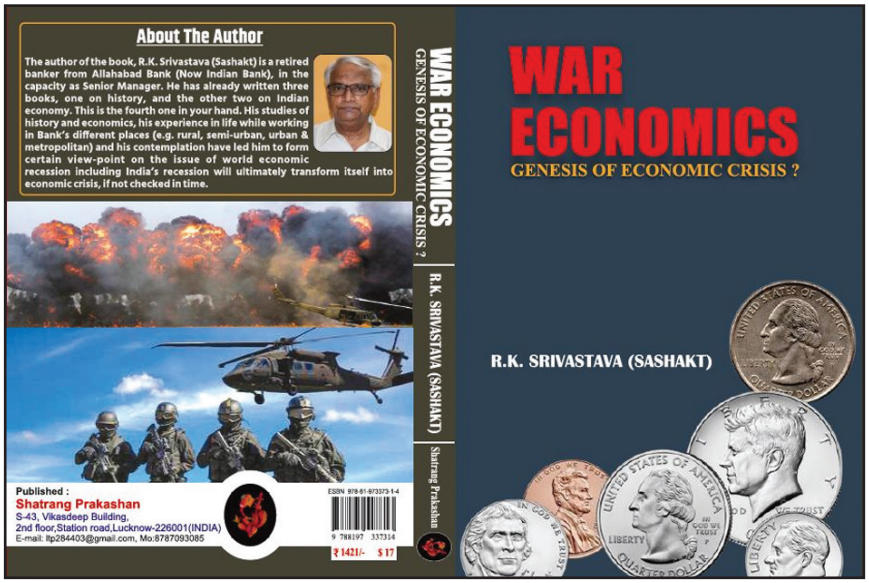

एनएमपी वर्मा

लेखक आरके श्रीवास्तव की नवीन पुस्तक युद्ध का अर्थशास्त्र वर्तमान समय की सच्चाई को रेखांकित काती है। लेखक एक नवीन पृष्ठभूमि की खोज करता हुआ प्रतीत होता है, या यूं कहे कि वह आर्थिक मंदी व आर्थिक संकट के प्रचलित सिद्वातों के क्षेत्र में एक नवीन व अधिक गहरी हल रेखा खींचना चाहता है आर्थिक मंदी व आर्थिक संकट आज भी विश्व देशों में एक खतरा बना हुआ है, यद्यपि इसके निदान हेतू जान मेनार्ड कींस ने लगभग 100 वर्षो पूर्व ही एक सिद्वांत हमें दिया था। कींस का यह आर्थिक सिद्वान्त, जोकि 1930 के आर्थिक संकट के कारणों की खोज से सम्बधित है। हमें बताता है कि आर्थिक संकटों का मूल कारण सकल मांग में कमी होना है और यह सिद्वांत अभी भी उपयोगी है। हालाकि वर्तमान में सरकारें इस सिद्वांत सें भली भाति अवगत है और वें समय समय पर ऐसें कदम उठती रहती है जिससें कि सकल मॉग में गिरावट न आनें पायें, फिर भी आर्थिक मंदी व आर्थिक संकट का खतरा अक्सर अपना सिर उठाता रहता है। इस पुस्तक में लेखक आर्थिक मंदी व आर्थिक संकटों और आधुनिक युद्वों व युद्व की तैयारियों पर होने वाले खर्चों के मध्य एक सीधा सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है। लेखक के अनुसार आधुनिक युद्व अब बहुत मंहगें व उच्चतम तकनीक युक्त हो गये है जब कि आज से 100 वर्ष पूर्व ऐसा नहीं था। जैसे-जैसे विज्ञान व तकनीकी का विकास व विस्तार होता गया, उसी के अनुरूप युद्व मशीनें व हथिहार भी विकसित होते गये। इसका सीधा परिणाम यह हुआ कि इन उच्च तकनीकी युद्व मशीनें व हथिहारों का उत्पादन क्रय व रखरखाव पर खर्च आसमान छूनें लगा। जहॉ एक ओर इससे सरकारी खजाने व करदाता जनता पर आर्थिक बोझ बहुत अधिक बढता गया, वहीं दूसरी ओर इसने मुद्रा स्फीती को भी बढ़ाया, क्योंकि यह अनउत्पादक खर्च की श्रेणी में आता है। इस प्रकार सें यह खर्च एक दुघारी तलवार साबित हुआ जो दोहरा धाव करता है एक तरफ युद्व खर्च आम जनता पर करों का बोंझ बढाता है, वहीं दूसरी ओर यह मुद्रा स्फीती को प्रोत्साहित करता है। जिसके कारण मूल्यों मे वृद्वि होती है और आम जनता की आम व क्रय शक्ति घटती है। लेखक द्वारा प्रस्तुत विपरीत दिशा गुणक (Negative Multiplier) तथा शून्य त्वरक (Zero Accelerator) की अवधारणा, भारतीय अर्थव्यवस्था के सन्दर्थ में एक अभिनव प्रस्तुतीकरण है और इसको और गहराई से जॉचने परखने की आवश्यकता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में असंगठित वर्गो निरंतर गिरती वास्तविक आय तथा लगभग स्थिर औधोगिक क्षेत्र, विशेष रूप सें विनिर्माणक्षेत्र, इस तत्थ को दर्शाता है कि लेखक की उक्त आवधारणा सही है। अंन्तिम बात जो लधु नहीं है। यह है कि लेखक ने अपनी पुस्तक में एक स्वरूप व सम्पन्न भारतीय अर्थव्यवस्था हेतु तीन मानदंड निरूपति किये है जो कि निम्न प्रकार है।

1. **भारत में एक आदर्श जनसख्या को बनायें रखना जो कि हमारे देश के प्राकृतिक संसाधनों के अनुरूप हो लेखक ने यह संख्या 50.55 करोड़ लोगों को निधार्रित की है।**

2. **भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि को समावेशी होना।**

3. **अनउत्पाद खर्चो की न्यूनतम स्तर पर रखना (युद्व, युद्व-तैयारी का खर्च अनउत्पाद खर्चा की श्रेणी में आता है)**

यह एक अभिनव विचार है जिसकी प्रशांसा की जानी चाहिए। यह पुस्तक अर्थशास्त्रियों, शिक्षाविदों व विद्यार्थियों का ध्यान केवल भारत में ही नही वरन विश्व में आकर्षित करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। पुस्तक मूल रूप से अग्रेंजी भाषा में लिखी गई है।■

अर्थशास्त्र विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, लखनऊ

पुस्तक
युद्ध अर्थशास्त्र

लेखक
आरके श्रीवास्तव

प्रकाशित
शतरंग प्रकाशन
एस-43, विकासदीप बिल्डिंग,
दूसरी मंजिल, स्टेशन रोड,
लखनऊ-226001

बुढ़ापे का प्रेम

कंक्रीट से सना बदन, काम करती वह सुंदर सी ग्वालिन, धूलधूसरित भी थी, गजब की सुंदरता डाली थी ऊपर वाले ने उसमें! सबसे अच्छे सांचे में ढाल कर बनाया गया था उसे! कान्हा राष्ट्रीय उद्यान का घना जंगल, उसी जंगल के मध्य जहां बीसों किलोमीटर दूर - दूर तक कोई गांव नहीं था। उस गांव में आदिवासी, ग्वालों, पवारों, टेंम्भरे जातियों की बस्ती थी। सरकारी काम जंगल में चल रहा था, कंक्रीट से जंगली नालों में बांध, चेकडैम बनाकर पानी को रोक रहे थे, ताकि कटान नहीं हो, पेड़ भी सुरक्षित रहें, पानी का भी संचय हो! उस काम का मुंशी साठ साल का प्रौढ़ था; रामजस मुंशी! जो अभी भी सुंदर, चुस्त - दुरुस्त लगता था। कहते हैं उम्र , समय किसका मोहताज होता है। रामजस भी बहुत दिलफेंक मुंशी था।

डॉ. सतीश बब्बा

उस ग्वालिन का नाम मुंशी हाजिरी बनाने में जान गया था; ऐसा स्वाभाविक भी था। उस ग्वालिन का नाम था, सुमन; यथो नाम: तथो गुण:! सुंदर गुलाबी सुमन थी वह, नाक नक्श सांचे में ढाला था, बनाने वाले ने! उसके ओंठ पके कुंदरू की तरह गुलाबी थे। सुमन को उस मुंशी ने देखा तो उसे वह बहुत अच्छी लगी थी। सुमन की बोली भी कोयल के जैसी मीठी लगती थी। मुंशी उससे बात करने में दिलचस्पी रखने लगा था। सुमन ने कहा था कि, मुंशी जी, आप हमारा नंबर ले सकते हैं, जब आप फोन लगाएंगे हम बात करेंगे! नंबर रामजस ने ले लिया था। रोज रात में नौ बजे से दस बजे तक बातें होने लगी थीं। सुमन रामजस को अंकल कह रही थी। रामजस ने कहा था कि, अंकल कहना मुझे अच्छा नहीं लगता है! सुमन ने कहा था कि, अंकल नहीं तो क्या कहूं, अंकल जी! रामजस ने कहा, अपने सामने, फोन पर मुझे रामजस कह सकती हो! सबके सामने मुंशी जी कहा करो न! एक दिन रामजस ने सुमन से पूछा, तुम्हें, क्या - क्या पसंद है खाने में? सुमन ने बताया था कि, मैं सबकुछ खा लेती हूं, मुझे आलू गोभी की सब्जी ज्यादा पसंद है! रामजस ने पूछा कि, सुमन जी, चिकन - मटन भी खाती हो! सुमन ने फोन पर जोरदार आवाज में कहा था कि, हम जंगली हैं, मुंशी जी! जब कभी मैं भी खा लेती हूं!

रामजस पूरी तरह से शाकाहारी था। उसने सुमन से कहा कि, सुमन, क्या तुम शराब भी पीती हो? सुमन ने कहा था कि, नहीं मुंशी जी, मैं शराब से दूर रहती हूं; पापा मेरे पीते हैं तो मैं क्या कर सकती हूं! रामजस ने कोई फर्क नहीं माना क्योंकि जब कोई मन को भा जाता है, तब कोई फर्क भी नहीं पड़ता है। सदा - सदा से प्रेम को अंधा भी कहा जाता रहा है। रामजस ने पूछा, तुम शादी कैसी करना चाहोगी? सुमन ने कहा, क्या मतलब! मैं समझ नहीं पा रही हूं! रामजस ने कहा, मेरे कहने का मतलब है प्रेम की शादी, अपने मन की या घर परिवार के पसंद की! सुमन हंसने लगी थी। सुमन के हंसने से लग रहा था जैसे, कोयल कू कू कू करके फूल झाड़ रही हो! रामजस ने कहा, इसमें हंसने की क्या बात है? हंसने का मतलब मुझे भी समझाओ! सुमन रामजस को समझाने, उत्तर देने के बजाय प्रश्न कर दिया, मुंशी जी, यह बताओ प्रेम कैसा होना चाहिए? रामजस ने कहा, सुमन, प्रेम तो देने का नाम है, कुछ लेने का नहीं! प्रेम तो दुनिया की सभी खूबसूरती में से भी खूबसूरत होता है। अब तुम बताओ ना, प्रेम कैसा होना चाहिए; कैसा होता है!

सुमन गंभीर हो गई थी। सुमन ने कहा, प्रेम तो राधा - कृष्ण की तरह होना चाहिए! पता नहीं रामजस सुमन की इस गहराई को समझ सका था या नहीं, रामजस के दिल में तो सुमन के लिए प्रेम बहुत गहरा होता चला गया था। सुमन से रामजस ने कहा, सुमन तुम्हें जब किसी चीज की जरूरत हो नि:संकोच मांग लेना! सुमन ने कहा था कि, ठीक है, आप बताइए क्या चाहिए आपको? रामजस ने कहा, मुझे कुछ भी नहीं चाहिए, बस तुम फोन लगाकर बात कर लिया करो, वीडियो काल हो नहीं सकती है! जब भी तुम मिसकॉल करोगी मैं लगा लूंगा! सुमन ने कहा, मेरा छोटा मोबाइल है, इससे थोड़ा दिक्कत होती है! काम का पैसा घरवालों को देना पड़ता है! रामजस ने कहा, एक मोबाइल ले लो, कुछ मैं मदद कर दूंगा! सुमन ने कहा, मुंशी जी, मेला देखने चलेंगे, यहां छ या सात दुकानें रहती हैं! रामजस जानता था कि, इस जंगली इलाके में और कितनी दुकानें आ सकती हैं। उसने देखा मेला के बहाने कुछ सुमन को खरीद भी देंगे! रामजस ने कहा, जरूर चलेंगे, मैं भी अब अपने गांव नहीं जाऊंगा, मेला ही चलेंगे?!

हंसते बतियाते हुए रात की बात होती रही, दिन में तो लेवर मुंशी के बीच की रेखाएं लांघना संभव नहीं था। कुछ बातें औपचारिक हो जाती रही थीं। संभवत: प्रेम त्याग है, प्रेम लालच से परे है, प्रेम दिल का एक अहम हिस्सा है। प्रेम का दायरा पृथ्वी, चांद - सूरज से भी बड़ा है। प्रेम दीवाना - मस्ताना होता है। प्रेम की परिभाषा लिखते - लिखते स्याही, कलम क्या जिंदगी खत्म हो जाएगी पर प्रेम की व्याख्या कोई कर नहीं सकता है; प्रेम ही तो जीवन की परिधि है। प्रेम एक अहसास है! प्रेम को समझना सबके बस की बात नहीं है। प्रेम में कोई स्वार्थ है ही नहीं! प्रेम को जिसने समझा वह देवी, राधा है; प्रेम को जिसने जाना है, प्रेम को जिसने पाया है, वह भगवान कृष्ण है। प्रेम उमर का, प्रेम जाति का, प्रेम किसी क्षेत्र, किसी सीमा का मोहताज नहीं है। प्रेम हवा में खुशबू है जो, सभी सीमाओं को लांघ कर पहुंच जाता है। रामजस ने तो ऐसा ही प्रेम सुमन से किया था। अब सुमन के बिना रामजस अपने-आपको अधूरा मान रहा था। सुमन क्या मानती है इससे रामजस को कोई लेना देना नहीं था। मेला का दिन आया, खूब जलेबी सुमन के साथ रामजस ने भी खाई थी। सुमन ने जो चाहा, पसंद किया रामजस ने दिला दिया था। कुछ खुसर-पुसर उस साइड में होने लगी थी। रामजस पर कुछ थू थू थू करने लगे थे। ऐसी कोई चौंकाने वाली बात नहीं थी। हमेशा से प्रेम करने वालों को विरोध का सामना करना पड़ा है; प्रेम के दुश्मन बहुत होते हैं। उस जंगल में मंगल मानता था रामजस! सुमन के प्रति प्रेम उसे नई जिंदगी शुरू करने का जरिया था। नहीं तो रामजस कब का मर गया था। जबसे पत्नी स्मृति शेष हुई थी, तब से रामजस टूट गया था। एक दिन रामजस ने फोन पर हंसी में कहा था कि, सुमन, तुम्हें घर में ज्यादा काम करना पड़ता है, कहो तो मैं भी कुछ करवा दिया करूं! सुमन ने कहा कि, तुम क्या करवाओगे मुंशी जी, तुम तो बूढ़े हो गए हो! रामजस कुछ समझ नहीं पाया था, वह तो प्रेम में दीवाना था। रामजस एक दिन सुमन को शहर ले गया था, घुमाने के लिए। एक दिन दोनों जंगल में बहुत दूर तक निकल गए थे। सुमन से रामजस ने कहा कि, सुमन, एक दिन मेरे साथ मेरे घर चलोगी! सुमन ने कहा, आज के बाद हम तुम्हारे साथ कहीं नहीं जाएंगे, हमारी शादी होने वाली है! रामजस ने कहा, मैं तुम्हारी शादी थोड़ी रोक रहा हूं, मैं तुमसे प्रेम करता हूं, तुम्हें खुश देखना चाहता हूं!

सुमन ने स्पष्ट किया कि, ओ मुंशी अंकल, तुम में क्या है? तुम मुझे क्या खुश रखोगे, खाक! तुम शारीरिक संबंध को प्रेम मानती हो क्या? जबकि तुम्हें याद होगा तुम्हीं ने कहा था कि, प्रेम राधा, कृष्ण की तरह होना चाहिए! राधा कृष्ण का शारीरिक संबंध तो कभी नहीं बना! रामजस ने सुमन को समझाया। सुमन ने कहा, तुम देखने गए हो क्या? क्या शारीरिक संबंध किसी से बता कर किया जाता है! तुम तो ठहरे बूढ़े, तुममें तो शक्ति है नहीं, मैंने आजमाकर देख लिया है! सुमन ने बुरा सा मुंह बनाया था। सुमन ने चेतावनी देते हुए कहा था कि, खबरदार, अगर तुम आज के बाद मुझसे मिलने की कोशिश की तो, मुझसे बुरा कोई नहीं हो सकता है! क्या सोच है, लोगों की! रामजस को छोड़कर सुमन जा चुकी थी। सुमन की बातें रामजस को जहर में बुझे तीर की तरह सीधे छाती में लगी थी। छाती में दर्द उठा, छाती को दोनों हाथों से पकड़ लिया, दबा कर औंधे मुंह लेट गया था।

न कोई चीख न कोई पुकार, न ही उस जंगल में मानव जाति का कोई अंदा - बंदा, कुछ परिंदों के जोड़े रामजस को देख रहे थे। रामजस को देखकर फिर एक दूसरे को देख रहे थे, जैसे कह रहे हों, इन मनुष्यों से तो हमीं ठीक हैं, हमारा एक समय होता है वासना को शांत करने का, इन मनुष्यों का तो कोई समय ही नहीं है! एक परिंदा अपने जोड़े परिंदे से कह रहा था कि, ए मनुष्य प्रेम को वासना का पर्याय मान रहे हैं; विशेष कर ए नासमझ लड़कियां! शाम तक यह खबर कैंप से लेकर पूरे गांव में फैल चुकी थी कि, मुंशी की जंगल में मौत हो गई है! रामजस के मौत की खबर तो सुमन ने भी जाना था। कितनी कठोर हृदया थी वह, उफ तक नहीं निकला उसके मुंह से! जबकि सुमन अच्छी तरह से जानती थी कि, रामजस की मौत मेरे कारण हुई है। रामजस ने प्रेम को जाना था, समझा था। आप अपनी मर्जी के मालिक हैं, मैं अपनी मर्जी का मालिक हूं, मैं तो यही कहूंगा कि, रामजस के बूढ़ापे का प्रेम सच्चा प्रेम था, प्रेम हो तो, ऐसा ही प्रेम होना चाहिए। रामजस ने प्रेम किया था, नादान लड़की सुमन सिर्फ कहने को कह दिया था कि, प्रेम राधे - कृष्ण की तरह होना चाहिए! सुमन तो ऊपरी, मुंह तक से नहीं निभा सकी, रामजस ने तो प्रेम को निभाया था, अपनी जान देकर! ताकि प्रेम बदनाम न हो सके, प्रेम की तरफ एक भी उंगली नहीं उठाई जा सके, प्रेम तो बलिदान का नाम है, साकार कर दिया था रामजस ने! ■

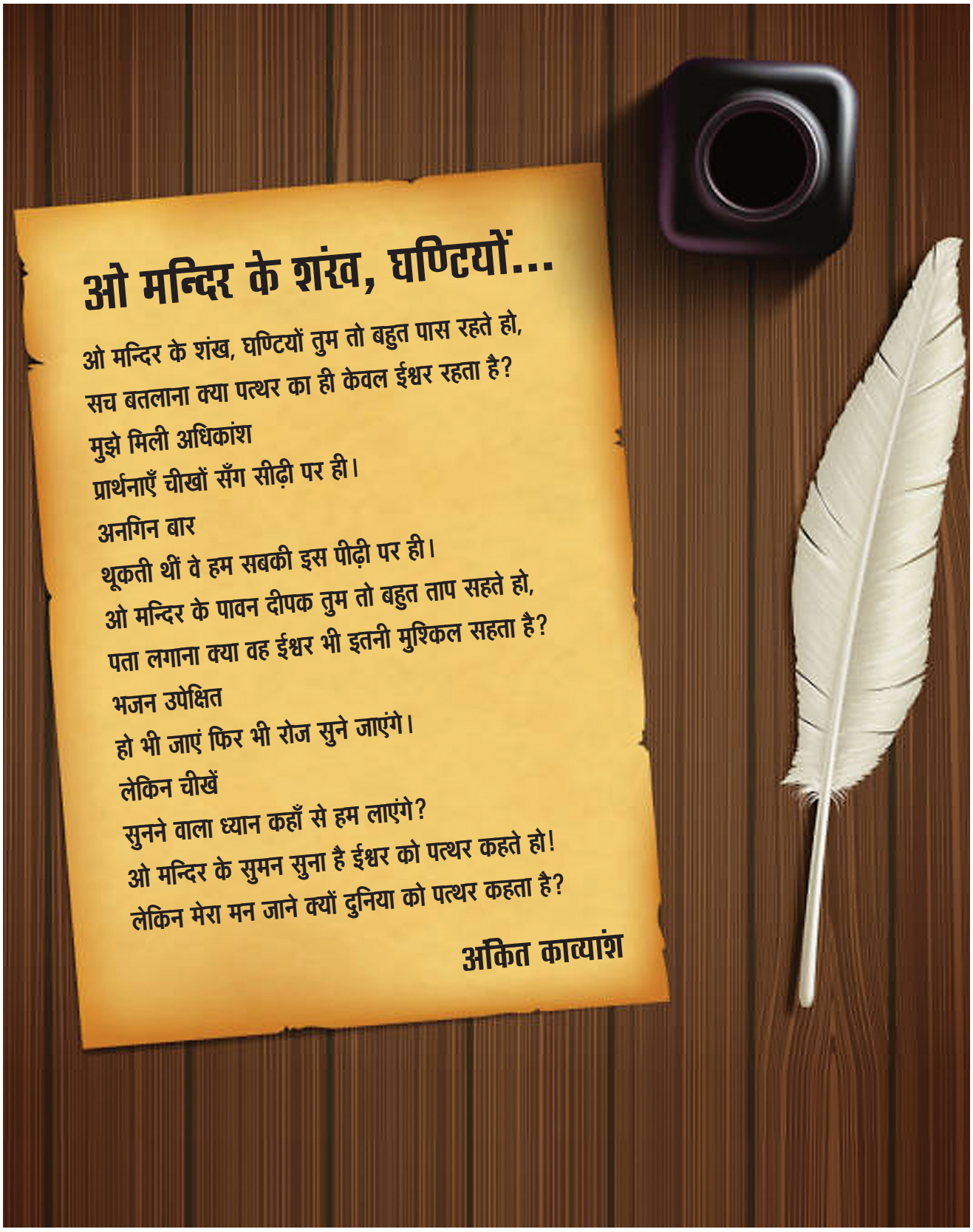

ओ मन्दिर के शंख, घण्टियों...

ओ मन्दिर के शंख, घण्टियों तुम तो बहुत पास रहते हो,
सच बतलाना क्या पत्थर का ही केवल ईश्वर रहता है?
मुझे मिली अधिकांश
प्रार्थनाएँ चीखों सँग सीढ़ी पर ही।
अनगिन बार
थूकती थीं वे हम सबकी इस पीढ़ी पर ही।
ओ मन्दिर के पावन दीपक तुम तो बहुत ताप सहते हो,
पता लगाना क्या वह ईश्वर भी इतनी मुश्किल सहता है?
भजन उपेक्षित
हो भी जाएं फिर भी रोज सुने जाएंगे।
लेकिन चीखें
सुनने वाला ध्यान कहाँ से हम लाएंगे?
ओ मन्दिर के सुमन सुना है ईश्वर को पत्थर कहते हो!
लेकिन मेरा मन जाने क्यों दुनिया को पत्थर कहता है?

अंकित काव्यांश

With Best Compliments from

Jai Kumar Agarwal

Managing Director

+91-9918700801

GYAN DAIRY

jai@agarwal@gyandairy.com

Dream of Healthy India

NOVA®

DAIRY PRODUCTS

Serving since 1991

घी, दूध, दही, छाछ, पनीर और डेयरी व्हाईटनर

STERLING AGRO INDUSTRIES LTD.

E-mail: sterling@steragro.com, sterling@steragro.biz ★ Website: www.steragro.com

Works : Village - Bhitauna, Soron Road,Kasganj-207123 (UP)

For Distributorship, Please Contact Mr. Adarsh Sharma, Mob.: 9319554050

Vichar

आर.एन.आई. संख्या - 2166/2016 | डाक पंजीयन संख्या आगरा-139/2022-24